CRITERIA -3

3.3.1 - Research Publications and Awards

- Number of research papers in the journals notified on UGC CARE list yearwise during last five years

2018-2023

Sr .No	Name of paper	Name of professor	Name of journal	ISSN NO	Year of Publication	UGC CARE Yes or No
2	भारत के सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान	Prof. Dr. Bichukale S.S.	BohalShodhManjusha	ISSN-2395-7115	July 2022	-
3	गांधी विचार आणि राष्ट्रउभारणी	Prof. Kolekar V. A.	GALAXY LINK	ISSN-2319-8508	May 2022	YES
4	भारतीय प्रशासनातील ई-शासन	Prof. Kolekar V. A.	NAVJYOT	ISSN-2277-8063	Mar 2022	YES
5	कोविड-19 मुळे मानवाच्या जीवनावर येणाऱ्या मानसिक समस्या व मानसिक आरोग्य	Prof.Dr. Raut D. R	VIDYAVARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2319-9318	Oct 2021	-
6	An Appraisal of FDI of Auto Industry in India from 2008-2021	Prof. Gadhve S.N	VIDYAWARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2319-9318	Oct 2021	-
7	स्पर्धा परीक्षांमधील तर्कशास्त्राचे महत्व	Prof.Dr.Rayte T.V	VIDYAWARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2319-9318	Oct 2021	-

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan, Dist.Satara.

8	कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास 'मै अपराधी हू' उपन्यास में नारी के परिवर्तित विचारधारा	Prof. Dr. Bichukale S.S.	VIDYAWARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2319-9318	Oct 2021	-
9	कथा साहित्य लेखिकाओ में एक अलग पहचान :पद्मा सचदेव	Prof. Dr. Bichukale S.S.	अक्षयवार्ता	ISSN-2349-7521	Apr 2021	YES
10	पद्मा सचदेव का उपन्यास 'जम्मू जो कभी शहर था'	Prof. Dr. Bichukale S.S.	VIDYAWARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2319-9318	Jan 2021	-
11	महिला हिंसाचाराचे स्वरूप व उपाय	Prof. Kolekar V. A.	VIDYAWARTA: Peer – Reviewed International journal	ISSN-2348-7143	Jan 2021	-
12	"पद्मा सचदेव कृत 'जम्मू जो कभी शहर था'उपन्यास में चित्रित भारतीय समाज"	Prof. Dr. Bichukale S.S.	निबंधमाला	ISSN-2277-2359	Feb 2020	YES
14	नीरज माधव की कहानियो में चित्रित पुरुष विमर्श	Prof. Dr. Bichukale S.S.	साहित्य और संस्कृति चिंतन	ISSN-2319-9318	Jan 2020	-

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

15	पाण्याच्या व्यवस्थापनातील वैयक्तिक जाणीव	Prof.Dr.Rayate T.V	Research Journey	ISSN-2348-7143	Jan 2020	YES
16	महात्मा गांधीचे सत्य व अहिंसात्मक विचार व आजची तरुणाई	Prof.Dr.Rayte T.V	Research Journey	ISSN-2348-7143	Mar 2019	YES
17	संशोधानातील समस्या निवडीचे महत्त्व	Prof.Dr.Rayte T.V	Research Journey	ISSN -2348-7143	Feb 2019	YES
18	भटके- विमुक्त जमाती- मराठी साहित्य आणि चित्रपटातील दर्शन	Prof.Dr.Danane	Research Journey	ISSN -2348-7143	March 2019	Yes

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
5.642

ISSN : 2395-7115
July 2022
Issue 16, Vol. 1

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डी.आर. माने महाविद्यालय,
कागल (महाराष्ट्र)

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेषांक
राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी साहित्य का योगदान

विशेषांक सम्पादक : प्रो. हसीना अ. मालदार   सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सह सम्पादक : प्रो. सचिन कांबले, प्रो. तेजस्विनी शितोले

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan Dist Satara.

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी–127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

<u>Disclaimer :</u>
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

22.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं का योगदान	तांबोळी नसिमा गुलामरसूल	95-98
23.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं और गीतों का योगदान	डॉ. सरिता वर्मा, सुभाष कुमार नौहवार	99-105
24.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं का योगदान	पूनम शर्मा, संतोष वसंत कांबले	106-111
25.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कहानियों का योगदान	डॉ. सय्यद शौकत, राधा आत्माराम राठोड़	112-116
26.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिन्दी कविताओं का योगदान	रिशु सिंह	116-119
27.	राष्ट्रीय एकता तथा विकास में हिंदी का योगदान	डॉ. विजय दत्तात्रय सदामते	120-122
28.	इक्कीसवी सदी की हिंदी कविता के परिप्रेक्ष्य मे राष्ट्रीय एकता	सागर रघुनाथ कांबळे	123-128
29.	'रंग बसंती' में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए कुर्बान क्रांतिकारकों की जिंदगी	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	129-132
30.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी साहित्य का योगदान	संतोष वसंत कांबळे, पूनम शर्मा	133-136
31.	भारत के सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान	प्रा. श्री. संदेश सोपानराव बिचुकले	137-142
32.	उदय प्रकाश की राष्ट्रीय चेतना	डॉ. सत्य प्रकाश शुक्ल	143-145
33.	दिविकरमेश की बाल कहानियों में राष्ट्रीयता	शहिदा नजीर अत्तार	146-149
34.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं का योगदान	डॉ. रंजना अप्पा साहेब कमलाकर	150-153
35.	राष्ट्रीय एकता और अखण्डता में अरूण कमल की कविताओं का योगदान	सुजाता	154-157
36.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गजलों में राष्ट्रीय एकता	डॉ. सुनील अभिमन्यु गायकवाड	158-161
37.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं का योगदान	श्री सुनील प्रकाश खोत	162-165
38.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविता का योगदान	डॉ. सुनीता. रा. हुन्नरगी	166-168
39.	राष्ट्रीय एकता व अखंडता के प्रसार में जयशंकर प्रसाद के नाटकों का योगदान (विशेष संदर्भ : 'स्कंदगुप्त' व 'चन्द्रगुप्त')	सूरज रंजन	169-174
40.	हिंदी कहानियों में सांप्रदायिक एकता : दंगाई, दूसरी सुबह और मुशइया के विशेष संदर्भ में	सुश्री वर्षा लिंबराज कांबळे	175-178
41.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी गीतों का योगदान	शबन मुल्ला	179-183
42.	जंग-ए-आजादी, हिंदी साहित्य और राष्ट्रीयता	डॉ. बिक्रम कुमार साव	184-191

प्रा. श्री. चिचुकले एस.आर.
N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

"भारत के सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान"

ज्ञान के विभिन्न स्रोतों का सम्यक् संकलन साहित्य है | साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, जीवन के कल्याण तथा भावों के साथ की गयी रचना को ही हम 'साहित्य' की संज्ञा देते हैं | साहित्य की परिभाषा करते हुए कहा गया है, "हितेन सहितम्" अर्थात जो हित करता है, वह साहित्य है | बाजार से मिलनेवाली हर लिखित कृति को साहित्य नहीं कहा जा सकता | जिस कृति में मानवता, समाजहित तथा राष्ट्रहित है, उसे ही साहित्य कहा जा सकता है | साहित्य लोकमंगल का विधान करता है | साहित्य मानव मस्तिष्क का पोषण कर मानव और राष्ट्र दोनों की प्रगति को प्रोत्साहित करता है |

किसी भी देश की उत्कृष्टता का मुल्यांकन वहाँ के साहित्य से होता है | जिस देश का साहित्य जितना उन्नत होता है, वहाँ उतनी ही अधिक उन्नति होती है | साहित्य के संदर्भ में कहा गया है, "साहित्य हमारे संस्कृति की जलती हुई मशाल है और हमारे राष्ट्रीय गौरव एवं गर्व ही वस्तु है | साहित्य में जीवन की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में आवश्य होती है | वह राष्ट्रीय समस्याओं से निरपेक्ष नहीं हो सकता है, इतना आवश्य है कि उसका कुछ अंश यथार्थ होता है, तो कुछ काल्पनिक होता है |"[1] अच्छी सोच और विचार ही मानव को सशक्त बनाते हैं | स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार- 'भारत देश का पुनरूत्थान शारीरिक शक्ति से नहीं, वरन् वैचारिक शक्ति से होगा |' साहित्य की इस दृश्य शक्ति को वस्तुतः साहित्यकार अदृश्य रहकर शब्दों एवं विचारों के रूप में साकार कर पाता है | वह अपने विचार मंथन से साहित्य को समाज एवं राष्ट्र परिवर्तन का शस्त्र बनाता है | साहित्यकार साहित्य को साधन के रूप में प्रयुक्त करता है, जिसके द्वारा वह अच्छे समाज को साध्य कर पाता है | वह "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" के तत्व को अंगीकार करते हुए राष्ट्रनिर्माण में योगदान देता है | वह श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना करता है, जो राष्ट्र के निर्माण एवं सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है | देशप्रेम, मानवता, विश्वबंधुत्व, स्वाभिमान, आत्मनिर्भतरता, क्षमा, सदाचार, प्रेम, उदारता ये तत्व ही एक मजबूत राष्ट्र की नीव है | साहित्यकार के पास देखने परखने की एक अलग ही पैनी दृष्टि होती है | वह अपनी कलम से एक ऐसे सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर देता है, जो संपन्न एवं सामर्थ्यशाली राष्ट्र कहलाता है | साहित्य एवं साहित्यकार की राष्ट्र के प्रति महत्ता एवं अन्योन्याश्रित संबंध को इन शब्दों में उजागर किया गया है -

"अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है |
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है ||"[2]

भारत के सशक्तिकरण में हिंदी साहित्यकारों का अवदान भी उल्लेखनीय है | भारत की वास्तविक पहचान वे कालजयी साहित्यकार है जिनकी रचनाएँ देश के सशक्तिकरण का

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

आधार बनी है | कालीदास, चंदवरदाई, कबीर, तुलसी, सूरदास, मीरा, भूषण, रवींद्रनाथ टगौर, भारतेंदु, महावीरप्रसाद व्दिवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद, रामधारी सिंह 'दिनकर', पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, निराला, अज्ञेय, यशपाल, रामवृक्ष बेनीपुरी, हजारी प्रसाद व्दिवेदी, आ. रामचंद्र शुक्ल आदि साहित्यकारों ने देश को समर्पित साहित्य लिखकर विश्व में देश का स्थान निर्धारित किया है |

भारत के वाल्मीकि तथा व्यास द्वारा लिखें ग्रंथ 'रामायण' और 'महाभारत' हमारे संस्कृति की अमूल्य निधि है | जिनमें श्रेष्ठ जीवनमूल्यों को प्रतिपादित किया गया है | जो भारत को ही नहीं तो पूरे विश्व को मार्गदर्शन कर रहे हैं | इन्हीं संस्कृतिप्रद ग्रंथों के कारण भारत विश्व में प्रशंसा का पात्र बना है |

इतिहास साक्षी है कि साहित्यकार ने प्रत्येक युग में अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है | आदिकाल में वीरगाथा की प्रवृत्ति को प्रगट किया है | साहित्यकारों ने देशरक्षा की दुहाई देते हुए भारतीयों के शौर्य को ललकारा है | उस समय की वीरता का आदर्श निम्न पंक्तियों में स्पष्ट हो जाता है -

"बारह बरस लै कूकर जिये, और तेरह लौं जिये सियार |
बरस अठारह छत्री जीवे, आगे जीवन को धिक्कार ||"[3]

साहित्यकारों में युगबोध की शक्ति होती है | साहित्यकार भूत, वर्तमान, भविष्य का द्रष्टा होता है | साहित्यकार हमें पुरानी गलतियाँ पुन: न दोहराने की प्रेरणा भी देता है - 'पृथ्वीराज की कथा सुरस सही पर दुखद अंत बोध कही |' यह विचार हमे ग्रंथ पढने के बाद समझ में आता है | 'पृथ्वीराज रासो', 'हम्मीर रासो' में वीरता का वर्णन उत्साहित करता है, तो 'बीसलदेव रासो' रसिकता से परिपूर्ण वियोग श्रृंगार काव्य है |

भक्तिकाल में इन साहित्यकारों नें दोहरी जिम्मेदारी को निभाया है | एक ओर भक्ति का प्रचार -प्रसार, तो दूसरी ओर समाजसुधारक का प्रयास किया है | सत्य, अहिंसा, समानता, एकता, सदाचार, सद्भाव, उदारता तत्वों की प्रतिष्ठा की है | भले ही इस काल में विभिन्न वाणियों में मानव उद्धार की पुकार हो किंतु आंतरिक दृष्टि से अनुभूति एवं वैचारिक धरातल पर उसमें मूलभूत एकता ही दृष्टिगोचर होती है | इस संदर्भ में विजयेंद्र स्नातक लिखते हैं- "भारतीय समाज में प्रवाहमान सद्भाव और सौहार्द की अविरल धारा को हमारे ऋषि-मुनियों, सूफी-संतों, गुरूओं, समाजसुधारकों, भक्तों आदि ने अपनी रचनाओं में समाहित कर वाणी एवं अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसके फलस्वरुप भारतीय समाज में सर्वत्र एकता के लक्षण दिखाई देते हैं |"[4] भक्तिकालीन आंदोलन सामाजिक दृष्टि से न्याय और समानता का आंदोलन कहा जा सकता है | इस आंदोलन ने निराश हिंदू जनता के हृदय में एक नवीन ज्योति प्रज्वलित की तथा समाज की प्राचीन रूढीवादी मान्यताओं को समाप्त करके नवीन क्रांति को जन्म दिया | इस क्रांति का प्रथम सूत्रपात कबीरदास ने किया था जिसमें संत नामदेव, दादू दयाल,

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

आदि कई रुप में देखा जा सकता है | इस काल में सामाजिक संस्थाएँ समाज सुधार का कार्य कर रही थी | साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से तथा सक्रिय रुप में योगदान दिया है | भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त रुढियों एवं कुप्रथाओं का डटकर विरोध किया | नारी शिक्षा समर्थन, विधवा विवाह को प्रोत्साहन, बालविवाह को विरोध, सतीप्रथा तथा छुआ - छूत का विरोध आदि कार्यों के साथ कुरीतियॉ, धार्मिक पाखंड, स्वार्थ परकता, व्यसनाधीनता आदि का व्यंग्य के द्वारा भंडाफोड किया है | इसमें भारतेंदु , प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, पं. बालकृष्ण भट्ट प्रमुख रुप से देखे जा सकते हैं | डॉ. अशोक तिवारी इस बारे में कहते हैं - "राष्ट्र और समाज को जाग्रत करने में इन साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है | इसी कारण इस कालखंड को पुनर्जागरण काल कहा गया है |"[7]

प्रथम स्वाधीनता संग्राम को अंग्रेजों ने विद्रोह कहकर कुचल दिया किंतु इससे देश में नवचेतना जाग्रत हुई | भले ही भारतेंदु काल में अंग्रजों के शोषण और स्वाधीनता आंदोलन की दबी जबान में बात कही हो पर व्दिवेदी युग में राष्ट्रीयता का शंख नाद किया गया | इस कालखंड में भाषा सुधार और परिष्कार के कारण हिंदी भाषा का विकास हुआ | फिर हिंदी भाषा की छत्रछाया में सभी ने एकता पायी | जिसके परिणाम स्वरुप स्वाधीनता आंदोलन अधिक तीव्र हुआ | मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय, आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔंध' इन कवियोंने राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम एवं अतीत गौरव का गान किया है | गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' की काव्य पंक्तियों को 'प्रताप' नामक पत्रिका ने अपना सिध्दांत वाक्य बनाया था -

"जिनको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है |
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है ||[8]

इसकाल में कवि दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश में नवजागरण का संचार किया | उन्होंने देश के नवयुवकों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आत्म बलिदान के लिए प्रेरित किया है | इस काल में माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा लिखी 'पुष्प की अभिलाषा' कविता प्रेरणास्त्रोत बनी थी | हिंदी के कई ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय योगदान देते हुए अपने जीवन के कई साल जेल में बिताए है - जिनमें माखनलाल चतुर्वेदी, मन्मथनाथ गुप्त, यशपाल, रामवृक्ष बेनीपुरी, अज्ञेय, जैनेंद्र, विष्णु प्रभाकर, फणीश्वरनाथ 'रेणु', विवेकीराय आदि महत्त्वपूर्ण है | देश की स्वाधीनता एक सभी साहित्यकार किसी न किसी रूप में स्वाधीनता आंदोनल से जुडे रहे हैं | आजादी के समय 'आनंदमठ' से निकला 'वंदे मातरम्' का स्वर जन-जन में लोकप्रिय हो गया और लोग एकजूट होकर आजादी के मैदान में कूद पडे | देश की आजादी में हिंदी साहित्य तथा साहित्यकारों का अमूल्य योगदान है |

दि कागल एज्युकेशन सोसायटी, कागल संचलित

डी.आर. माने महाविद्यालय, कागल

अंतर्गत गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) के अंतर्गत हिंदी विभाग और
शिवाजी विद्यापीठ हिंदी प्राध्यापक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में
आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित
एक दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी

"राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी साहित्य का योगदान"

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता हैं कि श्री/श्रीमती प्रा. संदेश सोपानराव बिचुकले, नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण ने 12 मई 2022 को हिंदी विभाग, डी.आर.माने महाविद्यालय, कागल. और शिवाजी विद्यापीठ हिंदी प्राध्यापक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "भारत के सशक्तिकरण में हिंदी साहित्य का योगदान" शीर्षक आलेख प्रस्तोता के रूप में उपस्थित रहकर संगोष्ठी को सफल बनाया।

प्रा. हसीना मालदार	प्रो.डॉ. सुनील बनसोडे	डॉ. प्रवीण चौगले
संयोजिका	अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ हिंदी प्राध्यापक परिषद	प्रधानाचार्य

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
Journal No. 47023

ISSN 2319 - 8508

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GALAXY LINK

Volume - X, Issue - II
May - October - 2022
Marathi / Hindi

Impact Factor / Indexing
2020 - 6.495
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

VOLUME - X, ISSUE - II - MAY - OCTOBER - 2022
GALAXY LINK - ISSN 2319 - 8508 - IMPACT FACTOR - 6.495 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF MARATHI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	गांधी विचारांची प्रासंगिकता **प्रा. डॉ. शामराव महादेव लेंडवे**	१-३
२	भारतीय संविधान : भारतीय लोकशाहीचा पाया **प्रा. अशोक किसन वाकडे**	४-८
३	महात्मा गांधीची सर्वसमावेशक धोरण विशेष संदर्भ : महिला सक्षमीकरण **प्रा. डॉ. अशोक शंकर माने**	९-१५
४	आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर **प्रो. डॉ. औदुंबर जोती जाधव**	१५-१९
५	भारतातील सुशासनाची वाटचाल व आव्हाने **डॉ. दिलीपकुमार दगडू क्षीरसागर**	२०-२८
६	सेंद्रिय शेती : काळाची गरज **डॉ. गायकवाड डी. एस.**	२९-३३
७	महाराष्ट्राच्या सामाजिक परीवर्तनाच्या बदलाचे सुवर्णक्षण... **डॉ. विश्वनाथ महादेव आवड**	३४-४१
८	गांधीजी: स्त्री-पुरुष समानता **घाडगे महेश तानाजी**	४२-४४
९	महात्मा गांधीच्या विश्वस्त संकल्पनेचे भारताच्या राष्ट्र निर्मिती मधील योगदान **प्रा. डॉ. महेश कुमार घाडगे**	४५-४७
१०	गांधीवादी विचार आणि राष्ट्र उभारणी **प्रा. डॉ. मोहन वसंत शिंदे**	४८-५१
११	१८५७ ते १९४७ मधील भारतीय स्वातंत्र्यातील (१८७१ चा गुन्हेगार जमाती कायदा आणि वडार समाज) **प्रिया गणपत पोवार**	५२-५७
१२	स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव आणि महाराष्ट्र शासनाच्या कृषीविषयक योजनांचा आढावा **डॉ. राजेश भिमराव गावकरे**	५८-६४
१३	गांधी विचार आणि राष्ट्र उभारणी **प्रा. कोळेकर वनिता अशोक**	६५-७०

VOLUME - X, ISSUE - II - MAY - OCTOBER - 2022
GALAXY LINK - ISSN 2319 - 8508 - IMPACT FACTOR - 6.495 (www.sjifactor.com) CC-20

१३. गांधी विचार आणि राष्ट्र उभारणी

प्रा. कोळेकर वनिता अशोक
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण.

प्रस्तावना

परिचय

पूर्ण नाव	:	मोहनदास करमचंद गांधी
जन्म	:	२ ऑक्टोबर १८६९ गुजरात (पोरबंदर)
मृत्यू	:	३० जानेवारी १९४८ भारत (नवी दिल्ली)

आत्मचरित्र - माझे सत्याचे प्रयोग

भारतीय स्वातंत्र लढ्यामध्ये अनेक महान व्यक्तींनी योगदान दिले आहे. इंग्रजांनी भारतावर १५० वर्षे राज्य केले. इंग्रजांच्या गुलामगिरीतून भारत भूमीला मुक्त करण्यासाठी टिळक, रानडे, गांधी, दादाभाई नौरोजी, अरविंद घोष इत्यादी महान व्यक्तींनी संघर्ष केला.

१९२० नंतर जेव्हा टिळकांचे निधन झाले. तेव्हा भारतीय स्वातंत्र लढाईचे नेतृत्व महात्मा गांधी यांनी केले.१९२० ते १९४७ हा भारतीय स्वातंत्र लढ्याचा काळ हा गांधी युग म्हणून ओळखला जातो. भारताच्या स्वांतत्र लढ्यातील प्रमुख नेते आणि तत्वज्ञ होते. अहिंसात्मक मार्गाने भारत भूमीला स्वातंत्र मिळवून दिले.

२ ऑक्टोबर हा त्यांचा जन्मदिन आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिन म्हणून साजरा केला जातो. १९१५ मध्ये ते आफ्रिकेमधून ते भारतामध्ये आले आणि थोड्याच काळामध्ये गांधीजींनी भारतीय राजकारणावर त्यांचा प्रभाव पडला. आयुष्यभर सत्य आणि अहिंसा या तत्वांचा पुरस्कार केला. तसेच या तत्वांचा अवलंबून करुन भारतभूमीला इंग्रजांच्या गुलामगिरीतून मुक्त केले. त्यांनी असे सांगितले की खरा भारत हा खेड्यांमध्ये आहे. म्हणून त्यांनी जगाला खेड्यांकडे चला असा महान संदेश दिला.

महात्मा गांधीजींचे काही व्यक्तींनी वर्णन पुढीलप्रमाणे केले आहे

१. भारताच्या राजकीय क्षितिजावर गांधीच्या रुपाने नवा तेजस्वी तारा उदयाला आला.
   चॅपमन (होमर महाकाव्य)
२. पराक्रमी वीरपुरुष व हुतात्मा यांच्या मुशीद घडलेले व्यक्तीमहत्व
   (नामदार गोखले) राजकीय गुरु

राष्ट्र उभारणी संकल्पना

कोणतेही राष्ट्र निर्माण होण्यासाठी काही महत्वपूर्ण घटकांची आवश्यकता असते. त्यामध्ये राष् निर्माण करण्यासाठी चार महत्वपूर्ण घटकांची आवश्यकता असते. ते घटक म्हणजे सार्वभौमत्व लोकसंख्या, भूप्रदेश आणि शासन संस्था होय. या घटकांशिवाय कोणतेही राष्ट्र निर्माण होत नाही.

१५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारत स्वातंत्र झाला पण त्यावेळी देशाचे दोन भाग झाले. त्याचवेळ भारत आणि पाकिस्तान हे दोन राष्ट्र निर्माण झाली. ही राष्ट्र निर्माण करताना सर्व घटकांचा विचार करु ही राष्ट्र निर्माण झाली. म्हणजे कोणतेही राष्ट्र निर्माण करायचे असेल तर सार्वभौमत्व, लोकसंख्य भूप्रदेश आणि शासनसंस्था या चार घटकांचा विचार करुनच राष्ट्रांची उभारणी केली जाते.

गांधी विचारांचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान

जगाला अहिंसा व सत्याग्रह या तत्वांची जाणिव महात्मा गांधीजींनी करुन दिली. त्यांचे तत्वज्ञा हे गांधीवाद म्हणून ओळखले जाते. भारतभूमीला लाभलेला एक अलौकिक महामानव म्हणून गांधीजीन ओळखले जाते. त्यांनी संपूर्ण जीवन हे सत्य आणि अहिंसा या तत्वांवर विश्वास ठेवून घालवले.

महात्मा गांधी यांनी माणसातील माणूसकीवर विश्वास ठेवला. या विश्वासामुळेच सत्य व अहिंस या तत्वांद्वारे त्यांनी जगाला जाणीव करुन दिली की, हिंसा व असत्याच्या मार्गाने स्वतंत्र मिळत नसून त सत्य व अहिंसा या मार्गाने मिळू शकते. तसेच त्यांनी यंत्र युगाला विरोध केला कारण की, माणूस ह भौतिक जीवनाच्या पाठीमागे धावून माणसातील माणूसकीपण विसरला आहे. म्हणून त्यांनी ग्रामस्वराज्य नावाची संकल्पना मांडली.

१५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारत देश स्वांतत्र झाला तेव्हा आपले राष्ट्र, आपला देश, कसा घडवाव या विचारात असताना त्यांना जाणीव झाली की, खरा भारत हा खेड्यांमध्ये आहे. म्हणून त्यांनी जगाल खेड्यांकडे चला असा महान संदेश दिला.

राष्ट्र उभारणीसाठी गांधी विचारांचे योगदान पुढीलप्रमाणे

1. वैश्विक धर्म

महात्मा गांधीजींचे विचार हे नैतिक व धार्मिक स्वरुपाचे होते. त्यांनी अनेक धर्मांचे तत्वज्ञा आत्मसात केले. पण त्यांच्यावर भगवतगीता या ग्रंथाच्या तत्वज्ञानाचा खूप प्रभाव पडला होता. कारण की गीतेमध्ये खूप मोठा संदेश दिला आहे. तो म्हणजे फळाची अपेक्षा न करता आपले कर्तव्य करत रहा.

देशाला स्वातंत्र मिळवून देणे हेच त्यांचे धार्मिक कर्तव्य बनले होते. त्यांनी असे सांगितले की हिंदू, मुस्लिम, ख्रीशन या धर्मांच्या पलीकडेही अजून एक धर्म आहे. तो म्हणजे वैश्विक धर्म होय. हाच धर्म सर्व धर्माचा आधार आहे. त्यांनी थोडक्यात धर्म म्हणजे सर्व धर्मात समान असणारी व मानवतेची शिकवण देणारी सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, शांति या मूल्यांची जाणीव होय. त्यांनी पुढे असे म्हटले आहे की, भजनामधून,

वैष्णव जन तो तेने कहिये

जे पीड परायी जाने रे।

पर दु:खे उपकार करे तो ये

मन अभिमान न आण रे।

(गुजरात अध्यात्मिक कवी नरसी मेहता)

सत्याग्रह आणि अहिंसा तत्वज्ञान

सत्य आणि अहिंसा ही दोन मूल्ये गांधीजींच्या विचारांचे आधार होते. जीवनभर या तत्वांचे त्यांनी आचरण केले. गांधीजींच्या मते सत्य हे मानवीजीवनाचे सर्वोच्य तत्व आहे. सत्य हाच परमेश्वर आणि परमेश्वर हाच सत्य असे त्यांचे मत होते. अन्याय, जुलूम या विरुद्ध लढण्यासाठी गांधीजींनी सत्य व अहिंसा या तत्वांचा वापर केला.

जीवनामध्ये त्यांनी सत्यला जितके महत्व दिले, तितकेच अहिंसा या तत्वालाही महत्व दिले. सत्याप्रत जाण्याचे एक साधन म्हणजे अहिंसा होय. हिंसेच्या विरोधात लढण्याचे प्रभावी साधन म्हणजे अहिंसा होय. आपणास असे म्हणता येईल की, सत्य आणि अहिंसा या एकच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. ही दोन तत्वे एकमेकांपासून कधीच वेगळी करता येत नाहीत.

विकेंद्रीकरण

महात्मा गांधी यांनी सत्तेच्या केंद्रीकरणाला विरोध केला होता. सत्तेच्या केंद्रीकरणामुळे माणसांचे जीवन गुलामासारखे होत आहे. हे त्यांना दिसून आले. राजकीय आणि आर्थिक केंद्रीकरणालाही त्यांनी विरोध केला. कारण की, या पद्धतीमध्ये सत्ता ही एकाच व्यक्तीच्या हाती असल्यामुळे मालक व कामगार असे वर्ग होऊन मालक वर्गाच्या हातून कामगार वर्गाचे शोषण होते.

यावर एक पर्याय म्हणून त्यांनी विकेंद्रीकरण यात तत्वाचा स्वीकार केला. यालाच आपण सत्ताविभाजन असेही म्हणू शकतो. विकेंद्रीकरण म्हणजे सत्ता एकाच व्यक्तीच्या हाती न देता, त्याचे विभाजन करणे होय. यामुळे मानवाची आर्थिक, राजकीय व सामाजिक पिळवणूक कमी झाली. मानव खऱ्या अर्थाने स्वतंत्र झाला. आजही आपल्या भारताची शासन व्यवस्था विकेंद्रीकरणाच्या तत्वावर आधारलेली आहे.

राज्यसंकल्पना

देशाला स्वातंत्र मिळवून देणे हे गांधीजींचे अंतिम उद्धिष्ट नव्हते, तर त्यांना एक प्रकारचे आदर्श राज्य निर्माण करायचे होते. थोडक्यात त्यांना अहिंसात्मक समाज निर्माण करायचा होता. त्यांनी राज्य या संकल्पनेत पुढील बाबींचा समावेश केला.

अ) लोकशाही- गांधीजींची अशी इच्छा होती की, स्वतंत्र भारताचा कारभार हा लोकांच्या इच्छेनुसार असावा. त्यासाठी त्यांनी स्वराज्य नावाची संकल्पना मांडली. स्वराज्य म्हणजे लोकांच्या इच्छेनुसार त्यांना स्वत:चे भवितव्य व जीवन समृद्ध करण्याचा अधिकार होय. यामुळे त्यांनी लोकशाही या तत्वाचा पुरस्कार केला.

ब) अराज्यवाद- गांधीजींनी अराज्यवादाला अहिंसावाद असे ही म्हटले आहे. या संकल्पनेमध्ये गांधीजींनी मानवी विचारांच्या केंद्रबिंदूला महत्व दिले आहे. गांधीजींनी मानवी स्वतंत्र्यावर आघात करणाऱ्या सर्व गोष्टींना विरोध केला. सत्ता एककेंद्री ठेवणे गांधीजींना मान्य नव्हते. यामुळे मानवी स्वातंत्र आबाधित राहत नाही. म्हणून त्यांनी अराज्यवाद ही संकल्पना मांडली.

क) रामराज्य- आदर्श राज्य कसे असावे. याची संकल्पना व्यक्त करताना गांधीजींनी रामराज्य हा शब्दप्रयोग केला. याचाच अर्थ असा की, आदर्श राज्य होय. गांधीजींनी रामराज्य ही संकल्पना आधुनिक स्वरुपाची मांडली. त्यांच्यामते रामराज्य म्हणजे जिथे व्यक्ती स्वातंत्र्य हे सर्वोच्च मूल्य मानले जाते. असे विकेंद्रीत लोकशाही व्यवस्था असलेले राज्य होय.

गांधीजींनी ज्यामध्ये सुखी स्वयंपूर्ण खेडी असतील, अशी रामराज्याची संकल्पना मांडली. अहिंसात्मक राष्ट्ररचना करणे हे त्यांचे मुख्य उद्धिष्टे होते.

ड) ग्रामस्वराज्य- गांधीजींनी राज्याची व्याख्या अशी केली की, स्वयंपूर्ण, स्वशासित खेडेगावांचा संघ त्यांनी आपल्या विकासाचा केंद्रबिंदू खेडे हा मानला होता. पूर्वीच्या काळापासून खेडी ही स्वयंपूर्ण आणि सरळ मार्गाने जीवन जगत होते. परंतु तंत्रज्ञानाचा विकास झाल्यामुळे खेडी व शहरी जीवन यामध्ये खूप मोठी दरी निर्माण झाली. लोक आपले जीवन समृद्ध करुन घेण्यासाठी शहराकडे जाऊ लागली. त्यामुळे संपूर्ण खेडी ओस पडू लागली. खेड्यातील सगळे लहान उद्योग नष्ट होऊ लागले.

गांधीजींना असे वाटले की, जर खरी लोकशाही निर्माण करायची असेल, तर प्रत्येक गाव जास्तीत जास्त स्वयंपूर्ण आणि स्वयंशासित बनवले पाहिजेत. म्हणून त्यांनी खेड्यांकडे चला असा संदेश दिला.

५. विश्ववस्त कल्पना

महात्मा गांधीजींनी पूर्ण जीवनभर सत्य आणि अहिंसा या तत्वांचे आचरण केले. त्यांचे असे मत होते की, संघर्ष व हिंसा या मार्गाने कधीही आदर्श राज्याची निर्मिती होऊ शकत नाही. त्यासाठी त्यांनी अहिंसा व सत्य या तत्वांची गरज आहे, असे सांगितले. या दोन तत्वांमधूनच त्यांनी विश्ववस्त संकल्पना मांडली. या संकल्पनेचे उद्धिष्ट समाजातील आर्थिक विषमता नष्ट करणे हे होते.

६. विधायक कार्यक्रम

गांधीजींचे असे मत होते की, जर आपणास राष्ट्राचा विकास करायचा असेल, तर अगोदर आपणांस संपूर्ण खेड्यांच्या विकासाकडे लक्ष द्यावे लागेल. याच विचारातून त्यांनी विधायक कार्यक्रम ही

संकल्पना मांडली. या कार्यक्रमा पाठीमागे आर्थिक, नैतिक व राजकीय दृष्टीकोन होता. यामध्ये त्यांनी पुढील कार्यक्रमांचा समावेश केला.

१. जातीय ऐक्य

१. अस्पृश्यता निर्मूलन

२. दारू बंदी

३. खादी उद्योग

४. ग्रामोद्योग

५. ग्रामसफाई

६. मूलउद्योग

७. प्रौढ शिक्षण

८. स्त्रीयांची सुधारणा

९. आरोग्य शिक्षण

१०. राष्ट्रभाषा प्रचार

११. मातृभाषेची प्रगती

१२. आर्थिक समतेसाठी कार्य

निष्कर्ष

आजच्या आधुनिक जगामध्ये कोणत्याही देशाचा विचार केला तरी, आपणांस असे दिसून येते की, प्रत्येक राष्ट्रामध्ये आक्रमक राष्ट्रवाद निर्माण झाला आहे. सध्याचे उदाहरणे घ्यायचे झाले, तर रशिया व युक्रेन या दोन देशांमध्ये आक्रमक राष्ट्रवाद निर्माण झाला आहे. पण या संकल्पनेच्या पलीकडे जाऊन जर आपण होकारार्थी विचार केला, तर प्रत्येक देशांनी आपल्या प्रगतीच्या दिशेने वाटचाल करुन राष्ट्रउभारणी करण्यासाठी काय गरजेचे आहे. हेच विचारात घेतले, तर गांधी विचारांचे महत्व हे राष्ट्राच्या निर्माणासाठी किती आवश्यक आहे. हे दिसून येईल. आज आपल्या भारत देशाची निर्मिती करण्यापाठीमागे गांधी विचारांचे योगदान खूप महत्वपूर्ण ठरले आहे. प्रत्येक नेता हा देश हिताचा निर्णय घेत असताना प्रथम गांधी विचारांचा अभ्यास करुन मगच तो निर्णय घेतो.

याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे आपल्या देशाच्या पंतप्रधान मोदींनी राबवलेली स्वच्छ भारत अभियान ही मोहिम गांधी विचारांचे उत्तम उदाहरण घेता येईल. आज जरी गांधीजी आपल्या देशामध्ये नसले तरी त्यांच्या विचारांचा वारसा मात्र नक्की जिवंत राहीला आहे. राष्ट्र उभारणीसाठी गांधीजींच्या विचारांचे योगदान आजही खूप महत्वपूर्ण ठरले आहे.

संदर्भ

१. पाश्चात्य व भारतीय राजकीय विचार-के सागर पब्लिकेशन्स

२. भारतीय राजकीय विचारवंत प्रा. र. घ. वराडकर विद्याप्रकाशन नागपूर

३. फडके प्रकाशन

४. वृत्तपत्रे

५. www.m-marathi.webdunia.com

६. www.youtube.com

ISSN 2277- 8063 (Print)

Navjyot
नवज्योत

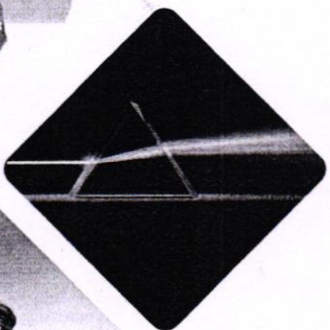

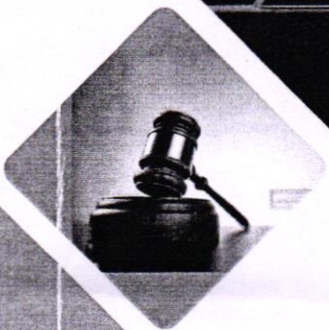

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

(Science, Humanities, Social Sciences, Languages, Commerce & Management)

A Quarterly, High Impact Factor, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

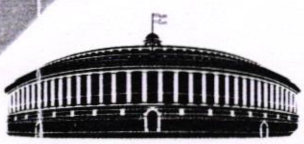

PARLIAMENT OF INDIA

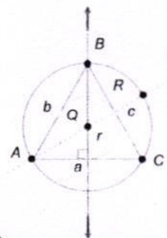

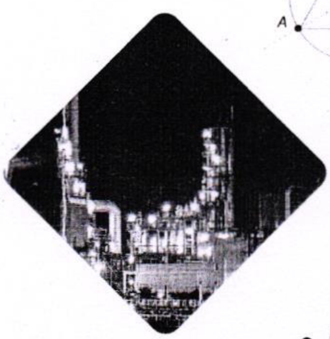

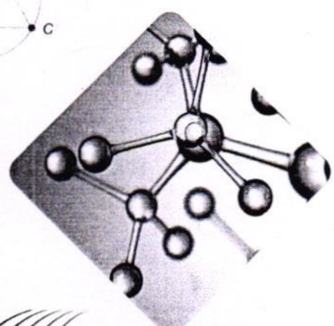

www.navjyot.net
E-mail : editornavjyot@gmail.com

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)
Navjyot / Vol. XI / Issue – I
ISSN 2277-8063

CONTENT

Sr. No	Subject	Title	Author	Page. No
1.	Law	Study on Reasons and Consequences of Child Marriage with Special Reference to The Prohibition of Child Marriage (Amendment) Bill, 2021	Madhavi Malge	1-7
2.	Political Science	Judicial Activism in India for Environment protection : An overview of M.C. Mehta vs Union India,1986.	Mr. Awadhut Vitthal Borkar	8-10
3.	Social Work	Social Problems of Differently Abled Children	Nivedita Anil Dhakane	11-15
4.	Political Science	The Role of Media in Indo-US Relations after Civil Nuclear Agreement-2005	Dr. Prabhuraj K. N	16-19
5.	Political Science	Impact of the E-Governance in Indian Administration	Dr. Ratanlal Brahma	20-22
6.	राज्यशास्त्र	छत्रपती शाहू महाराज यांचा शैक्षणिक विकासाच्या दृष्टीकोण आणि सामजिक न्याय	प्रा.डॉ.टी.एम.पाटील	23-34
7.	Political Science	Social Media and Indian Politics	Dr. T.M.Patil , Mr.Sushant C.Patil	25-28
8.	Political Science	Impact of Results of Assembly Elections 2022 on General Elections 2024	Dr. Anil D. Patil	29-30
9.	Political Science	A Study of Fourth Pillar of Democracy-Media	Miss. Manisha M. Kurane	31-36
10	राज्यशास्त्र	आशियाई देशामधील लोकशाहीपुढील आव्हाने	प्रा. पांडुरंग पाटील	37-40
11	राज्यशास्त्र	ब्राह्मणेत्तर चळवळीला राजश्री शाहू महाराज यांचे योगदान	डॉ.विजय जालिंदर देठे	41-42
12	राज्यशास्त्र	भारतीय प्रशासनातील ई-शासन	प्रा. कोळेकर वनिता अशोक	43-45
13	राज्यशास्त्र	सोशल मिडिया,निवडणुका आणि भारतीय राजकारण	डॉ. सुजाता पाटील	46-48
14	राज्यशास्त्र	छ. शाहू महाराज आणि वेदोक्त प्रकरण	प्रा. डॉ. संजय सागरू सपकाळ	49-51
15	राज्यशास्त्र	राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक कार्य	प्रा. गीतांजली शंकरराव चव्हाण	52-54
16	राज्यशास्त्र	छत्रपती शाहू महाराज यांची शेती, औद्योगीकरण आणि सहकार या क्षेत्रातील योगदान	प्रा. धनाजी नारायण कठरे	55-57
17	राज्यशास्त्र	आशियाई राजकीय व्यवस्थेतील लोकशाहीसमोरील आव्हाने	स्वाती सदाशिव कुराडे (पाटील)	58-63
18	राज्यशास्त्र	सन २०२२ : नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था (महानगरपालिका) निवडणूक	श्री. अतुल सुभाष टिके	64-68
19	Political Science	Covid – 19 Pandemic Effect on Asean	Dr.Sidharth G.Rakshase	69-71
20	राज्यशास्त्र	राजर्षी शाहू महाराजांचे शेती व शेतक-यां विषयीचे कार्य	डॉ. गायकवाड पी.बी.	72-76

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)

NAVJYOT / Vol. XI / Issue – I ISSN 2277-8063

भारतीय प्रशासनातील ई-शासन

प्रा. कोळेकर वनिता अशोक (विभाग प्रमुख),राज्यशास्त्र विभाग नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण Email id (vanitakolekar4692@gmail.com)

प्रस्तावना –

आजचे २१ वे शतक हे संगणकाचे तसेच विविध क्षेत्रातील बदलत्या विकासाचे, तंत्रज्ञानाचे युग मानले जाते. कालाच्या बदलत्या प्रवाहा बरोबर अनेक संकल्पनांचा उदय आणि विकास झाला. यामुळे समाजातील व्यक्ती, तसेच इतर राष्ट्रे यांचा संबंध येऊ लागला. देश व्यक्ती, राष्ट्र अशा संकल्पना यांना महत्त्व मिळाले तसेच अनेक नवीन विचारप्रवाहांचा मानव नव्याने स्वीकार करू लागला. यातील एक नवीन विचारप्रवाह म्हणजे भारतीय प्रशासनातील ई-शासन ही संकल्पना होय.

ई-शासन ही एक लोकप्रशासनातील आधुनिक आणि नवीन संकल्पना आहे. याच प्रशासनाला आपण माहिती तंत्रज्ञान युक्त प्रशासन असे म्हणतो. ही संकल्पना माहिती तंत्रज्ञानाच्या संकल्पनेतून निर्माण झाली. ई-शासनाच्या माध्यमातून व्यक्तींना वेगवान आणि हव्या त्या वेळी योग्य ती माहिती उपलब्ध करून देता येते ई-शासन ही भारतीय प्रशासनातील प्रगतीच्या दिशेने वाटचाल करणारी आधुनिक संकल्पना आहे.या ई-शासनाच्या आधुनिक संकल्पनेमुळे आपण खूप कमी वेळात भारतीय प्रशासनातील हवी ती माहिती जलद गतीने आणि आपल्याला पाहिजे त्या वेळेमध्ये मिळवू शकतो.

ई-शासनाचा अर्थ –

ई-शासन ही संकल्पना भारतीय प्रशासनामध्ये माहिती तंत्रज्ञान या संकल्पनेतून जन्माला आलेली आहे. ई-शासन ही संकल्पना बहुअंगी आणि बहुविध स्वरूपाची संकल्पना आहे. ई-शासनाच्या माध्यमातून नागरिक आणि शासकीय सेवक यांच्या विचार व दृष्टिकोनामध्ये बदल घडवून आणता येतो प्रशासनाला अधिक लोकाभिमुख आणि पारदर्शक बनविणे हे ई-शासनाचे मुख्य उद्दिष्ट्य आहे.

थोडक्यात ई-शासन म्हणजे सरकारी सेवा आणि योजनांची माहिती इलेक्ट्रानिक पद्धतीने लोकांपर्यंत पोहचवणे म्हणजे ई-शासन होय.

ई-शासन ही संकल्पना भारतीय प्रशासनाशी संबंधित आहे प्रशासनाची माहिती समाजातील विविध घटकांना माहिती तंत्रज्ञानाच्या मदतीने लोकांपर्यंत पोहचविणे हे प्रशासनाला अभिप्रेत आहे.

ई-शासन व्याख्या –

ई-शासनाविषयी अनेक विचारवंतानी व्याख्या केली त्यानुसार काही विचारवतांनी पुढीलप्रमाणे व्याख्या केली आहे.

के.सत्य नारायण यांच्या मते –

"ई-प्रशासन ही संकल्पना प्रशासनाशी संबंधित प्रशासनाचे समाजातील विविध घटकांची माहिती तंत्रज्ञानाच्या मदतीने संबंध प्रस्थापित करणे ही प्रशासनात अभिप्रेत असते."

*** भारतीय प्रशासनातील ई-शासनाचे स्वरूप :-**

भारतीय लोकप्रशासनामध्ये अनेक नवीन संकल्पनांचा तसेच अनेक विचारांचा स्वीकार केला आहे त्यामध्ये ई-शासन ही संकल्पना भारतीय प्रशासनामध्ये खूप महत्त्वपूर्ण आणि उपयुक्त ठरली आहे.

भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन आणि माहितीचा अधिकार यांसारख्या संकल्पना उदयास आल्यामुळे लोकप्रशासनाला नवीन दिशा मिळाली ई-शासन ही संकल्पना माहिती तंत्रज्ञान या संकल्पनेतून उदयास आली. त्यामुळे प्रशासनातील सेवक व जनता यांच्याकध्ये संर्पक घडून येऊ लागला. लोकांना खूप कमी वेळेत आणि जलद गतीने हवी ती शासनाच्या योजनांची माहिती मिळू लागली. लोकांना सर्व प्रशासन नक्की कसे चालते हे समजू लागले तसेच नागरीकांना आपल्या सर्व जबाबदाऱ्या आणि कर्तव्यांची जाणिव होऊ लागली. हे सगळे शक्य झाले ते लोकप्रशासनातील ई-शासन या संकल्पनेमुळे.

*** भारतीय प्रशासनातील ई-शासनाची उद्दिष्ट्ये**

भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना खूप महत्त्वपुर्ण ठरलेली आहे. आजचे २१ वे शतक हे माहिती तंत्रज्ञानाचे व नवीन बदलांचे शतक मानले जाते. त्यामुळे अनेक क्षेत्रामध्ये लक्षणीय प्रगती झालेली अपणास दिसुन येते

लोकप्रशासनात ई-शासन ही संकल्पना माहिती तंत्रज्ञानामधुन उदयास आलेली आहे. ई-शासनाची उद्दिष्ट्ये भारतीय प्रशासनामध्ये पुढीलप्रमाणे दिसून येतात.

१. **जनता व सरकार यांच्यात संपर्क** – ई-शासन या संकल्पनेमुळे आज आपणास असे दिसून येते की जनता आणि सरकार यांच्यात खूप जवळच्या संबंध निर्माण झाला आहे. विविध शासनांच्या योजना व त्यांची पुर्ण माहिती व्यक्तीच्या ई-शासनामुळे पुर्णपणे मिळु लगली. नागरीक कमी वेळेमध्ये जास्त माहिती मिळवु शकतात.

२. **प्रशासकीय प्रक्रियेत जनतेचा सहभाग** – ई-शासनामुळे व्यक्तीचा प्रशासकीय कार्यामध्ये सहभाग वाढू लागला आहे. नागरीक प्रत्येक माहिती स्वत: मिळवू लागला आहे. त्यामुळे नागरीकांना पुर्णपणे शासनाच्या सर्व योजनांची माहिती मिळु लागली आहे. हे शक्य होण्याचे कारण म्हणजे ई-शासन होय.

३. **प्रशासनामध्ये पारदर्शकता** – ई-शासनामुळे प्रशासनामध्ये पारदर्शता येते कोणत्याही प्रकारचा गैर-व्यवहार होत नाही. म्हणून प्रशासन हे पारदर्शकपणे कार्य करू शकते. ई-शासनाचे मुख्य उद्दिष्ट्ये म्हणजे पारदर्शकता होय. यामुळे प्रशासन उत्तमरित्या कार्य करू शकते.

४. **प्रशासन लोकाभिमुख बनिवणे** – भारतीय प्रशासना मध्ये ई-शासन ही संकल्पना आल्यामुळे प्रशासन हे लोकाभिमुख बनले आहे प्रशासनाविषयी सर्व माहिती व सर्व शासकीय योजना नागरिकांना, लोकांना सर्व स्तरांपर्यंत पोहचवणे गरजेचे आहे. त्यामुळे अशा प्रकारची माहिती ई-शासनामुळे सर्व स्तरांपर्यंत पोहचते.

५. **प्रशासकीय कामामध्ये कार्यक्षमता व गतिमानता** – भारतीय प्रशासनामध्ये प्रत्येक कार्य हे व्यवस्थितपणे व काटेकोरपणे पार पाडण्यासाठी प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना स्वीकारली गेली. त्यामुळे प्रशासनाच्या प्रत्येक कार्यामध्ये गतिमानता तसेच कार्यक्षमता दिसून येते.

६. **कागदविरहीत प्रशासन** –प्रशासनामध्ये ई-शासन मुळे सर्व माहिती ही कागदावर न राहता ती ऑनलाईन माहिती संगणकामध्ये राहते. त्यामुळे प्रत्येक माहितीसाठी प्रत्येक वेळी कागदांची गरज भासत नाही ती माहिती संगणकामध्ये सुरक्षित ठेवली जाते.

७. **भ्रष्टाचार, विलंबता इत्यांदिचे प्रमाण कमी** – प्रशासनामध्ये कार्यात जो भ्रष्टाचार विलंब होतो तो ई-शासन या संकल्पनेचा स्वीकार केल्यामुळे कमी झाला आहे. म्हणूनच भारतीय प्रशासनामध्ये ई. शासन ही संकल्पना यशस्वीरित्या स्वीकारलेली आहे.

* **भारतीय प्रशासनातील ई-शासनतील त्रुटी** – भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना जरी नव्याने स्वीकारली असली तरी ती पुर्ण पणे यशस्वी झाली असे आपणास सांगता येत नाही कारण. काही संकल्पना आपण नव्याने जरी स्वीकारल्या असल्या तरी त्याचे फायदे होत असतात तसेच त्याच्या त्रुटी आपणाला दिसुन येतात म्हणूनच भारतीय प्रशासनातील ई-शासनाच्या त्रुटी पुढीलप्रमाणे आहेत.

१.**कायम स्वरूपी लेखी पुरावा संगणकामध्ये टिकून राहत नाही** – भारतीय प्रशासनामध्ये काही महत्तवाची प्रशासनाची कागदपत्रे असतात ती आपण पुर्णपणे संगणकामध्ये आहे अशी लेखी स्वरूपात ठेवू शकत नाही कारण संगणकाला काही तांत्रिक अडचणी येतात त्यामुळे ती माहिती पुर्णपणे सुरक्षित राहु शकत नाही. पण लेखी पुरावा हा कायमस्वरूपी कोणत्या ना कोणत्या माध्यमात राहु शकतो.

२.**ई-शासनाच्या प्रत्येक निर्णयाला लवकर माहिती पुरवता येत नाही.** –ई-शासनामध्ये काही निर्णय असे असतात की त्यांची माहिती अपणास ठराविक वेळेमध्ये द्यावी लागते पण आपल्या वैयक्तीक किंवा काही समस्यांमुळे आपण ती माहिती शासनाला योग्य त्या वेळेमध्ये देवू शकत नाही.

३.**तांत्रिक अडचणी** – भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना माहिती तंत्रज्ञानामधून उदयास आली आहे. त्यामुळे माहिती तंत्रज्ञानामध्ये काही वेळा तांत्रिक अडचण येते म्हणून शासनाच्या प्रत्येक योजना आपणाला काही ठराविक तांत्रिक अडचणी आल्यामुळे त्याचा आपणास लाभ घेता येत नाही.

४.**वेळखाऊ प्रक्रिया** – भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना वेळखाऊ प्रक्रिया बनलेली आहे. कारण की कोणतेही प्रशासनाची माहिती मिळवताना आपण प्रथम संगणकावरती शोध घेतो पण काही तांत्रिक अडचणी आल्यास ती माहिती आपल्याला हव्या त्या वेळेमध्ये मिळू शकत नाही. त्यामुळे ई-शासन ही वेळखाऊ प्रक्रिया बनलेली आहे.

५.**ग्रामीण भागामध्ये प्रसाराचा अभाव** – प्रशासनातील ई-शासन ही संकल्पना शहरी भागामध्ये जरी विकसित झाली असली तरी ग्रामीण भागामध्ये ई-शासन या संकल्पनेचा प्रसार अपणास हवा तसा झालेला दिसून येत नाही. कारण की

ग्रामीण भागामध्ये काही भागामध्ये प्रगत तंत्रज्ञान विकसीत झालेले नाही त्यामुळे ई-शासन या संकल्पनेचा प्रसार कमी प्रमाणात झालेला आहे. याचे मुख्य कारण म्हणजे ग्रामीण भागातील निरक्षरता.

*** सारांश –**

भारतीय प्रशासनामध्ये ई-शासन ही संकल्पना नव्याने स्वीकारली असली तरी आज या नवीन संकल्पना भारतीय प्रशासनाला अत्यंत उपयुक्त ठरल्या आहेत. यामुळे भारती प्रशासन लोकाभिमुख बनले आहे. ई-शासन ही संकल्पना आपण माहिती तंत्रज्ञानामधून स्वीकारली आहे. ई-शासना मुळे भारतीय प्रशासन हे पारदर्शक बनले आहे. आज ई-शासनामुळे प्रत्येक शासकीय कार्य करणे सोयीस्कर ठरले आहे. ई-शासन ही संकल्पना भारतीय प्रशासनाला मिळालेली एक देणगी आहे असे आपण म्हणू शकतो. ई-शासन या संकल्पनेचा स्वीकार महाराष्ट्रामध्ये सिंधुदुर्ग या जिल्ह्याने प्रथम केला सिंधुदुर्ग हा जिल्हा पहिला ई-शासन जिल्हा म्हणून ओळखला जातो. तसेच 'आपले सरकार' या महाराष्ट्राच्या Online Website वरून सर्व प्रकारच्या शासकीय योजनांची माहिती नागरिकांना मिळते त्यामुळे ई-शासन हे भारतीय प्रशासनाला मिळालेले एक वरदान आहे.

*** संदर्भ –**

१. ई-शासन – डॉ. अरविंद कुलकर्णी स्वयंदीप प्रकाशन, पुणे
२. वृत्तपत्रे – सकाळ, लोकसत्ता, महाराष्ट्र टाईम्स
३. ई-प्रशासन – उर्मिला रेड्डी
४. ई-प्रशासन – https://aaplesarkar.mahaonline.gov.in/en
५. महाराष्ट्र आणि जिल्हा प्रशासन – प्रा. डॉ. शुभांगी दिनेश राठी (अथर्व पब्लिकेशन्स)

Shriram Education Society's

Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College

Phaltan Dist. Satara

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

One day
Interdisciplinary
International E-Conference on

THE CHANGING IDEOLOGY
& MINDSET OF MODERN TIMES

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

Guest Editor
Dr. Devidas Gejage

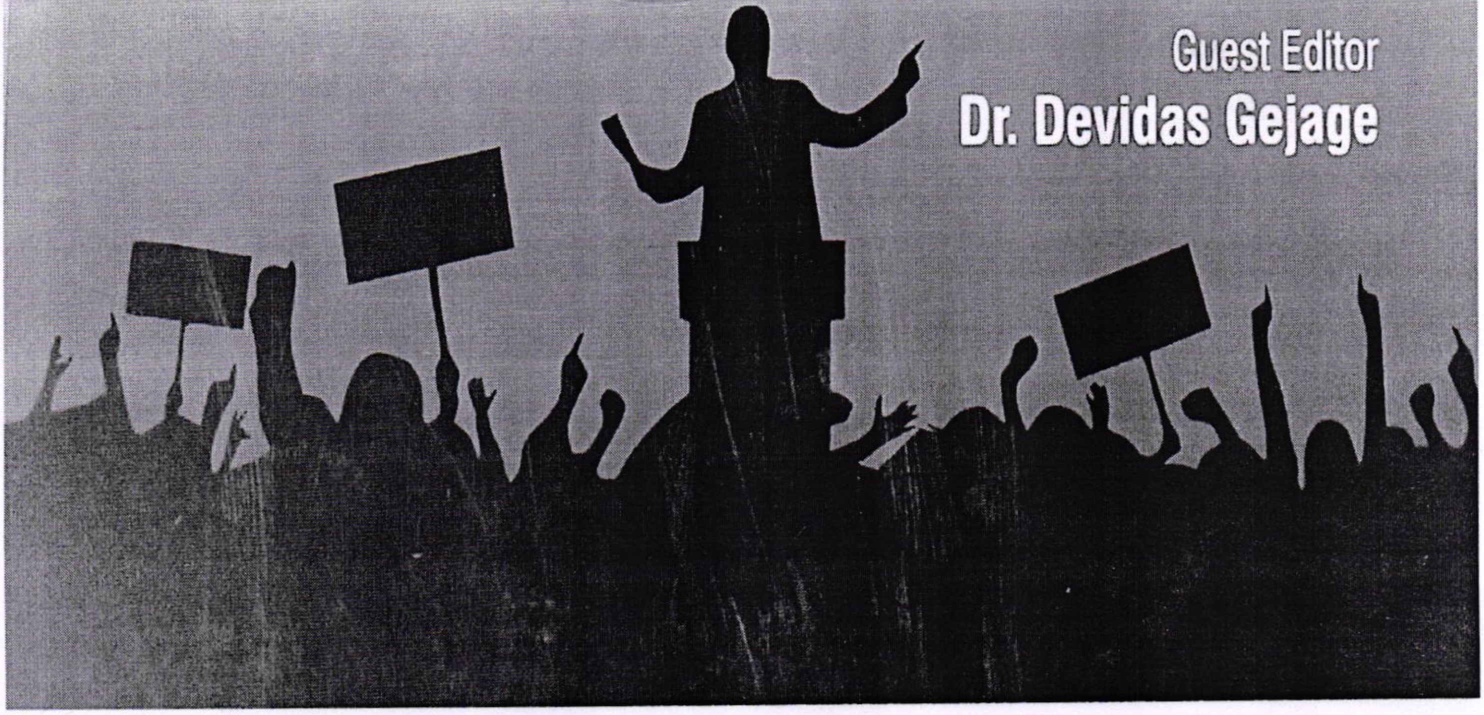

Scanned with OKEN Scanne

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-02

Date of Publication
01 Oct. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

27) महिला हिंसाचाराचे स्वरूप व उपाय
प्रा. कोळेकर वनिता अशोक, फलटण ||101

28) Covid– १९ मुळे मानवाच्या जीवनावर येणाऱ्या मानसिक समस्या व मानसिक ...
डॉ दिपक रामचंद्र राऊत, फलटण ||104

www.vidyawarta.com/03 – http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

28

Covid— १९ मुळे मानवाच्या जीवनावर येणाऱ्या मानसिक समस्या व मानसिक आरोग्य उपचार

डॉ दिपक रामचंद्र राऊत
मानसशास्त्र विभाग प्रमुख,
नामदेवराव सूर्यवंशी बेडके महाविद्यालय फलटण

****

प्रस्ताविक —

प्रत्येक व्यक्तिला जीवनामध्ये अडथळे व समस्याना तोंड दयावे लागते. अशा वेळी अडथळे व समस्यांना तोंड देण्याच्या पद्धतीबाबत व्यक्तीभेद आढळतो. अशी एक समस्या म्हणण्यापेक्षा Covid—१९ या छूप्या किंवा अदृश्य शक्तीने वैश्वीक महामारीचे संकट ओढावले. या महामारीने आपण मोठ्या प्रमाणात विचलित झालो. covid—१९ आल्यापासून प्रत्येकाच्या मनात भीती—चिंता, निराशा, वैफल्यग्रस्तता, काळजी, आत्महत्येचे विचार, येवून लोकांचे शारीरिक, मानसिक व भावनिक आरोग्याचे खच्चीकरण झाले.

उद्देश :

covid — १९ च्या भितीने समाजात लोकांना कायदयाने घातलेल्या निर्बधाचे पालन करून घरातच राहण्याचा सल्ला जागतिक आरोग्य संघटना WHO ने शासनाने दिला मार्च २०२० पासून भारतभर पसरत गेलेली covid — १९ ची महामारी आणि घालण्यात येणारे निर्बध कोरोना काळात हा विषाणू थोपविण्याचा सर्वात महत्वाचा उपाय म्हणजे लॉकडाऊन. लॉकडाऊन मुळे सर्वजण घरातच थांबले लॉकडाऊनचा परिणाम माणसाच्या थेट आर्थिक गरजांवर झाला. याच लॉकडाऊन अतिताण, अतिकाळजी, भय, भविष्याविषयीची चिंता, शैक्षणिक भवितव्याची काळजी यामुळे माणसाचे मानसिक आरोग्य धोक्यात आले. व याचाच परिणाम त्यांच्या शारीरिक आरोग्यावर देखील झाला. यातून लवकरात लवकर बाहेर पडण्यासाठी शासनाने वेळो वेळी घालून दिलेले निर्बध पाळून मास्क, व सॅनिटायझर चा वापर करून वेळोवेळी हात स्वच्छ धुवून काळजी घेण्यास हवी. जेणेकरून आपले मनोबल व आत्मविश्वास वाढून आपण मानसिक दृष्टया आरोग्यसंपन्नतेकडे वाटचाल करू शकू.

covid—१९ मधील मानसिक आजाराची पार्श्वभूमी—

covid—१९ आजार हा संसर्गजन्य आजार असून ज्या व्यक्तीस या रोगाची लागण झाली आहे. ती व्यक्ती इतर व्यक्तींच्या/व्यक्तींच्या संपर्कात आली असता ती बाधीत ठरते. जेव्हा व्यक्ती या सर्वांचा विचार करु लागते किंवा covid—१९ संदर्भात विचार करते तेव्हा भय, चिंता, काळजी यांमुळे तिचे मानसिक आरोग्य धोक्यात येते. आरोग्याची अति काळजी, वैफल्यग्रस्तता, निराशा, निद्रानाश, अशी मानसिक त्रासांची लक्षणे वाढली आहेत. याच आजाराचे स्वरुप आणखी एका समुहामध्ये दिसून आले ते म्हणजे कोरोणाचे संक्रमण रोखण्यासाठी बंदोबस्तासाठी नेमूण दिलेले पोलीस कर्मचारी covid १९ च्या उपचारात्मक सेवेत गुंतलेले आरोग्य कर्मचारी नेहमीच्या कर्तव्यापेक्षा अधिक चोखपणे कर्तव्य बजावित असल्याचे आपण पाहत आहोत. यांमध्ये या व्यक्तींच्या कुटुंबातील इतर सदस्यही मानसिक आरोग्याचे बळी ठरल्याचे दिसून येत आहे. अशा लोकांनी किंवा समाजातील सर्वसामान्य लोकांनी काय करावे व काय करु नये? यांचे चिंतन करणे गरजेचे आहे. अशा परिस्थितीत त्यांचे भावनिक व्यवस्थापन करणे असो वा पुरुष असो सतता फोन करुन काळजी किंवा चिंता व्यक्त करण्यापेक्षा यांचे मनोबल वाढविण्यासाठी धीर देणारे शब्दप्रयोग करावेत. त्यांना वारंवार स्वच्छता राखण्याचे स्पष्ट करावे. अशा सूचना केल्याने आपले कुटुंबीय आपल्या पाठीशी आहे ही फार मोठी उर्जा ठरते, असा सल्ला मानसशास्त्रज्ञ देतात.

सतत न्यूज चॅनेल पाहून मानसिक त्रास वाढू शकतो कायम अशा विषयांवर संवाद टाळावा.

PHALTAN COLLEGE

एकाकीपणा टाळून अतिरिक्त ताणतणाव टाळणे गरजेचे आहे. म्हणून या समस्या टाळून मानसिक आरोग्याचे संतुलन राखण्यासाठी काही महत्वाचे उपाय इथे सुघविणार आहे.

म्हणूनच या समस्या टाळून मानसिक आरोग्याचे संतुलन राखण्यासाठी काही महत्वाचे उपाय इथे सुचविणार आहे.

१. मन शांत ठेवण्यासाठी अनेक प्रकारची मेडीटेशन्स आणि माईडफूलनेसचे व्यायाम करता येऊ शकतात. माईडफूलनेस म्हणजे वर्तमान क्षणाचा विचार करणे बाकी विचारांना जागा न देणे. शरीर Relax करून डोळे बंद करून श्वासोच्छवासावर लक्ष केंद्रीत करणे. मन शांत करण्यासाठी फक्त ध्यानच नाही तर आपले छंद जोपासावेत जसे कि, चित्रे काढणे, नृत्य करणे, बागकाम करणे, ट्रेकिंग, पुस्तकवाचन, indoor game, व्यायाम याचाही उपयोग होतो.

२. आपल्या शारीरिक आरोग्यासाठी योग्य आहार व व्यायाम गरजेचा आहे तसेच मनासाठी सुद्धा योग्य उपचार गरजेचा आहे. म्हणून नकारात्मक गप्पा, संवाद, सोशल मिडीयाचा अतिवापर, गरजेपेक्षा जास्त वाईट बातम्या पाहणे हेही .मानसिक आरोग्यासाठी घातक आहे.

३. अनिश्चितता आणि तिचा स्वीकार करणे आपल्याला जमलं पाहिजे. जी परिस्थिती जशी येईल तसा तिचा स्वीकार करणे.

४. सकारात्मक गोष्टींकडे जास्तीत जास्त लक्ष देणे, सकारात्मक गोष्टींची नोंद करून ठेवणे हे आपल्याला फायदेशीर ठरते.

५. आपले मित्र—मैत्रीणी, नातेवाईक या सर्वांशी मनमोकळेपणाने संवाद साधणे.

६. पुरूषांनी स्वत: घरातील सर्व कामांमध्ये मदत केल्याने स्वावलंबी बनतील.

७. कायद्याचे पालन करून मोकळ्या व स्वच्छ हवेत फिरायला जावे.

८. योगा व व्यायाम केल्याने प्रतिकारशक्ती वाढते. म्हणून कौटुंबिक एकत्रित योगा करा.

९. झोपेचे व्यवस्थापन व्यवस्थीत केल्याने मानसिक आरोग्य उत्तम राहते.

१०. येणाऱ्या लाटेस थोपविण्यासाठी लहान मुलांचे शारीरिक व मानसिक आरोग्य पूरक राखण्यासाठी त्यांना सकस व पौष्टिक आहार, व्यायाम व खेळ इत्यादीकडे लक्ष पुरविणे गरजेचे आहे. ताणतणाव टाळणे गरजेचे आहे.

आपण ज्या क्षेत्रात काम करतो त्या क्षेत्रातील विशेष प्राविण्य व अनुभव आपल्याकडे आहे. त्याचा आपण आपले आरोग्य व प्रकृती उत्तम राखण्यासाठी उपयोग करून घेतला पाहिजे. घरातील वृद्ध, लहान मुले, गंभीर शारीरिक आजार असणाऱ्या व्यक्ती मधुमेह असणाऱ्या व्यक्ती या व्यक्तीदेखील तणावाखाली येऊ शकतात. म्हणून सकस व पौष्टिक आहार, उत्तम व्यायाम, योगा, आवडीचे छंद जोपासून नक्कीच आपण या आजारांपासून दूर राहू शकू. ४ ते ५ आठवडे होऊनही ताण—तणाव कमी न झाल्यास मानोसोपचार तज्ञांकडे जाऊन आपल्या जीवन शैलीमध्ये बदल करणे गरजेचे आहे.

❑❑❑

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

One day
Interdisciplinary
International E-Conference on

THE CHANGING IDEOLOGY & MINDSET OF MODERN TIMES

II प्रज्वलितो ज्ञानमयः प्रदीप II

SHRIRAM EDUCATION SOCIETY'S,

NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN,

TAL. PHALTAN, DIST. SATARA

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY & IQAC

ORGANIZED BY

ONE DAY INTERDISCIPLINARY

INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES

Date 25th September, 2021, Saturday, Time- 11.00am (IST)

CERTIFICATE

This is certify that Shri/~~Smt.~~/Dr./Prof.: Deepak Ramchandra Raut of Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College has participated in a One Day Interdisciplinary International e-Conference on "**THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES**" organized by the Department of Psychology & Internal Quality Assurance Cell (IQAC) NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN, **TAL. PHALTAN, DIST. SATARA** Maharashtra, India on 25th September, 2021 as a Resource Person / Chair Person/ Paper Presented/ Participated.

He/She has presented Research Paper entitled 'Covid-19 मुळे मानवाच्या जीवनावर येणाऱ्या मानसिक समस्या व मानसिक आरोग्य उपचार'

CONVENER	**ORGANIZER**
MR. ARIF TAMBOLI	DR. DEEPAK RAUT-PAWAR
IQAC Coordinator	I/C Principal

2021

Gadhave madam.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Shriram Education Society's

...mdevrao Suryawanshi (Bedke) College

Phaltan Dist. Satara

One day Interdisciplinary International E-Conference o...

THE CHANGING IDEOLOGY & MINDSET OF MODERN TIMES

Guest Editor
Dr. Devidas Gejage

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) Principal

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-02

Date of Publication
01 Oct. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanne

PHALTAN

INDEX

01) In Buddhism- Indian contest
Asso. Prof. Dnyaneshwar Gulig, Dist-Pune, Maharashtra ||09

02) CHANGING FINANCIAL SITUATION DURING COVID-19 AND FUTURE OF INDIA'S GDP
Dr. Dilip.S.Chavan, Aurangabad ||12

03) Impact of COVID-19 Pandemic on Tourism in Maharashtra
Dr. Nigale Chintaman Bhaguji, Dist-Nashik ||18

04) A comparative study of the aggression Among the Arts and sciences ...
DR.NIMBALKAR MOHAN.R & PROF.DHAMAL TANUJA.R, SHARDANAGAR ||22

05) Changing Philosophy in modern times changed attitude of farmers
Dr. Shrikant B. Chavan ||26

06) To Study of the Achievement Motivation of students in Ashram School
Mr. Khilare Sandeep Sitaram, Dist: Pune (Maharashtra) ||31

07) Globalization and its Impact on Tribal
Mr. O. I. Vasave, Mumbai ||33

08) HUMAN RESOURCE INFORMATION SYSTEM OF ORGANISATION AN OVERWIEW
Mr. H. U. Padwal, Dist. Raigad, State - Maharastra, India ||37

09) Role of Micro Finance in Rural Indian Economic Development
Mr. Warghade Janardhan Bhau, Panvel ||41

10) Impact of Economic Development on Tribal in India
Shantaram V. Sonawane, West Mumbai ||44

11) Impact Of Online Advertising On Consumer's Mindset Towards Brands In ...
Dr. Gosavi Shubhangi Ravindragir, Nashik ||47

12) An Appraisal of FDI of Auto Industry in India from 2008-2021
Sukhada Nilesh Gadhave, Dist-Satara ||51

13) STUDY OF SELF- EFFICACY AND SELF- CONFIDENCE AMONG COLLEGE STUDENTS
Mr. Vikram Kisan Rasal, Pune ||55

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanne

COLLEGE PHALTAN N.S.(B)

12

An Appraisal of FDI of Auto Industry in India from 2008-2021

Sukhada Nilesh Gadhave
Assistant Professor,
Shriram Education Society's Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College Phaltan,
Tal Phaltan, Dist-Satara

****

ABSRATCT -

On the canvas of the Indian economy, automotive industry occupies a prominent place. A sound transportation system plays a pivotal role in the country's rapid economic and industrial development.The well-developed Indian automotive industry ably fulfils this catalytic role by producing a wide variety of vehicles. Automotive Industry comprises of automobile and auto component sectors and is one of the key drivers of the national economy as it provides large-scale employment.Being one of the largest industries in India, it is important to find out the growth during the last few years in automobile sector. Automobile Industry was delicensed in July 1991so it is also important to see the impact of delicencing of auto industry on overall economy. It is also important to see that whether India is really one of the most attractive investment destinations for most of the biggest automaker today. Is the automobile industry in India is one of the most important industries in the country's economic growth? And how much does it form a part with thatof the total GDP. The Indian government facilitate foreign investment in the automobile sector by allowing 100 per cent FDI under the automatic route, Indian automotive industry requires less licensing andno custom duty on imports of automotive components, there is no minimum investment criteria for automobile industry as well which attracts the foreign investor to invest in India, so what impact does it has on the total production and export of automobiles is become very much important to study.

Keywords –Indian Auto Industry, FDI

Introduction

On the canvas of the Indian economy, automotive industry occupies a prominent place. A sound transportation system plays a pivotal role in the country's rapid economic and industrial development.The well-developed Indian automotive industry ably fulfils this catalytic role by producing a wide variety of vehicles: passenger cars, light, medium and heavy commercial vehicles, multi-utility vehicles such as jeeps, scooters, motorcycles, mopeds, three wheelers, tractors etc.Automotive Industry comprises of automobile and auto component sectors and is one of the key drivers of the national economy as it provides large-scale employment.

Being one of the largest industries in India, auto industry has been witnessing impressive growth during the last two decades. It has been able to restructure itself, absorb newer technology, align itself to the global developments and realize its potential. Automobile Industry was delicensed in July 1991 with the announcement of the New Industrial Policy.The norms for Foreign Investment and import of technology have also been progressively liberalized over the years for manufacture of vehicles including passenger cars in order to make this sector globally competitive.

An automotive industry emerged in India in the 1940s. Hindustan was the first company launched in 1942, and had a long time competitor Premier in 1944. They built GM and Fiat products respectively. Mahindra & Mahindra was established by two brothers in 1945, and began assembly of Jeep CJ-3A utility vehicles. For promoting the auto industry the government started the Delhi Auto Expo in 1986.

India is one of the most attractive invest-

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

ment destinations for most of the biggest automaker today. The automobile industry in India is one of the most important industries in the country's economic growth and it form a part with sizable share of the total GDP.

There is a wide of policy support in the form of taxes and foreign direct investment (FDI) encouragement by Indian government for growth of automobile sector along with research and development.

Objectives of the Study

To analyse the foreign direct investment inflow in automobile industry and its impact on gross domestic product of Indian economy and alsoanalyse the trends of production, capacity utilization, sales andexportof vehicles with reference to FDI in automobile sector of India.

Scope of the Study

The Scope of research is restricted to the automobile industry in India and that is too inflow of foreign direct investment in India.The period for the study is from 2008to 2020.

This study has importance from investor's point of view as they will impart with various facts and figures about FDI in India through this research.

Research Methodology

Data is collected from thesecondary source for research purpose.The secondary data will be collected through various journals, books, magazines, reports, working paper seriesof World Bank and IMF data sites, SIA Newsletter, DIPP(Department of Industry policy and promotion) Ministry of Commerce and Industry, Department of Heavy Industry. World Investment Reports, Human Development Reports, Reserve Bank of India, Bulletins, FICCI (FederationIndian chambers of industry and commerce) of Survey, CMIE center for monitoring Indian Economy etc. further some data can be collected through company's official website.

Review of Literature –

Dr. A. Vijayakumar (2011)reveled in his research that size of the firm and GDP growth have positive relationship.

Carkovic and Levine (2002), this paper revealed the growth-effects of FDI depend on the level of economic development, level of education, the level of financial development and trade openness of the recipient country. The study also found that many emerging economies have different tax incentive schemes and subsidies to attract more FDI.

Alfaro, Laura (2003),this study found that the benefits of FDI has spread acrosssectors by examining the effect of foreign direct investment on growth in the primary, manufacturing, and services sectors. This study also found the relation between FDI and transfer of knowledge, technology, management skills etc. This study found the flow of FDI in various sectors. It founds that FDI flow in primary sector has negative effect while FDI flow in manufacturing has positive effect.

Johnson (2005), the paper revealed that FDI can affect economic growth by two factors one is technology and second is physical capital.

Banga (2003), Fiscal incentives has not as such impact on aggregate FDI while reduction in existing restrictions has an aggregate impact on FDI.

Dunning (1993), suggested the four main types of FDI classified according to their primeinvesting impulse - market-seeking FDI, resource-seeking FDI, efficiency-seeking FDIand strategic asset-seeking FDI.

Velury Vijay Bhasker, and Y.V.S. Subrahmanya Sarma (2013), found that it is FDI through an investment in equity or starting a subsidiary company, technology transfer with managerial skills and applying improved management helps in cost reduction and increase in productivity in automobile industry.

Data Analysis –

Amount of foreign direct investment (FDI) equity inflows for the automobile sector in India from financial year 2015 to 2021

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

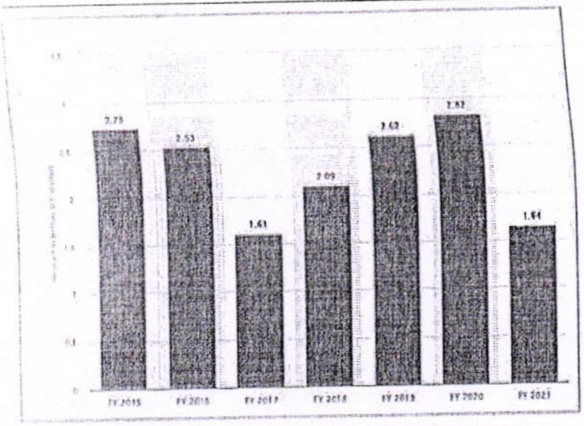

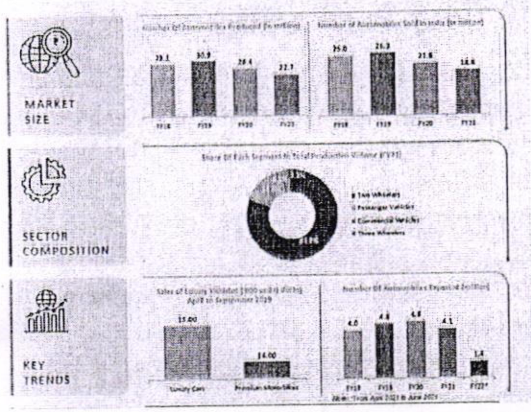

Source - IBEF

The automobile industry produced a total of 26.36 million vehicles in 2019-20 a decrease of 15 per cent over the previous record of 30.91 million motor vehicles manufactured in 2018-19 due to Covid pandemic, 1,861,849 vehicles including passenger vehicles, commercial vehicles, and two-wheelers, and three-wheelers in April 2014 as 1,687,243 in April 2013, stating a growth of 10.35 percent with the corresponding month of 2013. The growth is becauseof the rise in two-wheeler production. (SIAM DATA)Domestic automobiles production increased at 2.36% CAGR between FY16-20 with 26.36 million vehicles being manufactured in the country in FY20. Overall, domestic automobiles sales increased at 1.29% CAGR between FY16-FY20 with 21.55 million vehicles being sold in FY20.

Two wheelers and passenger vehicles dominate the domestic Indian auto market. Passenger car sales are dominated by small and mid-sized cars. Two wheelers and passenger cars accounted for 80.8% and 12.9% market share, respectively, accounting for a combined sale of over 20.1 million vehicles in FY20. Two-wheeler sales stood at 995,097 units, while passenger vehicle sales stood at 261,633 units in April 2021.

Overall, automobile export reached 4.77 million vehicles in FY20, growing at a CAGR of 6.94% during FY16-FY20. Two wheelers made up 73.9% of the vehicles exported, followed by passenger vehicles at 14.2%, three wheelers at 10.5% and commercial vehicles at 1.3%.

Indian automobile exports stood at 1,419,430 units from April 2021 to June 2021 as compared to 436,500 units in April 2020 to June 2020.

The Indian government facilitate foreign investment in the automobile sector by allowing 100 per cent FDI under the automatic route. Indian Automotive industry requires less licensing andNo custom duty on imports of automotive components.There is no minimum investment criteria for automobile industry which attracts the foreign investor to invest in India. It isforecasted by IHS Automotive, which is a global market information provider that India will become the third largest automotive market in the world by 2016 ahead of Japan, Germany and Brazil.

Data Source IBEF

In order to keep up with the growing demand, several auto makers have started investing heavily in various segments of the industry during the last few months. The industry has attracted Foreign Direct Investment (FDI) worth US$ 25.85 billion between April 2000 and March 2020, according to the data released by Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT).

In FY21, passenger vehicles sales reached 27.11 lakhs units, two-wheelers

reached 151.19 lakhs units, commercial vehicles sales reached 5.69 lakhs units and for three-wheelers it was 2.16 lakhs units.

In 2019-20, the total passenger vehicles sales reached ~2.8 million, while ~2.7 million units were sold in FY21.

In October 2020, Japan Bank for International Cooperation (JBIC) agreed to provide US$ 1 billion (Rs. 7,400 crore) to SBI (State Bank of India) for funding the manufacturing and sales business of suppliers and dealers of Japanese automobile manufacturers and providing auto loans for the purchase of Japanese automobiles in India.

In July 2021, India inaugurated the national automotive test tracks (NATRAX), which is Asia's longest high-speed track to facilitate automotive testing.

In Union Budget 2021-22, the government introduced the voluntary vehicle scrappage policy, which is likely to boost demand for new vehicles after removing old unfit vehicles currently plying on the Indian roads.

In February 2021, the Delhi government started the process to set up 100 vehicle battery charging points across the state to push adoption of electric vehicles.

The Union Cabinet outlaid Rs. 57,042 crore (US$ 7.81 billion) for automobiles & auto components sector in production-linked incentive (PLI) scheme under the Department of Heavy Industries.

In February 2019, the Government of India approved FAME-II scheme with a fund requirement of Rs. 10,000 crore (US$ 1.39 billion) for FY20-22.

Conclusion –

The overall study has shown that because of change in policy that is allowing 100 percent FDI in India through automatic route has helped Indian automobile industry to attract more and more Foreign Investment in India. As a result the production capacity of Indian automobile sector has doubled from and the domestic sales and export has also doubled. As per the world bank data in India there are only 13 vehicles per thousand people shows that still there is a huge untapped market within India which will definitely attract more and more foreign investment in Indian automobile sector only need is to look for good infrastructure facilities like roads etc.

The industry also provides great opportunities for investment and direct and indirect employment to skilled and unskilled labour.

References -

Government of India (GOI), Foreign Direct Investment Policy, Ministry of Commerce and Industry, Department of Industrial Policy and Promotion.

Jacques Morisset, Neda Pirnia, "How Tax Policy and Incentives Affect Foreign Direct Investment" A Review.

Report of the working group on automotive sector for the 12th five year plan (2012-2017) Ministry of Heavy Industries and Public Enterprises.

International Organization of Motor Vehicle Manufacturers, Media Reports, Press Releases, Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT), Automotive Component Manufacturers Association of India (ACMA), Society of Indian Automobile Manufacturers (SIAM), Union Budget 2021-22

❑❑❑

Shriram Education Society's

Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College

Phaltan Dist. Satara

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

One day Interdisciplinary International E-Conference on

THE CHANGING IDEOLOGY & MINDSET OF MODERN TIMES

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

Guest Editor
Dr. Devidas Gejage

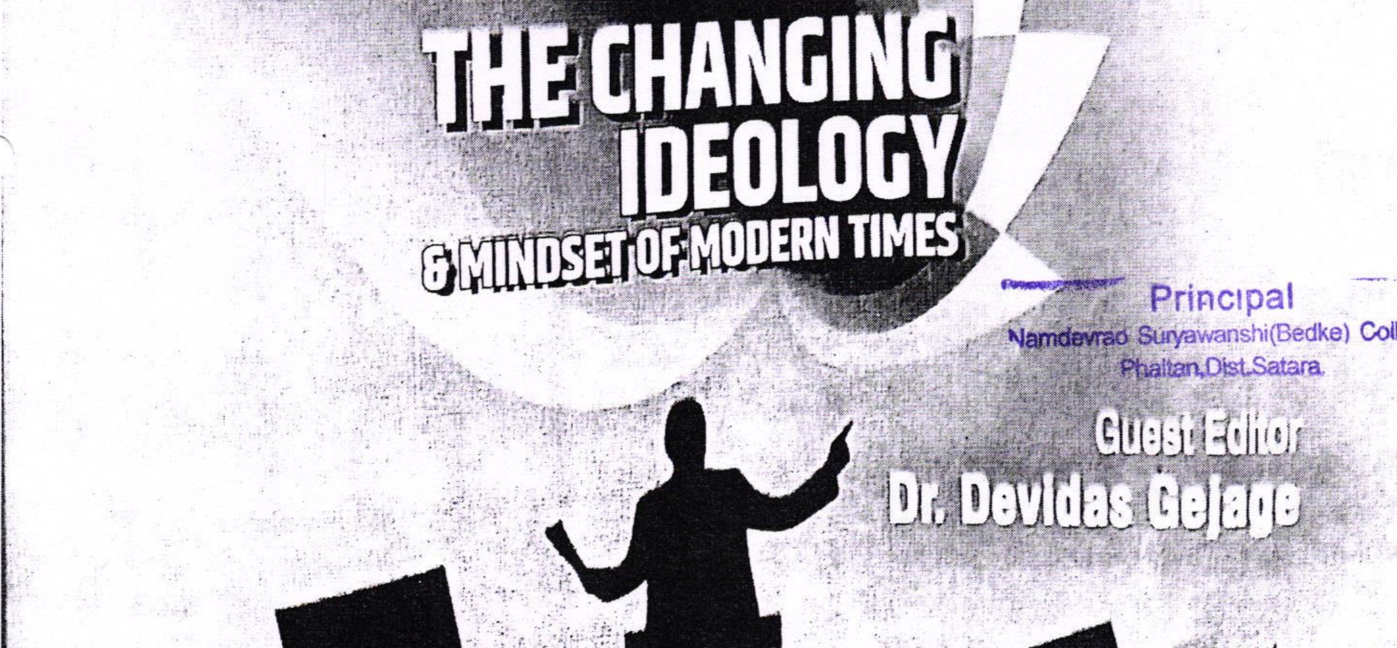

Scanned with OKEN Scanner

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2021 Special Issue | 01

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-02

**Date of Publication
01 Oct. 2021**

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana** Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post Limbaganesh.Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell 07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

14) महाविद्यालयीन विद्यार्थिनींची मोबाईल व्यसनाधीनता व आक्रमक वर्तन यांचा ...
प्रा. ढमाळ तनुजा राजेंद्र, जि. पुणे. महाराष्ट्र ||60

15) आधुनिक काळातील बदलती विचारधारा : बारोमास (मराठी कादंबरी)
डॉ. गेजगे देविदास साधू & डॉ. गायकवाड बबन सिद्राम, जि. सोलापूर ||62

16) एका लेखकाचा विशेष अभ्यास
प्रोफेसर डॉ.राजेंद्र खंदारे, जि.सोलापूर ||66

17) नवकवितेतील बदलती विचारधारा
प्रा.जवाहर लक्ष्मण मोरे, मंद्रुप ||71

18) आधुनिक काळात बदलत चाललेली मानसिकता आणि वैचारिकता
डॉ. संदीप रंगनाथ तापकीर, बारामती ||74

19) महात्मा जोतिराव फुले यांच्यासाहित्यातून दिसणारी बदलती विचारधारा व मानसिकता
प्रा.रामचंद्र उत्तम ढवळे, जि.कोल्हापूर ||78

20) आधुनिक कवितांमधून दिसणारी बदलती विचारधारा व मानसिकता
प्रा.डॉ.रंजना मधुकर कदम, जि.अहमदनगर ||82

21) जागतिकीकरण आणि आधुनिक विचारसरणीचा प्रभाव : भूमी (कादंबरी)
डॉ. सुनीता पांडूरंग सुर्यवंशी, जि. सोलापूर ||86

22) संगीत क्षेत्रातील बदलती विचारधारा
सुषमा मुरलीधर दाणी, Mumbai ||90

23) सुशील कुमार सिंह के नाटक में सांस्कृतिक मूल्य
श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे & डॉ. अशोक विठोबा बाचुळकर ||91

24) कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास 'मैं अपराधी हूँ' में नारी की परिवर्तित विचारधारा
प्रा. श्री. बिचुकले एस. एस., जि. सातारा ||95

25) डॉ.उषा यादव के उपन्यासों में मुक्ति के लिए संघर्षरत भावुक किशोरियाँ
प्रा. दत्तात्रय महादेव साळवे, जि. सोलापूर ||97

26) स्पर्धा परीक्षांमधील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता
प्रा. डॉ. रायते तेजश्री विष्णु, फलटण ||99

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

Scanned with OKEN Scanner

दर्शन कराया है। प्रस्तुत उपन्यास में मासूम लडकी 'वसुधा' का चित्रण हुआ है। इस वसुधा के घर में 'अंकुर' नामक एक नौकर है। इस अंकुर की कुटिलता का पर्दाफाश होने पर वसुधा का शैशव अवस्था का एक दृश्य सामने आता है जैसे- स्याह कपडे पहने, चेहरे पर कालिख, पोते, लपलपाती लाल गत्रे की जीभ को मुँह से बाहर निकाले, हाथ में बजनेवाला चिमटा लिये जब कालीमाई दौडती हुई सडक से निकलती तो उसकी घिग्घी बंध जाती थी। यह दिव्या जोरड आवाज करके दादाजी के गोद आकर छिपते हुए वसुधा कहती है कि, दादाजी बचाओ, काली माई आ गई। अपनी बेटी का भयानक आवाज सुनकर दादाजी हँसते हुए कहते है कि, मेरी पगली बिटिया। अरे वह कोई सचमुच की कालीमाई थोडी ही है। एक गरीब आदमी है। दो-चार आने मिल जाएँ, इसलिए कालीमाई का स्वाँग भरकर घूमता है। ... संस्कार विहीन युवा-पीढी का यह छल-प्रपंच युक्त स्वाँग। (पृ-२३)

अंत में डॉ.उषा यादव लिखित 'आँखों का आकाश' सन १९९५ में प्रकाशित हुआ उपन्यास है। इस उपन्यास में इस प्रकार का वर्णन किया है कि, पुरुष प्रधान समाज के माध्यम से नारी का कभी लडकी,बहन, पत्नी आदि रुपों में अन्याय-अत्याचार, तथा उसका शोषण होता हुआ हमें देखने को मिलता है।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते है कि, एक ज्ञानी और जागरूक लेखिका के जिम्मेदारी का चित्रण उषाजी के उपन्यासों देखने को मिलता है। उषाजी एक आदर्शवादी लेखिका होने के नाते उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज की समस्याओं के वर्णन के साथ-साथ सभी नारी पात्रों को अपने रास्ते के सभी समस्याओं अलग करके उसका सामना करते हुऐ दिखलाया है।

□□□

26

स्पर्धा परीक्षांमधील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता

प्रा. डॉ. रायते तेजश्री विष्णु
तत्वज्ञान विभाग,
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविदयालय फलटण

****

प्रस्तावना—

सध्या आपण सर्वजण असे वारंवार म्हणत असतो की, सध्याचे युग हे तंत्रज्ञानाचे व स्पर्धा—परीक्षांचे युग आहे. या काळामध्ये तत्वज्ञानाचा विस्तार होऊ लागलेला आहे. कारण या परीक्षेला बसणाऱ्या विदयार्थ्याची संख्या आता वाढू लागलेली आहे. संघलोकसेवा आयोग असो किंवा महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग या परीक्षांना बसण्याला जणू एखादया चळवळीचे स्वरुप येऊ लागलेले आहे. परंतू या सर्व गोष्टींमध्ये सर्वप्रथम काही बाबींकडे आपणांस नजर टाकावी लागेल, आणि याच उद्दिष्टाने स्पर्धा परीक्षांच्या अभ्यासातील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता आपणांस समजून घ्यावी लागेल.

संघलोकसेवा आयोगामार्फत दरवर्षी साधारणत: २०० ते ३०० इतक्या कमी जागांसाठी ही परीक्षा होते. खूपच कमी जागांसाठी घेतल्या जाणाऱ्या या परीक्षांना बसणाऱ्यांची संख्या लाखोंच्या घरात असते. ज्यांना या परीक्षा देण्याची खरेच इच्छा आहे. त्यांनी अभ्यासाच्या व अभ्यासक्रमांच्या तयारीनेच उतरायला हवे.

तर्कशास्त्र व तत्वज्ञान माणसांस विचार करायला लावते. तर्क करण्यास शिकविते याचा आपण क्रमश: विचार करु. तत्वज्ञानास हिंदीमध्ये दर्शनशास्त्र असे म्हटले जाते. दर्शन म्हणजे सत्याचा शोध घेणे होय. उदा. तव्यावर बनवली जाणारी पोळी व तिला भाजण्यासाठी किती तापमानाची गरज आहे. हे सुद्धा तत्वज्ञानच आहे. याबरोबरच याचे दुसरे उदाहरण घ्यायचे

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN
Scanned with OKEN Scanner

... इ. स. २०५० मध्ये आपल्याकडे तंत्रज्ञानाचा ... निवारणीत होईल. या विचारामागे चिंतन ही ... प्रक्रिया अंतर्भूतहोईल. म्हणजेच तार्किक ... तथ्य व प्रमाण या दोन प्रक्रिया येतात.

या परिक्षांमध्ये तत्वज्ञान विषय समाविष्ट ... विदयार्थ्यांनी या विषयाची निवड व्हजपदंस ... जेव्हा करावयाची असते ती करण्यामागे दोन ... कारणे येतात. पहिले म्हणजे तत्वज्ञान विषय ... आहे

परंतु खोलवर आहे. यामध्ये समजणे व समजून ... या दोन्ही गोष्टी अंतर्भूत होतात. तसेच यामध्ये current Affairs नसतात त्यामुळे विदयार्थ्यांना अभ्यास ... विषयाची लांबीस मर्यादा पडते. यामध्ये भारतीय तत्वज्ञानाचा समावेश होताना सांख्य दर्शन, योग दर्शन, ... दर्शन, वैशेषिक दर्शन, पूर्वमीमांसा दर्शन उत्तरमीमांसा दर्शन या दर्शनांचा समावेश होतो तसेच नास्तिक, जैन व बौद्ध दर्शन यांचाही विशेष अभ्यास अंतर्भूत केला आहे.

UPSC परीक्षेतील दर्शनशास्त्रास विषेश ... आहे. स्वातंत्र्य, समता, या तत्वांचा महत्व ... समकालीन पाश्चात्त्य दर्शनाचा समावेश या अभ्यासक्रमांमध्ये केला आहे. धर्म दर्शनाचा, सामाजिक व राजनैतिक दर्शनाबरोबर पाश्चात्त्य तत्वज्ञानाचा समावेश या अभ्यासक्रमांमध्ये केला आहे. प्लेटो, सॉक्रेटीस, ॲरिस्टॉटल यांच्या तत्वज्ञानाचा समावेश होतो. जरी या परीक्षाला बसणारे विदयार्थी तत्वज्ञान विषयामधून पदवी पूर्ण केली नसेल तरीही हा विषय समजून ... विचार व चिंतनाने येवू शकतो. तत्वज्ञान विषयाची ... असेल तरीही उत्तमरीत्या विदयार्थी यापरीक्षेची ... करु शकतात.

... लोकसेवा आयोगाच्या याच Optional विषयामध्ये जरी आपण तत्वज्ञान विषयाची निवड ... उद्दिष्टे लक्षात ठेवून केलेली असली तरीसुद्धा ... लोकसेवा किंवा महाराष्ट्र राज्य लोकसेवा आयोग ... १, २, व ३ च्या परीक्षांनाच नाही तर सेट, नेट, पेट, ... सर्वच परीक्षांमध्ये प्रश्नांच्या अशा रचना ... की विचारलेल्या वस्तुनिष्ठ प्रश्नांमध्ये प्रत्येकच ... योग्य वाटत असाला तरी आपणांस तर्क लावूनच उत्तराची निवड करावी लागते. या प्रश्नांचा आपण सखोल विचार केला तरच विचारलेला प्रश्नांच्या उत्तरापर्यंत आपण पोहचू शकतो. तर्क याचा अर्थ म्हणजेच विचारांचे किंवा निर्णयाचे शास्त्र असा घेतला जातो. तर्क म्हणजेच अंदाज, अनुमान किंवा प्रयास असा आहे.

तर्क करायचा तो कसा करायचा त्याचा अर्थ त्याचे गुणधर्म त्याचा अभ्यास नसतानाही माणूस अगदी लहानपासून या विचारप्रक्रियेला एक घटक होऊ घातलेला आहे. तर्कशास्त्राचे ही अनेक प्रकार आहेत. विधेय तर्कशास्त्र, संबंध तर्कशास्त्र, सांकेतिक तर्कशास्त्र, पारंपारिक तर्कशास्त्र अशा विविध प्रकारच्या अभ्यासाचे मूळ उद्दिष्ट एकच की प्रश्नास किंवा परिस्थितीस निर्यायक अवस्थेपर्यंत पोहोचविणे. घोकंपट्टी करुन स्पर्धा परीक्षांचे प्रश्न सुटणारे नसतात. माहितीचे संश्लेषण, परीक्षण करुनच चिंतनाने हे प्रश्न सुटतात. परीक्षेच्या ठरवून दिलेल्या वेळेनुसार जर प्रश्नांची उत्तरे अचूक सोडवायची असतील तर विदयार्थ्यांना तर्कशास्त्राची ओळख असणे गरजेचे आहे.

तर्काचा वापर करुन आपण आपल्या जीवनातील महत्वाच्या गोष्टीसाठी निर्णय घेऊ शकतो. कारण तर्कशास्त्र हे आदर्शवादी शास्त्र आहे.

तर्कशास्त्रामध्ये चार प्रकारची विधाने आपणांस निष्कर्षाप्रत नेण्यासाठी खूपच उपयुक्त ठरतात

१. सामान्यवाची होकारार्थी विधान
२. सामान्यवाची नकारार्थी विधान
३. विशेषवाची होकारार्थी विधान
४. विशेषवाची नकारार्थी विधान

स्पर्धा परीक्षांमधील विचारलेल्या प्रश्नांचा याच स्वरुपावरुन निघणाऱ्या याच चार विधानांद्वारे विदयार्थी निष्कर्षाप्रत पोहचू शकतात. कारण तर्काचा उपयोग आपण ढोबळमानाने दैनंदिन जीवनात करतच असतो.

उदा मला उद्या ७.३० वा महाविद्यालयात पोहोचणे गरजेचे आहे तर यासाठी आपण सकाळी लवकर उठून दैनंदिन विधी आटोपून आपण कोणती बस घरापासून पकडू शकतो याचा अंदाज बांधणे गरजेचे आहे.

स्पर्धा परीक्षांमधील वस्तुनिष्ठ प्रश्नांचे स्वरुप

Scanned with OKEN Scanner

One day
Interdisciplinary
International E-Conference o

THE CHANGING IDEOLOGY
& MINDSET OF MODERN TIMES

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

Scanned with OKEN Scanner

|| प्रज्वलितो ज्ञानमयः प्रदीपः ||

SHRIRAM EDUCATION SOCIETY'S,

NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN,

TAL. PHALTAN, DIST. SATARA

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY & IQAC

ORGANIZED BY

ONE DAY INTERDISCIPLINARY

INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES

Date 25th September, 2021, Saturday, Time- 11.00am (IST)

CERTIFICATE

This is certify that Shri/Smt./Dr./Prof.: Miss. Rayate Tejashri Vishnu of Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College has participated in a One Day Interdisciplinary International E-Conference on "**THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES**" organized by the Department of Psychology & Internal Quality Assurance Cell (IQAC) NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN, **TAL. PHALTAN, DIST. SATARA** Maharashtra, India on 25th September, 2021 as a Resource Person / Chair Person/ Paper Presented/ Participated.

He/She has presented Research Paper entitled 'स्पर्धा परीक्षा मधील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता'

CONVENER
MR. ARIF TAMBOLI
IQAC Coordinator

ORGANIZER
DR. DEEPAK RAUT-PAWAR
I/C Principal

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Scanned with OKEN Scanner

II प्रज्वलितो ज्ञानमयः प्रदीप II

SHRIRAM EDUCATION SOCIETY'S,

NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN,

TAL. PHALTAN, DIST. SATARA

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY & IQAC

ORGANIZED BY

ONE DAY INTERDISCIPLINARY

INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES

Date 25th September, 2021, Saturday, Time- 11.00am (IST)

CERTIFICATE

This is certify that ~~Shri/Smt.~~/Dr./Prof.: Miss. Rayate Tejashri Vishnu of Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College has participated in a One Day Interdisciplinary International e-Conference on "**THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES**" organized by the Department of Psychology & Internal Quality Assurance Cell (IQAC) **NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN, TAL. PHALTAN, DIST. SATARA** Maharashtra, India on 25th September, 2021 as a Resource Person / Chair Person/ Paper Presented/ Participated.

He/She has presented Research Paper entitled 'स्पर्धा परीक्षा मधील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता'

CONVENER
MR. ARIF TAMBOLI
IQAC Coordinator

ORGANIZER
DR. DEEPAK RAUT-PAWAR
I/C Principal

Scanned with OKEN Scanner

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Shriram Education Society's

amdevrao Suryawanshi (Bedke) College

Phaltan Dist. Satara

One day Interdisciplinary International E-Conference o

THE CHANGING IDEOLOGY

& MINDSET OF MODERN TIMES

Guest Editor

Dr. Devidas Gejage

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-02

Date of Publication
01 Oct. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

14) महाविद्यालयीन विद्यार्थिनींची मोबाईल व्यसनाधीनता व आक्रमक वर्तन यांचा ...
प्रा. ढमाळ तनुजा राजेंद्र, जि. पुणे. महाराष्ट्र ||60

15) आधुनिक काळातील बदलती विचारधारा : बारोमास (मराठी कादंबरी)
डॉ. गेजगे देविदास साधू & डॉ. गायकवाड बबन सिद्राम, जि. सोलापूर ||62

16) एका लेखकाचा विशेष अभ्यास
प्रोफेसर डॉ.राजेंद्र खंदारे, जि.सोलापूर ||66

17) नवकवितेतील बदलती विचारधारा
प्रा.जवाहर लक्ष्मण मोरे, मंद्रुप ||71

18) आधुनिक काळात बदलत चाललेली मानसिकता आणि वैचारिकता
डॉ. संदीप रंगनाथ तापकीर, बारामती ||74

19) महात्मा जोतिराव फुले यांच्यासाहित्यातून दिसणारी बदलती विचारधारा व मानसिकता
प्रा.रामचंद्र उत्तम ढवळे, जि.कोल्हापूर ||78

20) आधुनिक कवितांमधून दिसणारी बदलती विचारधारा व मानसिकता
प्रा.डॉ.रंजना मधुकर कदम, जि.अहमदनगर ||82

21) जागतिकीकरण आणि आधुनिक विचारसरणीचा प्रभाव : भूमी (कादंबरी)
डॉ. सुनीता पांडूरंग सुर्यवंशी, जि. सोलापूर ||86

22) संगीत क्षेत्रातील बदलती विचारधारा
सुषमा मुरलीधर दाणी, Mumbai ||90

23) सुशील कुमार सिंह के नाटक में सांस्कृतिक मूल्य
श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे & डॉ. अशोक विठोबा बाचुळकर ||91

24) कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास 'मैं अपराधी हूँ' में नारी की परिवर्तित विचारधारा
प्रा. श्री. बिचुकले एस. एस., जि. सातारा ||95

25) डॉ.उषा यादव के उपन्यासों में मुक्ति के लिए संघर्षरत भावुक किशोरियाँ
प्रा. दत्तात्रय महादेव साळवे, जि. सोलापूर ||97

26) स्पर्धा परीक्षांमधील तत्वज्ञान व तर्कशास्त्राची उपयोगिता
प्रा. डॉ. रायते तेजश्री विष्णु, फलटण ||99

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

24

कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास 'मैं अपराधी हूँ' में नारी की परिवर्तित विचारधारा

प्रा. श्री. बिचुकले एस. एस.
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय फलटण, जि. सातारा

****

जीवन को समग्र रुप में व्यक्त करने की क्षमता उपन्यास में होती है। इसलिए कहा गया है कि, ''उपन्यास मानव जीवन का दर्पण है।''[१] वर्तमान उपन्यास साहित्य मानव जीवन के दर्पण तक सीमित न रहकर मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हुआ है। आज उपन्यासकार विचार, जीवन मूल्यों, नैतिकता–अनैतिकता, बनते–बिघडते मानवीय संबंधों आदि जटिल से जटिल विषयों का समाधान ढूँढना चाहता है। समाज को एक निश्चित दिशा देना चाहता है। उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसमें नारी की वैविध्यपूर्ण सूक्ष्म तस्वीरों को व्यापक रीति से उभारने में साहित्यकारों को ज्यादा सहूलियत मिली है। आधुनिक युगीन मानसिक व्दंव्द और कुंठाओं को प्रस्तुत करने का एक उत्तम साधन उपन्यास बन गया है। यथार्थ की पृष्ठभूमि पर जीवन की व्यापक अभिव्यक्ति आज उपन्यासों में हो रही है। इस दृष्टि से २१ वीं शती के प्रथम दशक के हिंदी उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

२१ वीं सदी के उपन्यासों में आधुनिकता तथा उत्तर आधुनिकता के प्रभाव से परिवर्तित जीवन मूल्यों एवं विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है। इस संदर्भ में डॉ. शेख रब्बानी जिलानी का कथन है कि, ''आज का व्यक्ति वर्तमान समाज परिवर्तन का आकांक्षी है। उसकी दृष्टि से पारंपरिक रीति–रिवाज मान्यताएँ आदि सभी निरर्थक है। वह परंपरागत मूल्यों को स्वीकार नहीं करता।''[२] पारंपरिक मूल्यों को स्वाहा करते हुए नए मूल्यों की स्थापना की जा रही है। परिवर्तन के इस तूफान के परिणाम स्वरूप आज उपन्यासों में नगरीय नारी के परिवर्तित विचारधारा को नए दृष्टिकोण से व्यापक धरातल पर प्रकट किया जा रहा है। नारी के परिवर्तित विचारधारा एवं जीवन मूल्यों के अनेक पहलुओं को युगानरूप उभारने का प्रयास हो रहा है। आज की प्रसिद्‌ध लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री जी ने भी लगभग सभी उपन्यासों में नारी की बदलती विचारधारा को व्यक्त किया है। उनके उपन्यासों में नए युग की दस्तक है, जिसमें नारी का युगानुरूप सशक्त चित्रण हुआ है। आज की नारी स्वतंत्र चेतना की धात्री है, वह अपनी इच्छाओं को न दबाते हुए समाज की दकियानूसी मान्याओं से संघर्ष करती हुई उनकी पूर्ति करती है। परिणाम स्वरूप विचारधारा में गहरा बदलाव आया है। इस दृष्टि से कृष्णा अग्निहोत्री का 'मैं अपराधी हूँ' उपन्यास बदती नारी जीवनशैली, विचारधारा एवं जीवनमूल्यों की सार्थक तलाश है।

ठस उपन्यास की भूमिका में लेखिका की आत्मस्वीकृति है कि, 'नारी जीवन' उनका प्रिय अनुभव क्षेत्र है। लेकिन वह रूढ अर्थ में नहीं, हर ओर से उसमें नवोन्मेष है। नारी जीवन मूल्यों को प्रभावित करनेवाले सामाजिक संदर्भो पर भी उनकी तीखी नजर है। इस संदर्भ में डॉ. शेख के विचार द्रष्टव्य है, ''आज वैज्ञानिक प्रगति और बौध्दिक उन्मेष के फलस्वरूप आज के साहित्य में मानव मूल्यों के प्रति सजगता ही अधिक पायी जाती है। मानव आज मोक्ष को आकांक्षी नहीं है।''[३] प्रस्तुत कथन 'मैं अपराधी हूँ' उपन्यास को पूर्णतः स्पष्ट करते हैं। उपन्यास के पात्र जीवन मूल्यों को लेकर जागृक है तथा वे मोक्ष एवं आदर्शवाद की चौखट से निकलकर सार्थक जीवन के आकांक्षी है। पाप–पुण्य के घेरे से दूर वह सुखवाद के लिए मूल्यों से समझौता नहीं करते। इस उपन्यास की केंद्रीय पात्रा सीमा है जो पुरुष वर्चस्व के विरूध्द कई स्तरों से लडाई लडती है। सीमा जहाँ अपनी माँ और बहन रीमा द्वारा बारबार तिरस्कृत होती है, वही उसका पति भी उससे अपना पीछा छुडा लेता है। आर्थिक स्वावलंबन के बल पर वह परिस्थितियों से लडती है

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

तथा अपनी बेटी उम्मी का पालन–पोषण करती है, कालांतर में हालत ऐसे मोड लेते हैं कि उसे अपने बेटी से भी अपमानित होना पडता है। कई पुरुष सहानुभूति जताते हुए उसके जीवन में आते हैं परंतु केवल इंद्रजीत ही ऐसा है जो उसकी भावनाओं को समझकर उसका साथ देता है। समस्त उपन्यास अपनों द्वारा छले जाने तथा प्रताडित किए जाने के एहसास से पूर्ण है। सीमा के संपर्क में आनेवाले सभी नारी पात्र चाहे वह मध्यमवर्ग की 'उम्मी' हो या उच्चवर्ग की 'सरिता', हिंदू 'शुभा' या मुस्लिम 'आसफा' या फिर इसाई 'कमला' सबके पीछे कोई न कोई त्रासदी है और वे इसे भोगने के लिए अभिशप्त है। इस अंधकार में भी वे जिजीविषा से प्रेरित होकर अपने अधिकारों के लिए लड रही हैं।

लेखिका ने 'गागर में सागर' भरते हुए नारी जीवन के विविध पहलुओं पर सफलता से प्रकाश डाला है। उसके जीवन के प्रत्येक पहलू का स्पर्श करके पाठक को उसकी स्थिति से अवगत कराया है। २१ वीं सदी की नारी विद्रोहिनी है उसने दीनता से रोना बंद कर दिया है, उसका स्थान जीवन संघर्ष ने ले लिया है। उसमें आक्रोश है, बगावत का स्वर है अपने अधिकारों के लिए संघर्ष की ललक है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी कें बदले विचार एवं जीवन मूल्यों की झलक है। सीमा अपने पराए सभी से ठोकर खाकर अपनी हस्ती खुद बनाती है। वह आर्थिक तौर पर भी आत्मनिर्भर बनकर पति को चुनौती देती है। ''आज नारी स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है, वह वर्जनामुक्त होकर अपना मार्ग खुद चुनना चाहती है। नारी तथा पुरुष अपने अपने स्थान पूर्णत्व की खज में प्रयत्नशील है, खोज की हर दिशा उनके व्यक्तित्व को भंग कर रही है।''[४] इस कथन के अनुरूप ही उपन्यास की नायिका सीमा स्वतंत्र जीवन की अभिलाषी है। प्रश्न चाहे कार्यक्षेत्र चुनने का हो या जीवनसाथी चुनने का वह अपना निर्णय खुद लेती है। वह अपने पूर्णत्व के लिए नए मार्ग तलाशती है तथा उपने व्यक्तित्व के प्रति सजग है। भले ही वह अपनों के दिए हुए घावों से पीडित हो फिर भी इन रिश्तों को बनाए रखने में विश्वास रखती है। भाई बहन के रिश्तों को न तोडते हुए उनमें सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयत्नशील है। आज की नारी अन्याय को सह नहीं पाती वह उसका विरोध करती है, तभी तो उपन्यास की अतिया आत्मविश्वास के साथ कहती है, ''आप सबकी परेशानियाँ देखकर बडी मुश्किल से अपना जीवन हिम्मत से इसलिए नहीं बनाया कि मर्द जुल्म भी करे और तलाक–तलाक कहकर छोड भी दे।''[५] इस सदी की नारी संघठीत हो रही है, वह एक दूसरे का आधार बनी है। 'नारी ही नारी की दुश्मन है' इस बात को सेंधकर इस उपन्यास में नारी के नए रूप को दर्शाया है। नारी द्वारा नारी को सहारा देकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास नारीमुक्ति का नया आयाम है। इस उपन्यास में विवाहित नारी–पुरुष के दोस्ती का समर्थन है। नायिका सीमा की इंद्रजीत से दोस्ती यही दर्शाती है कि सुख दुख का भागीदार ही सच्चा दोस्त है। भले ही वह विवाह के पश्चात् का क्यों न हो। नारी–पुरुष के ये रिश्ते आधुनिकता से उपजी भावात्मक एकता को प्रकट करते हैं, जो आज की स्थिति और जरूरत से जुडी आधुनिकता के परिचायक है।

इस प्रकार कृष्णा अग्निहोत्री द्वारा लिखित 'मैं अपराधी हूँ' यह उपन्यास नारी के बदले हुए विचारधारा एवं जीवन मूल्यों का सशक्त दस्तावेज है। जो नारी मुक्ति के साथ नारी अस्मिता, चेतना, स्वाभिमान आदि जीवन मूल्यों को अपने भीतर समेटकर नए युग की दस्तक दे रहा है तथा परिवर्तित विचारधारा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ —

१) 'हिंदी उपन्यास कला' — डॉ. प्रतापनारायण टंडन, पृष्ठ क्र. ६३

२) 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में समाज परिवर्तन'–डॉ. शेख रब्बानी जिलानी,पृष्ठ क्र.८७

३) 'वही'. पृष्ठ क्र. ८८

४) 'वही' पृष्ठ क्र. १७०

५) 'मैं अपराधी हूँ' (उपन्यास) — कृष्णा अग्निहोत्री. पृष्ठ क्र. ७६

❑❑❑

II प्रज्वलितो ज्ञानमयः प्रदीप II

SHRIRAM EDUCATION SOCIETY'S,

NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN,

TAL. PHALTAN, DIST. SATARA

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY & IQAC

ORGANIZED BY

ONE DAY INTERDISCIPLINARY

INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES

Date 25th September, 2021, Saturday, Time- 11.00am (IST)

CERTIFICATE

This is certify that Shri/~~Smt.~~/~~Dr.~~/Prof.: Bichukale Sandesh Sopanrao of Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College has participated in a One Day Interdisciplinary International e-Conference on "**THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES**" organized by the Department of Psychology & Internal Quality Assurance Cell (IQAC) NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN, **TAL. PHALTAN, DIST. SATARA** Maharashtra, India on 25th September, 2021 as a Resource Person / Chair Person/ Paper Presented/ Participated.

He/She has presented Research Paper entitled 'कृष्णा अग्निहोत्री का उपन्यास 'मैं अपराधी हूँ' में नारी की परिवर्तित विचारधारा'

CONVENER	**ORGANIZER**
MR. ARIF TAMBOLI	DR. DEEPAK RAUT-PAWAR
IQAC Coordinator	I/C Principal

मासिक RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष-17 अंक - 6 (अप्रैल - 2021)
Vol - XVII Issue No - VI
(April - 2021)

मूल्यः 25 /- रूपये

Indexed In International Impact Factor Services (IIFS) Database
Indexed In the International Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed

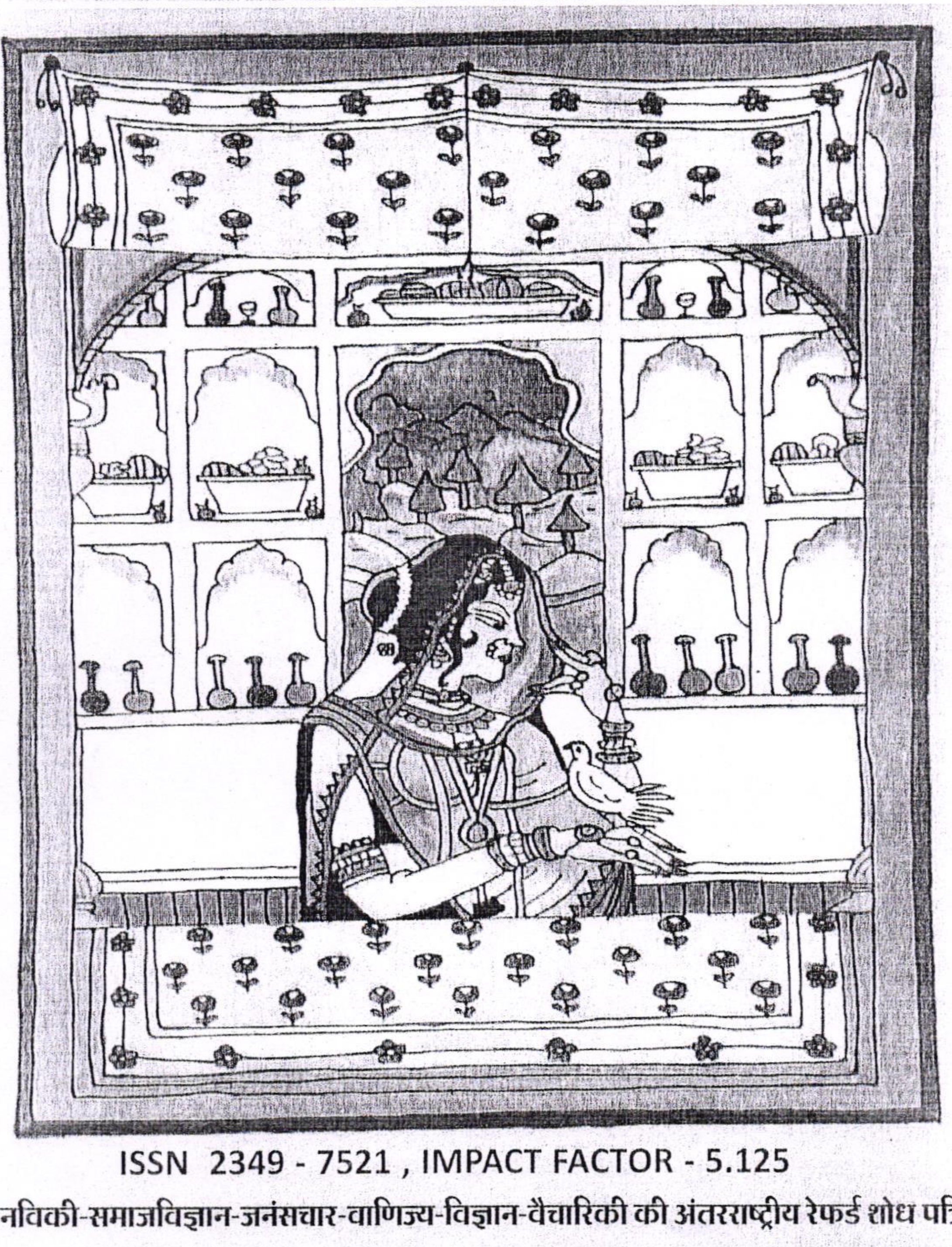

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 5.125

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनंसचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

Impact Factor - 5.125

वर्ष-17 अंक-6 , अप्रेल - 2021
Vol - XVII
Issue No.VI
April - 2021

aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ.मोहन बैरागी
संपादक मण्डल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
सहयोगी सम्पादक :- डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
सह सम्पादक- डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. विदुषी शर्मा
डॉ. ख्याति पुरोहित
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना
आवरण- आयुषी अमित माथुर

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 650/-रूपये एवं प्रकाशन/पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :-

Union Bank of India,
Account Holder- Aksharwarta
Current Accont NO.
510101003522430
IFSC- UBIN0907626
Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

भुगतान की मुल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है। Email: aksharwartajournal@gmail.com

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत
फोन :- 0734-2550150 मोबा :-8989547427

संपादक मंडल

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर,पंजाब)

सहयोगी संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात)

सह सम्पादक

डॉ. श्वेता पंड्या, डॉ. राम सौराष्ट्रीय, डॉ. राकेश परमार, डॉ. अलका चौहान, डॉ. रेखा कौशल

अनुक्रम

» वर्तमान समय की चुनौतियां और तुलसी का काव्य
दीपक कुमार भारती 06

» मुझे चांद चाहिए उपन्यास के प्रमुख पात्रों का उत्तरआधुनिक दृष्टि से अध्ययन
कविता शर्मा 09

» कथासाहित्य लेखिकाओं में एक अलग पहचान : पद्मा सचदेव
प्रा. श्री. बिचुकले एस. एस. 12

» त्रिलोचन के काव्य में मानव संघर्ष व लोकधर्मिता
डॉ. सपना तिवारी 14

» बघेलकालीन रीवा राज्य में वस्त्र उद्योग का ऐतिहासिक अध्ययन
डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय 18

» नागार्जुन की कविताओं में प्रगतिवादी चेतना
डॉ. शोभा रानी 21

» रवीन्द्र कालिया की कहानियों में चित्रित समाज (मध्यवर्ग)
डॉ. सुधाकर सिंह 23

» मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में आधुनिकताबोध
प्रेमचन्द मौर्य 27

» 'अहल्या' में स्त्री विमर्श
डॉ. प्रीता रमणी टी. ई 29

» पर्यावरण और समकालीन कविता
डॉ. रतीष सी नायर 31

» काम - प्रतीकों की सार्थकता एवं खजुराहो कला
डॉ. आशीष कुमार चाचोंदिया 33

» प्राचीन ग्रंथों में नारी एवं आज की राजनीति
जीवेश कुमार झा 36

» नई शिक्षा - नीति के आयाम
डॉ. माया रावत, योगेन्द्र सिंह डावर 40

» हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद
डॉ. आशा 43

» सामाजिक न्याय व मानव अधिकारों के क्रियान्वयन हेतु पुलिस की भूमिका के प्रति सुचनादाताओं के दृष्टिकोणः एक अध्ययन
कु. निशा यादव 46

» 'जयद्रथ-वध' खण्डकाव्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना के विविध आयाम
आस्था बैरवा 48

» मथुरा में जैन मूर्तिकला का विकास
डॉ. मधु भदौरिया 53

» 'झूठा - सच' में चारित्र्य पड़ताल
डॉ. रमेश यादव 54

» मथेरण चित्रकारों द्वारा चित्रित ग्रंथ निर्माण प्रविधि : तकनीकी पक्ष
डॉ. राकेश कुमार किराड़ू 58

» श्रमिको का राजनीतिक परिदृश्य
डॉ. शशि बाला भट्ट 62

» साहित्य और सिनेमा से समाज की दशा और दिशा
डॉ. सीमाबाला अवास्या 68

» ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति
प्रो. कैलाश सोलंकी 70

» "माई का शोकगीत" कहानी संग्रह की समस्याओं का वर्तमान समस्याओं से संबंध
प्रा. श्री शेख. जे. एस. 72

» भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति
श्रीमति सोनाली ठाकुर 74

» समकालीन कहानियों में चित्रित दलित जीवन
डॉ. धन्या के. एम. 76

» उदीयमान भारत में साहित्य की चुनौतियाँ
स्वरूप सिंह भाटी गोरडिया 78

» मालवा की प्रमुख लोक कवियित्रियाँ : वैशिष्ट्य और तुलना
अनीता अग्रवाल 80

» पुस्तक समीक्षा
रामदरश मिश्र का कथेतर सर्जनात्मक गद्य साहित्य
समीक्षक- डॉ. वेद मिश्र शुक्ल 83

» Subimal Mishra's Contribution to Modern Bengali Literature: produ cation, Reception and Translation
Utsarga Ghosh 85

» अतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी व राष्ट्रीय अवार्ड समाचार 89

COLLEGE ... TAN (stamp)

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 5.125
Vol - XVII, Issue - VI, April - 2021
"AKSHARWARTA" Monthly International Referred Journal

कथासाहित्य लेखिकाओं में एक अलग पहचान : पद्मा सचदेव

प्रा. श्री. बिचुकले एस. एस.

हिंदी विभागाध्यक्ष, नादेवराव सूर्यवंषी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण, जिला- सतारा, महाराष्ट्र

हिंदी कथासाहित्य कई जानी-मानी हस्तियों से गुलजार हैं। प्रेमचंद से लेकर अनामिका तक सभी ने उसे समृद्ध करने में कोई कसर नहीं छोडी है। सन 1970 ई. के बाद इसमें कतिपय लेखिकाओं का बोलबाला रहा है। इनमें महत्वपूर्ण नाम हैं-मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, कृष्णा अग्निहोत्री, ममता कालिया, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, उषा प्रियवदा, नासिरा शर्मा, मंजुल भगत, सुधा अरोडा, मालती जोषी, मृदुला गर्ग, नमिता सिंह, चंद्रकांता, सूर्यबाला, इस सूची को और भी बढाया जा सकता है। इन महिला साहित्यकारों की फौज ने वर्तमान समसामयिक सभी विषयों पर लेखनी चलायी है। परंतु विशेषत : नारी विमर्ष को केंद्र मे रखकर उसमें नई-नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए गए है। इन सभी ने हिंदी कथा साहित्य को एक नई ऊँचाई एवं गरिमा प्रदान की है! इस सूची में पद्मा सचदेव अपना अलग स्थान रखती है।

पद्माजी रणबांकुरों की जननी डुग्गर प्रदेश जम्मू की लेखिका है। मूलत : यह डोगरी की सुप्रसिद्ध साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कवयित्री है। डोगरी प्रेमी होने के बावजूद भी उन्होंने हिंदी को अपनाया और उसमें विपुल लेखन किया है। उनके कथासाहित्य की दृष्टि से हिंदी में चार उपन्यास तथा दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चूके हैं। इनके लेखन का कालखंड 1990 से 2004 तक का है। 1990 के दशक में जिन लेखिकाओं की किताबों को पाठकों ने हाथों हाथ लिया उनमें पद्माजी का नाम भी अग्रणीय रूप से लिया जाता है। दो शताब्दियों के बीच का कालखंड होने के कारण इसे परिवर्तन का संधी काल कह सकते हैं। यह समय दो ध्रुवों पर बैठा समय है। एक ओर तकनीकी क्रांति, सूचना विस्फ ोट तो दूसरी ओर सांस्कृतिक प्रदूषण, असामाजिकता, अतिआधुनिकता से वैचारिक बौनत्व का दर्शन होता है। इस कालखंड में भारतीय राजनीति में केंद्रिय सत्तांतर, व्यापार उदारीकरण की नीति, भूमंडलीकरण का बढता प्रभाव, आतंकवाद का बोलबाला, साहित्य में नारी एवं दलित विमर्ष के साथ अन्य विमर्षो का उदय, शिक्षा नीति का चरमराता स्वरूप और बेरोजगारी, गंभीर साम्प्रदायिकता की समस्या, बदलते मानवीय संबध और मूल्यपतन, तकनीकी युग एवं नारी की आत्मनिर्भरता आदि का प्रभाव पद्मा जी के साहित्य पर देखा जा सकता है।

पद्माजी 'लकीर की फकीर' न बनकर उन्होंने बदलते युग की नब्ज को टटोलकर समसामयिक विषयों को वाणी देने का प्रयास किया है। उनके कथासाहित्य में आतंकवाद, विस्थापित विमर्श, साम्प्रदायिकता एवं हिंदू-मुसलमान संबंध, नारी विमर्श, पुरुष विमर्श, सामाजिक साँस्कृतिक चित्र, मानवीय संवेदना, विजेता की दॉसता आदि विषयों का पीटारा देखा जा सकता हैं। विषय वैविध्य उनके लेखन की विशेषता बनी हुई है! विषय की दृष्टि से उनके कथासाहित्य में युगीन संघर्ष की झलक है। जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, परिवारिक, मनो वैज्ञानिक आयाम को युग के रूप में समेटा गया है। जो वर्तमान स्थिति का एक्स-रे पाठकों के सामने रखने का प्रयास करता है। उनकी हर रचना विषय की दृष्टि से अनोखी और अनूठी है। उनके 'अब ना बनेगी देहरी' उपन्यास में स्त्री विमर्ष को अभिव्यक्त किया है। जिसमें रूढिवाद के खिलाफलडती विधवा रेवती के दर्षन होते हैं। 'नौषीन' उपन्यास में कष्मीरी आतंकवाद, विस्थापित विमर्श एवं मुस्लिम समाज की स्थिति का अंकन किया है। 'भटको नहीं धनंजय' में अर्जुन-द्रोपदी के माध्यम से महाभारत की कथा को आधार बनाकर मनोवैज्ञानिक ढंग से वर्तमान विजीत की त्रासदी एवं भटकन को समसामयिक संदर्भो में प्रस्तुत किया गया हैं। 'जम्मू जो कभी शहर था' उपन्यास में पुराने जम्मू शहर की कथा को नायिका सुग्गी के माध्यम से प्रकट करते हुए लोक जीवन का ऐसा ताना बना बुना है कि यह एक सामाजिक एंव सांस्कृतिक दस्तावेज बन गया है। जम्मू शहर को सामाजिक एवं सास्कृतिक व्यक्तित्व प्रदान कर घटनाओं का ऐसा कॅनवास बनाया है कि पाठक चमत्कृत रह जाते हैं और उन्हें अपना शहर याद आने लगता है। 'गोदभरी' तथा 'बू तूँ राजी?' कहानी संग्रह में विभाजन त्रासदी, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, रूढिवाद, मानवीय संबंधों की गहनता, मानवतावाद, नारी विमर्ष एवं समसामयिक विषयों को प्रकट किया गया है। उस प्रकार उनकी रचनाएँ अपने युग का प्रतिनिधित्व करती है और उसमें विषय भिन्नता परिलक्षित होती है।

विषय कोई भी हो मानव और मानवीयता से सरोकार सदैव बरकरार है, जिसके लिए वह वाद मुक्त, धारा मुक्त लेखन के लिए हमेशा प्रस्तुत रही है। इस संदर्भ में उनकी समकालीन लेखिका चंद्रकांता के कथन द्रष्टव्य है, 'पद्मा जी के सृजन के केंद्र में मनुष्य है वाद, विचारधाराएँ वहाँ गौण है। स्मृतियों के संसार को खंगाल वे मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना करती है। इतिहास को वर्तमान का हिस्सा बनाकर पीठ पीछे की रौषनियाँ दिखाती है, ताकि आज के अंधेरों को दूर करने के लिए कोई रास्ता नजर आए। आज के इस उपभोक्तावादी समय में मनुष्य को रोबोट होने से बचाने के लिए वे संवेदना का उत्खनन कर मानवीयता से साक्षात्कार करती है।'[1] पद्मा जी का समस्त कथा साहित्य इस बात का परिचायक है कि वे केवल विषय का स्पर्ष नहीं करती तो वह पूरी षिद्दत से उसे खंगालकर विविध कोणों से उसके सूक्ष्म से सूक्ष्म उद्देष्य से जुडी रहती है। वर्तमान समस्या का अनुभव जीवट के साथ करती हुई समाधानोन्मुख साहित्य सृजन के प्रति आस्थावान दिखायी देती है। वे अपनी अनुभूति और साहित्य के द्वारा निरंतर लडने का संदेश देती है। उनके संदर्भ में डॉ. दिपक नामदेव खिल्लारेजी का कथन सत्य प्रतीत होता है,

'वे जानती है कोई भी जीवन संघर्ष और मुष्किलों से मुक्त नहीं है, यह तो जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, फिर इससे अगर डरे तो जीवन ही समाप्त होगा। उससे अच्छा समझदारी यही है कि निरंतर लडते रहो।'[2] अतः पद्माजी ने साहित्य से निरंतर लडने का मंत्र दिया है! उनका साहित्य उद्देश्य मानव एवं समाज केंद्रित रहा है।

पद्माजी ने अपने कथा साहित्य में जम्मू कश्मीर को चित्रित किया है। वहाँ की पेचीदा और अछूतें स्थितियों को पाठकों के सामने रखा है। इसमें उन्होंने लगभग स्वाधीनता पूर्व से लेकर इक्कसवीं सदी तक के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी एवं युद्ध, पडोसी देश से संबंध, आतंकवाद का विस्फोट, विस्थापित विमर्श, मुस्लिम समाज की स्थिति, साम्प्रदायिकता की समस्या, हिंदू-मुस्लिम सामाजिक सहिष्णुता की दुविधा आदि हाशिए पर रखे जानेवाले मुद्दों को उन्होंने खूब उछाला है। वैसे यह मुद्दें पूर्णतः अछूतें नहीं कहे जा सकते परंतु समय के प्रति सतर्कता, प्रासंगिकता, गंभीर एवं पेचीदा विषयों से उलझना, साम्प्रदायिकता एवं आतंकवाद पर न केवल लेखन तो उसके कारण, व्याप्ति, परिणाम एवं समाधान को प्रस्तुत करना यह एक लेखिका की दृष्टि से अलग थलग प्रयास एवं जुझारु सृजन को सिद्ध करता है! पद्माजी के कथा साहित्य में 'नारी विमर्श' का चित्रण भी पाया जाता है परंतु उन्होंने नारीवाद को केंद्र बनाकर उसे नहीं लिखा है। पद्माजी ने स्त्रीवादी नारे उछाले बिना स्त्री के पक्ष को मजबूती प्रदान की है। रुढियों से लडंनेवाले जर्जर मूल्यों का विरोध करनेवाले दृढ नारी चरित्र दिए हैं। जिनमें 'अब ना बनेंगी देहरी' की रेवती, 'जम्मू जो कभी शहर था' की सुग्गी, 'मिलनी' कहानी की बिष्नो, 'नौषीन' की सकीना ये ऐसी नायिकाएँ है जो समाज को चुनौती देकर विद्रोह का शंख नाद करती है। पद्माजी का यह कथन रुढियों पर कडा प्रहार करता है तथा पुरुष सतात्मक व्यवस्था को सोचने के लिए मजबूर करता है, 'वाह रे, भारतवर्ष! जहाँ स्त्री जिंदा रहने पर विधवा और मरने पर सुहागिन हो जाती है।'[3] यह वाक्य अपने आप में गहरा दर्द छिपाए हुए है इसके भीतर से विधवाओं की त्रासदियों का स्वर फूटता दिखाई देता है। प्रस्तुत कथन उनके नारी विमर्श के सोच को प्रातिनिधिक तौर पर स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। पद्माजी के नारी विमर्श के संदर्भ में कहा जा सकता है, कि उनका नारी विषयक चिंतन रटा-रटाया न होकर अनुभूति प्रधान एवं यथार्थ है। यह बात उनके 'बूंद बावडी' आत्मकथा के द्वारा प्रमाणित हो जाती है! पद्माजी ने भले ही नारी को केंद्र मे रखकर कथा साहित्य न लिखा हो परंतु उनकी रचनाओं में नारी विमर्श का अनायास एवं स्वाभाविक दर्शन होता है और यही बात नारी विमर्ष साहित्यकारों में उनकी अलग पहचान बनाती है।

पद्मा सचदेव के कथा साहित्य का अनुभव क्षेत्र और कल्पना जगत् तथा उनके अभिव्यक्ति का ढंग भी लीक से हटकर है। उनके कई रचनाओं में लोकभाषा, लोकोत्सव, लोकगीत, लोकसंस्कृति, लोकजीवन के रंग गहरे बन गए हैं। डोगरी गीतों, लोरियों ने कथा को मधुर बना दिया है। उनमें जम्मू के पहाडों की भीनी-भीनी खुशबू बिखरी है। उनके कहानी और उपन्यासों पर काव्यात्मकता का प्रभाव देखा जा सकता है! उनकी भाषा परिमार्जित एवं विकसित हुई दिखायी देती है। पद्माजीने उर्दू, फारसी, डोगरी, पंजाबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है। विभिन्न शैलियों एवं षिल्प तकनीक के द्वारा उन्होंने कथा के सूत्रों को पिरोया है। उन्होंने डोगरी चरित्रों को लेखनी के द्वारा अमर बना दिया है, जो अपने आस पास में पाए जा सकते हैं। उनके कथासाहित्य में मानवीय संबंध, जीवन दृष्टि, चेतना दृष्टि, संवेदनषीलता, गहन अनुभूति, काव्यात्मकता और कुछ हद तक आँचलिकता ने ऐसा जामा पहनाया है, कि पाठक उनके रचना संसार में ही विचरण करता रहता है। इस प्रकार पद्माजी ने अपने रचना कौशल से सृजनधारा को किसी निर्धारित चौखट में न रखते हुए उसे अपने अनुसार ढाला है और उनकी यही बात उन्हें निराली बनाती है। विद्वान श्री शिवनाथजी ने उनके कथालेखन की विशेषताओ के संदर्भ में कहा है, कि 'पद्माजी की कहानियों का अनुभव संसार एक संवेदनशील हमदर्द दृष्टि है, नारियों की समस्याओं की गहरी समझ है और उनके अंतर्द्वंद्व, शोषण, आशा आकांक्षाओं का अनूठा दिग्दर्शन है। इनकी भाषा कई स्थानों पर काव्यात्मक हो जाती है। और कहीं कहीं भावुकता का पुट अखराता भी है। परंतु सब मिलकर प्रभावोत्पादकता कम नहीं होती और कहानियों का ताना-बाना, चरित्र-चित्रण, परिप्रेक्ष्य अधिकतर डोगरा विशेष होते हुए भी इसमें सँजोयी अनुभूति की सघनता और व्यापकता की कलात्मक और संवेदनात्मक अभिव्यक्ति इन्हें सार्वभौमिक बना देती है।'[4] अतः पद्माजी का कथासाहित्य कथ्य और षिल्प की दृष्टि से बेजोड है। अपने अनोखे रचना कौषशल के कारण उन्होंने कथासाहित्य में अपना अलग स्थान निर्धारित किया हैं।

निष्कर्षः- पद्माजी सचदेव के कथासाहित्य में विषय वैविध्य, रचनाकर्म, लेखन विशेषता एवं सृजन कौशल में अनोखेपन के दर्शन होते हैं। नारी विमर्श पर अनायास लेखन, पेचीदा एवं गंभीर विषयों की समझ, समसामयिक विषयों पर पकड, गहन अनुभूति, संवेदनशीलता तथा काव्यात्मकता उनके कथासाहित्य के अलग-थलग पहलू है। अतः कथ्य और शिल्प की दृष्टि से पद्मा सचदेव ने कथा साहित्य मे अलग पहचान बनाई हुई है, जो शुक्र तारे की तरह चमक कर अपने अनूठे पन का एहसास दिलाती है।

संदर्भ सूचीः-

1. 'साक्षात्कार' जनवरी 2009, पृ. क्र 08
2. 'बूँ बावडी' (समीक्षा ग्रंथ), डॉ. दीपक नामदेव खिल्लारे, पृष्ठ क्र. 77
3. 'हिंदी साहित्य की कतिपय विषिष्ट महिलाएँ एवं उनकी रचनाएँ' - डॉ. देवकृष्ण मौर्य, पृष्ठ क्र. 166
4. 'गोदभरी' पद्मा सचदेव पृष्ठ क्र. 08

PHALTAN COLLEGE

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

MAH/MUL/0305
ISSN-231

International Peer reviewed Referred Research Journal

विद्यावार्ता®

Issue-37, Vol-11, Jan to March 2021

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2021
Issue 37, Vol-11

Date of Publication
01 March 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

27) पद्मा सचदेव कृत 'जम्मू जो कभी शहर था' उपन्यास में चित्रित पुराने जम्मू का ...
प्रा. श्री. बिचुकले एस.एस. & नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके), जि. सातारा ||102

28) लॉक डाउन के दौरान घेरलू हिंसा में वृद्धि एवं भारतीय संविधान में महिला ...
डॉ. नीलम चौरे & आशुतोष तिवारी, जिला सतना ||106

29) भारत बोध
डॉ. अजय आर. चौरे & आशुतोष तिवारी, जिला सतना (मध्य प्रदेश) ||115

30) संत काव्य का प्रवर्तन एवं प्रवृतियाँ
डॉ. बाबूलाल धनदे, बाड़मेर, राजस्थान ||122

31) हिमवन्त का एक आंचलिक कथाकार : डॉ० विनय कुमार डबराल 'रजनीश'
डॉ० ज्ञान सागर, देवप्रयाग (टिहरी गढ़वाल) ||126

32) मतदान व्यवहार और युवा
गौतम, झाँसी (उ.प्र.) ||130

33) 'अँधेरे का ताला' और उच्च शिक्षा की खामियों की यथार्थ अभिव्यक्ति
डॉ. कमलेश गोगिया, रायपुर (छ.ग.) ||132

34) मालवी लोकगीतों में राष्ट्र प्रेम का अनुशीलन
श्रीमती कंचन कन्नौज & डॉ. रमेश चौहान, उज्जैन ||136

35) प्राचीन भारत में आर्थिक संगठन एवं संस्थाएँ
चन्द्रशेखर कटरे, लामत्ता ||139

36) बच्चन के काव्य में सौन्दर्य अभिव्यक्ति
डॉ० कविता, देवप्रयाग (टि०ग०) उत्तराखण्ड ||141

37) गुरू दादू और शिष्य रज्जब की भक्ति—साधना के अंतर्निहित तत्व
डॉ. निर्मल चक्रधर, जिला—बालाघाट (म०प्र०) ||145

38) इन्दिरा आवास योजना से लाभान्वित लाभार्थियों की आर्थिक स्थिति का ...
कु० नीतू, काशीपुर, (ऊ० सि० नगर) ||150

39) स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग का साहित्य
डॉ. आशा पाण्डेय, दिल्ली ||154

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

27

पद्मा सचदेव कृत 'जम्मू जो कभी शहर था' उपन्यास में चित्रित पुराने जम्मू का समाज जीवन और नए कानून की दस्तक

प्रा. श्री. बिचुकले एस.एस.
हिंदी विभागाध्यक्ष

नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके)
महाविद्यालय, फलटण, जि. सातारा

****

आज हम समाज के बगैरे जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। समाज ही मनुष्य के अंतरबाह्य क्रियाकलाप की आधारशीला है। डॉ. सविता चौधरी का कथन समाज और विकास प्रक्रिया के संबंध पर प्रकाश डालता है—"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और 'जिज्ञासा' मानव जीव की मूल प्रवृत्ति। प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष की खोज करके मानव जीवन प्रगति की ओर अग्रसर है, जिसका आधार समाज है। मानव जीवन के प्रारंभ से ही विकास की प्रक्रिया के साथ—साथ सामाजिक समूह स्पष्ट रूप से निर्मित हुए हैं।" [१] अतः यह कहा जा सकता है कि, समाज की डोर पकडकर ही वह विकास के नये—नये सोपान पार कर रहा है। व्यक्ति के समूह को समाज माना जाता है। पर क्या केवल समूह या भीड़ को समाज कहा जा सकता है? समाज में व्यक्ति के अंतरक्रिया तथा ससबंधों को व्यापक धरातल पर स्वीकृत किया गया है। सामाजिकता के तत्व इन्ही अंतरक्रियाओं से निर्माण हुए है। हर काल में सामाजिकता के तत्व एक समान नहीं रहे है, क्योंकि मूल्यों की स्थिति भी एक समान नहीं रही हैं। कभी मूल्यों का विघटन हुआ तो कभी पुराने मूल्यों के स्थान पर नए मूल्यं स्थापित हो गये। जिससे हर काल की सामाजिकता में भी बदलाव आता गया है। समाज का प्रतिबिंब साहित्य में दिखाई देता है अतःसाहित्य में भी समाज जीवन के विविध आयाम दिखायी देते हैं। समाज जीवन के विविध आयाम एवं गतिविधियों को अभिव्यक्त करने के लिए बड़े कैनवास की आवश्यकता थी और उपन्यास विधा बिल्कुल इसके पूरक थी। इसलिए उपन्यास सामाजिकता के सभी पहलुओं को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बना हुआ है। कभी वो अतित के पन्नो को पलटकर सामाजिकता कों परिभाषित कर उसका मूल्यांकन करता है, तो कभी वर्तमानता को टटोलकर बेहतर भविष्य की ओर संकेत करता है। अपनी इस उपयोगिता के कारण उपन्यास समाज मूल्यांकन एवं दिग्दर्शन का साधन बना हुआ है। इसीलिए पाठक, साहित्यकार एवं समीक्षकों का इसी विधा कें प्रति रुझान रहा है। बात व्यक्तिगत जीवन की हो या सामूहिक उसके अभिव्यक्ति में सबसे मोटा हिस्सा समाज का है और उसी के पूर्ण रूप को उपन्यास उजागर करता है। डॉ. मधु धवन जी ने उपन्यास के संदर्भ में कहा है कि, "उपन्यास साहित्य का वह अंग है, जो गद्य के माध्यम से संपूर्ण चित्र mi fLFkr djrk g& जीवन के बहुमुखी औपन्यासिक दिग्दर्शन का यह महत्त्वपूर्ण माध्यम है। वह जीवन के किसी एक अंग की, एक घटना की, एक टुकडे की प्रतिक्रिया का अंकन नहीं करता, प्रत्युत उसे समग्रता से प्रस्तुत करता है।"[२]

हिंदी एवं डोगरी की प्रसिद्ध लेखिका पद्मा सचदेव जी जम्मू की रहनेवाली है। इस कारण उनकी रचनाओं में जम्मू के सामाजिक सांस्कृतिक, आँचलिक तत्व पाए जाते हैं। जम्मू के जीवन की झाँकी को उन्होंने साहित्य में व्यक्त किया है परंतु साहित्य से भी राजनीति की गलीयारों में जम्मू का नाम अधिक उछाला जाता है। जम्मू—कश्मीर का विषय तो आजादी के पहले से ही केंद्र में था। परंतु '३७०' एवं '३५—अ' कलम हटाने से उस ओर पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ है। निश्चित ही इन स्थितियों का जम्मू के समाज जीवन पर बड़ा परिणाम दिखायी देगा। कभी जम्मू एक बहुत बडे राज्य का हिस्सा था, आज वह केंद्रशासित प्रदेश बना है। कश्मीर का दामन थामे जम्मू भारत का अभिमान बना है परंतु

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

शांति—सुव्यवस्था की दृष्टि से वह हत्भाग्य ही कहा जाएगा। जम्मू—कश्मीर ने क्या नहीं देखा? स्वर्ग और नर्क की मंजरो से गुजर कर उसने उदारता, मानवता, संवेदनशीलता, तठस्थता, कठोरता, निर्दयता, कायरता, स्वार्थांधता, धर्मांधता, हिंसाचार, जानवरता एवं विकृतता के बर्बर रुप को खुली आँखों से देखा है और न जाने क्या देखना बाकी है। जब कोई प्रदेश अंतर्बाहय रूप से बदल जाता है तो उसका अतित हमे पुकार कर अपनी दाँसता सुनाता है। मीर का यह शेर इसी बात को दोहराता है और शहर के प्रति के जज़बात को बयान करता है —

"दिल्ली जो एक शहर या आलम में इन्तिखाब,
हम रहने वाले है उसी उजडे दयार के।" ३

जम्मू के बदलते रूप को आज हम देख रहे है। परंतु लेखिका पद्मा सचदेव जी ने 'जम्मू जो कभी शहर था' इस उपन्यास में जम्मू के समाज जीवन की यादों को सहेज कर रखा है। उनका यह उपन्यास साहित्यिक एवं ऐतिहातिक दोनों दृष्टियों से बहुत बडी उपलब्धि है। प्रस्तुत उपन्यास लोक जीवन को समर्पित है। उपन्यास के पात्र तो केवल कथा वस्तु को गति देते है वरण 'लोक' के विभिन्न तत्व संस्कृति, भाषा, गीत, त्योहार, रंग, नृत्य, रिवाज, कला 'के तानबाने से बनी पुराने जम्मू शहर की सामाजिकता ही इसकी बुनियाद है। डॉ. खिल्लारे जी के अनुसार, "जम्मू अंचल की लोक—संस्कृति और लोकरंगों के रंगीन से बुनी यह जम्मू की काया है, जिसमें कथा वाचिका 'सुग्गी नाइन' के माध्यम से पद्मा अपनी विरासतों को खंगालती हैं। इस उपन्यास को डोंगरी लोकजीवन का सांस्कृतिक दस्तावेज कह सकते हैं। रिश्तों की मिठास, संबंधों का अनूठापन और मानवीय संवेदना के अद्भूत प्रसंगो से इस उपन्यास का महत्व और बढ जात है।"४ वस्तुतः पद्मा सचदेव जी द्वारा लिखित 'जम्मू जो कभी शहर था' यह उपन्यास आँचलिक उपन्यासों की कोटि में आता है, जिसमें सामाजिकता के सभी पहलू उजागर हुए है। उपन्यास के आरंभ में ही लेखिका ने उपन्यास लेखन की प्रेरणा को स्पष्ट किया है। तीन बातें लेखिका को बेचैन कर रही थी। १. जम्मू बाहर ब्याही लड़कियाँ पुराने कानून के तहत दो गज जमीन तक नहीं खरीद सकती यह खलल उनके मन में थी। २. सुग्गी नाइन किस प्रकार पूरे शहर को अपने उँगलियों पर नचा रही थी यह बताना। ३. पुराने शहर की यादे उन्हें सता रही थी। इन्हीं तीन बातों ने उन्हे उपन्यास लिखने के लिए मजबूर किया। लेखिका ने इसमें २० जनवरी १९८९ के आतंकी हमले के परिप्रेक्ष्य में घटित घटनाएँ, प्रसंग, यादें जम्मू को केंद्र में रखकर सुग्गी नाइन की जुबान से हमारे सामने रखी है। आतंकी विस्फोट के कुछ वर्ष पूर्व की जम्मू के समाज जीवन की सुंदर झाँकी का सजीव वर्णन लेखिका ने इसमें किया है। इसमें उन दिनों की बात है जब जम्मू एक शहर के रूप में माना जाता था।

यह एक आँचलिक उपन्यास होने से के कारण सामाजिकता के तत्व इसमें घुल—मिल गए है। डोगरा जीवन शैली, रीतिरिवाज, खान—पान, धार्मिक विधि, जातियता, अंधश्रद्धा, शिक्षा, परिवार, पहेराव, गीत, भक्ति, बोलचाल के ढंग आदि सभी को इसमें स्थान मिला हैं। लेखिका ने सुग्गी नाइन को मुहरा बनाकर जम्मू शहर का चेहरा पाठको के सामने आईने की तरह साफ कर दिया है। अन्य गाँव, कस्बे, शहर की तरह जम्मू में भी जातियता को देखा जा सकता है। इनमें जातिगत अभिमान तो है परंतु मनमुटाव नहीं। सभी एक ही अहाते में रहकर एक दूसरे का हाथ बटाते हैं। इनमें जातिगत विशेषताएँ पायी जाता है, सामान्यतः जिन्हे गुण—दोष कह सकते हैं। नाई जाति का सूक्ष्म चित्रन इसमें है। नाइयों के कामों की गिनती नहीं की जा सकती शादी—ब्याह, मुंडन—श्राद्ध, मातम—गमी सभी की खबर, देना उबटन लगाना, दुल्हन को सजाना, शादी तय करना, गाना बजाना, दाई का काम करना आदि सभी प्रकार के काम करने पडते हैं। इस प्रकार शहर की नब्ज इनके हात में थी। नाइनों ने यजमानों के घर भी बाँट लिए थे। ये नाईन बातूनी तथा जुबान की बड़ी तेज थी। ये अपने घर में कम यजमानों के घर अधिक पायी जाती और रोटी पर अधिकार जमाती परंतु काम में इनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। इन्हें सभी रस्मों रिवाज तथा दुनियादारी की खबर है। ये गाँली बिना बात नहीं करती, झगडालू और ईर्षालु है। पर बडी हिम्मतवाली है, सभी की

संकटमोचक बनती है। खबरें इनके जीवन जीने का टॉनीक है। ये हर घर में प्रवेश पाती है परंतु घर का हर भेद इनके सीने में दफन है। ये हर भेद की कीमत जानती है। इस संदर्भ में सुग्गी नाइन के कथन देखिए, "मै नाई की बेटी हूँ। हमे सब सुनकर पेट के कुएँ में डाल देना होता है घर--घर का गुबार रहता है, हमारे पेट में। भेद खुल जाए तो कइयों के मुँह काले हो जाएँ।"[5] नाइयों के साथ अन्य जातियों की प्रवृत्ति पर भी प्रकाश डाला है जैसे पंडित का श्लोक पठन--पाठन, छुआछूत मानना, ग्वालों की धनिकता एवं झगडालू वृत्ति, सुनार ईमानदारी से गहने तो लौटा देता है परंतु गहने बनवाते वक्त कुछ हाथ मारने से बांज नहीं आता। जातियता के कई रंग उपन्यास में उभर कर आए हैं।

चाहे जम्मू हो या विदेश नारी शोषण के अभिशाप से मुक्त नहीं हो पायी है। नारी--पुरुष के प्रति किए जानेवाले भेदभाव को पद्मा जी ने इस उपन्यास में सच्चाई के साथ उजागर किया है। जन्मू में लडकियों की शिक्षा केवल गिनती के लिए होती है। 'तुम लडकी हो' इस रुढिवाद में जकड कर उसे शोषण के लिए बाध्य किया जाता है। लगातार लडकियों को जन्म देना यहाँ संगीन अपराध माना जाता है । पितृसत्ताक व्यवस्था में सास ही बहू का (एक स्त्री ही दूसरे स्त्री का) शोषण करते हुए उसे शारीरिक--मानसिक यातनाएँ देती है यह कितनी विडंबना की बात है । पुरुषों द्वारा किए गए जबरन अत्याचार की घटनाओं का भी उपन्यास में जिक्र आया है । सुग्गी नाइन द्वारा बताई गयी यह घटना शोषन और अमानवता की चरमसीमा है। "मेरे गाँव में मेघो की लडकी को किसी ने घेर लिया था । ऐसा ही जुल्म उसके साथ भी हुआ। जब एक दो महीने के बाद पता चला, दिन चढ गए है, तो अपनी ही माँ ने कपडा धोनेवाले डण्डे से मार--मारकर उसको अध मरी कर दिया। चलने फिरने लायक होते ही लडकी कुएँ मे डुबकर मर गयी। वो कुआँ गाँव में सबसे मीठे पानी का कुआँ था सारा गाँव उसी से पानी पीता था। उस राँड ने ये भी नहीं सोचा सामने ही तो पहाडी थी, जान तो वहाँ से कूदकर भी दे सकती थी। जानती हूँ, तब गाँव के लोगो को उसके मरने का ख्याल नहीं आया, सिर्फ कुएँ के मीठे पानी का ख्याल आया। ये है औरतों की जिंदगी।"[6] हर स्थिति में नारी पर ही लाँछन लगाया जाता है। पुरुष की नजर में नारी की जिंदगी क्या है इसी बात को सुग्गी ने इस घटना के द्वारा स्पष्ट किया है। स्त्रियों को ही बदनामी के आग में झुलसकर अपने आस्तित्व को मिटाना पडता है क्या यही है नारी--पुरुष समानता ? पुरुष तो अत्याचार करके तमाशबीन बन जाता है। बदनामी की भयावहता उस पर आँच तक नहीं आने देती और फिर पुरुष वासना की आग में मासूम जिंदगियाँ कुर्बान हो जाती है। जन्मू के कई घरों की यही त्रासदी है जिसे वे कह भी नहीं पाते और खून के आँसू पीते रहते हैं। लाजू के प्रसंग में जान तो बच गई पर न्याय के लिए लडने की कोई हिम्मत नहीं जुटा पायी। सुग्गी शहर की शेरनी है पर बदनामी के भय से लाजो की लाज लूट जाने पर भी दिन गिनती रही और सब्र का दामन थामकर समय रहते ही लाजो की शादी दवानू से करवा देती है। तो बलीराम मास्टर को कानून का भय दिखाकर उसके रूपवती पत्नी भागो को उसके कैदखाने से आजादी दिलाती है। नारी की यह अवस्था भारतीय समाज के नारी स्थिति को प्रातिनिधिक रुप में व्यक्त करता है।

उपन्यास मे जातिगत अहंभाव में डूबे लोग, सास के बहू को पीटने के तरीके तथा काबू में रखने के कारनामें, गहनों का लालच, गरीब परंतु मेहनतकश संतुष्ठ लोग, खानपान के नुस्खे तथा देसी चाय के चुस्के, शादी ब्याह के रस्मों रिवाज, साली से छेडछाड, संयुक्त परिवार, व्रत उपवास एवं पूजा, अंधश्रध्दा में जकडी स्त्रियाँ, धार्मिकता, विधवाओं का जीवन, पनाहगीरों की समस्याएँ, त्यौहार -- पर्व का जोश, उच्च वर्ग की नकल करनेवालें, राजाओं के जीवन की बातें एवं आकर्षण, समधियों के नाजूक रिश्तें, मित्रता की मिठास, स्त्रियाँ की ईर्षालु एवं झगडालू वृत्ति, शराब के नशे में चूर लापरवाह लोग, प्यारभरी गालियाँ, भोलेभाले निरीह लोग सामाजिकता के सभी तत्व इसमें अंकित हुए है। प्रस्तुत उपन्यास में डोगरे लोकजीवन को प्रकट किया है। जिसमें से डोगरी के लोक गीतों की भीनी--भीनी खुशबू मन को अतित की याद दिलाती है जैसे --

"टल्लू फटे सी लैना है
अम्बर फट्टै किया सीना
खसम मरै जी लैना हो
यार मरै कीयाँ जीना?"

("कपडा फटें तो सी लूँ आसमान फटे तो कैसे सियूँ, खसम मरे तो जैसे तैसे जी लूँगी, यार मरे तो कैसे जिऊँगी ?")[७] सुग्गी और सोमा इस उपन्यास के दो मुख्य पात्र है। दोनों के मैत्रभाव का अनूठा वर्णन उपन्यास में आया है। जिनके संभाषण से जम्मू तथा दुनिया भरी की घटनाओं पर प्रकाश पडता हैं। किसके घर में भैस ने दूध नहीं दिया यहाँ यक से नेपाल में वजीरनी जी की रानो के कैसे ठाठ है यहाँ तक सभी बातों पर चर्चाएँ होती है। सोमा का घर जम्मू के सामाजिक गतिविधियों का आकाशवाणी केंद्र है और निवेदक है सुग्गी नाइन। जिसके द्वारा दंगे फसाद से वापस आये मास्टर की कथा, वजीरनी के जीवन के ठाठ बाँट शादी, रस्मे, सौंदर्य, उबटन, संसारो की पारिवारिक समस्या, राजा हरिसिंह के सियासी किस्से, सुग्गी का बक्शी साहब से घर वापस पाना, लाजो पर अत्याचार, नेपाल का जीवन, सुग्गी की सास तथा पति की यादें, दवानू की आवारगी, कश्मीर से पंडीतों को भगाया जाना, जम्मू के समाज जीवन से रुबरु करवाया है। जम्मू की बोली, जीवन शैली, धर्म, पूजा, नदी, इतिहास, परिवार, अस्मिता, रिश्तें आदि सभी का जीता जागता चित्रण उपर्युक्त घटनाओं के द्वारा व्यक्त किया गया हैं।

जम्मू के सामाजिक परिवेश के बदलाव का कारण पनाहगीर ही कहा जा सकता है। कश्मीर से आए विस्थापित जम्मू में शरण पा गए और उसका चेहरा ही बदल गया। यूँ तो ये बदलाव रियासत, खान--पान, जीवन शैली, भाषा बोली आदि के रूप में धीरे--धीरे हो रहा था परंतु २० जनवरी १९८९ की रात ने इसे शतप्रतिशत बदल दिया। बडी भयंकर रात थी भागम भाग जारी थी, आग धधक रही थी, हिंसाचार का साम्राज्य था, हैवानियत उपने उफन पर थी केवल यही नारे गूंज रहे थे —

"कश्मीरी पंडितो, भाग जाओ,
हमे आजादी चाहिए
हमे कश्मीर चाहिए
पंडितो के बगैर पंडिताइनो के साथ
पाकिस्तान से रिश्ता क्या
लाइलाहि इल्लिलाह।"[८]

लाभों पर दृष्टि गढाए मनुष्य घर छोड़ता है परंतु मातृभूमि छोडने की इतनी बडी मजबूरी विश्व में कहीं देखी न होगी। तीन लाख कश्मीरी पंडित जम्मू में शरण पा गए थे, पूरा शहर एक शिवीर स्थल बन गया था। विस्थापितों की पीड़ा और समस्यों का कोई अंत न था, उनकी दुनिया उजड़ गई थी। मानव ने विकृत रूप धारण किया था पीड़ित लोग खून के आँसू रो रहे थे। सरकार राहत कार्य में जूटी थी, इधर पूरा जम्मू दयानत बरसा रहा था, विस्थापितों का हौसला बढा रहा था उनकी सहायता कर रहा था। विस्थापितों ने भी हिम्मत न हारी थी जिसको जो काम मिला वो करता गया कोई धार्मिक कार्य, कोई शिक्षा, कोई विक्रेता, कोई दूकानदार, कोई मजदूर तो कोई एजन्ट बन गया। पूरा कश्मीर जम्मू में समा गया। मानवता की इससे बडी मिसाल क्या हो सकती है। पर इससे जम्मू के जनजीवन पर जो भार पड़ा उसके परिणाम आगे भुगतने पडे और कई समस्याएँ निर्माण हुई। विस्थापितों के कारण जम्मू के लोकजीवन पर जो प्रभाव पड़ा उसका यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया गया है। जम्मू की आबादी बढ़ती गयी। जम्मू धीरे--धीरे कूडाखाना हो गया। जम्मू अब शहर नहीं रहा तो प्रदेश बन गया। समय की करवट बदलते ही जम्मू शहर का समाज जीवन इतिहास बन गया।

निष्कर्ष : पद्मा सचदेव जी द्वारा लिखित 'जम्मू जो कभी शहर था' उपन्यास समाज जीवन की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसमें सामाजिकता के विविध आयाम प्रस्तुत हुए हैं। ऐसा लगाता है जैसे भारतीय समाज का प्रतिनिधिक चित्र ही इसमें रेखांकित हुआ है। आज नए कानून के तहत जम्मू प्रदेश एक नये मुकाम पर आकार खड़ा हुआ है, नए रास्ते तलाश रहा है। आशा करते है वह राजमार्ग पर चलकर अपने अस्तित्व को सौहार्दयुक्त नए रूप में प्राप्त करे। साथ ही जम्मू का समाज जीवन भी अपनी विरासत को नवीन रूप में दोहराए।

N.S. COLLEGE PHALTAN

"The Higher Education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence".

-Rabindranath Tagore.

Education is recognized as one of the life of the critical elements of the national development effort and higher education in particular is of vital importance for the nation. Indian higher education landscape is changing rapidly. Demographic bulge, expanding school education and rising aspirations has put considerable pressure for expansion of higher education due to the country's rapid economic growth, rising incomes outward orientation and growing optimism.

The role of higher education in promoting and facilitating the flow of knowledge and learning to society is universally recognized. Higher education institution through their contact with student volunteers, external organizations acts as valuable repositories of talent, creativity and enthusiasm. It helps in building trust and mutual understanding by engaging public with its activities.

Edit By

Dr. Gholap Bapu Ganpat

Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515

(Maharashtra, India)

Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126

(Maharashtra) Mob.09850203295

E-mail: vidyawarta@gmail.com

www.vidyawarta.com

Indexed

ISSN-2319 9318

IMPACT FACTOR 7.940 iijif

Shriram Education Society's

Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College

Phaltan Dist. Satara

One day
Interdisciplinary
International E-Conference on

THE CHANGING IDEOLOGY

& MINDSET OF MODERN TIMES

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

Guest Editor
Dr. Devidas Gejage

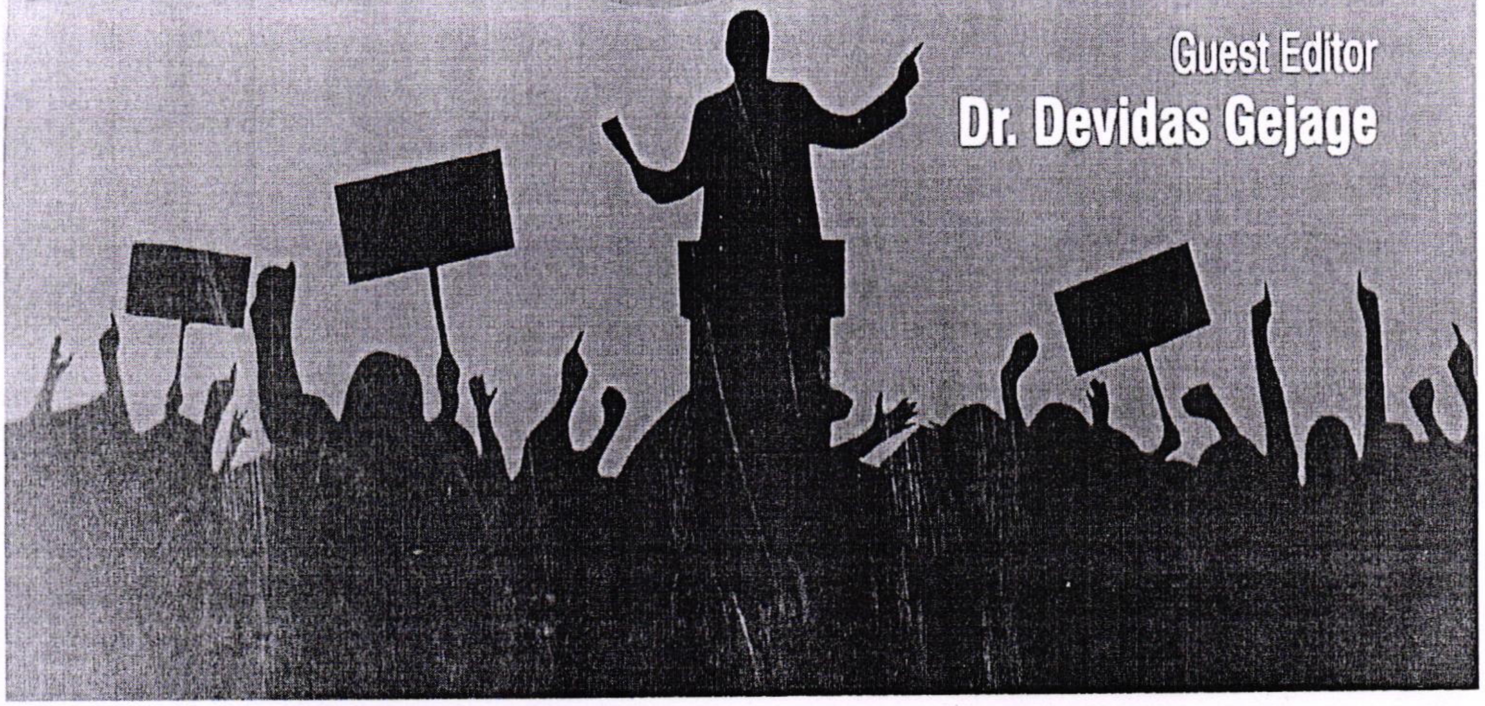

Scanned with OKEN Scanne

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-02

Date of Publication
01 Oct. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) महिला हिंसाचाराचे स्वरूप व उपाय
प्रा. कोळेकर वनिता अशोक, फलटण ||101

28) Covid– १९ मुळे मानवाच्या जीवनावर येणाऱ्या मानसिक समस्या व मानसिक ...
डॉ दिपक रामचंद्र राऊत, फलटण ||104

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

कोळेकर मॅडम

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

असे असते की, पुढीलपैकी योग्य विधान कोणते? तसेच तीन विधाने दिलेली असतात. आणि पर्यायांमध्ये विचारलेले असते की, १) विधान (अ) बरोबर, ब) चूकीचे २) दोन्हीही विधान बरोबर ३) दोन्हीही विधाने चूकीचे ४) विधान अ चूक ब बरोबर अशा वेळेस आपणांस माहिती असूनही आपल्याला वाक्यांच्या रचनेमुळे गोंधळ उडतो. आणि शेवटी उत्तर चूकते. तर्कशास्त्राच्या काही पद्धतींचा अवलंब केल्याने अशा प्रश्नांची विद्यार्थ्यांना अचूक उत्तरे मिळतात. 'वितरणाचा नियमा, 'अनुमानाचे नियम अशा नियमांच्या आधाराने स्पर्धापरीक्षां मधील जटील व अवघड वाटणाऱ्या विषयांची आपण तर्कशास्त्राच्या मदतीने व अभ्यासाने अभ्यासपूर्व रितीने प्रश्नांची सोडवणूक करुन घेऊन शकतो. व स्पर्धा परीक्षांमध्ये या विषयांची निवड करून घेऊन आपण स्पर्धा परीक्षांमध्ये यश मिळवू शकतो तसे आदर्शात्मक, नैतिक जिवन जगू यात शंका वाटत नाही.

❑❑❑

27

महिला हिंसाचाराचे स्वरूप व उपाय

प्रा. कोळेकर वनिता अशोक
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय फलटण

****

प्रस्तावना—

भारतीय समाज हा स्त्रियांचा सन्मान करणारा समाज आहे. आपल्या समजामध्ये आज स्त्रीला सन्मान दिला जातो की नाही हा ज्वलंत पडणारा प्रश्न आहे. कारण आज समाजामध्ये स्त्रीला जे स्थान दयायला हवे ते स्थान मिळत नाही. कारण समाजाचा बदलेला स्त्रीकडे पाहण्याचा दृष्टीकोण आज आपण पाहत आहोत स्त्री आज वैयक्तिक रित्या स्वातंर्त्य आहे का? सर्व कायदे स्त्रीच्या दृष्टीने योग्य आहेत का? हाही स्त्री जातीला पडणारा प्रश्न आहे.

कोणी म्हणतो स्त्री ही पुरुष जातीचा मूलाधार आहे तर कोणी म्हणतात नारी ही काली, सिता, दुर्गा, सावित्रि यांची रुपे आहेत. पण आज या सध्याच्या जगामध्ये स्त्रीला योग्य तो न्याय मिळत असतो असे नाही.

आज सध्याच्या घडामोडीमध्ये आपण जर वर्तमानपत्रे पाहिली तर प्रत्येक वर्तमानमध्ये महिलांवर होणाऱ्या अत्याचाराची एक तरी बातमी असते. विचार केला तर महिला/स्त्रीया आज कोणत्या बाजूने सुरक्षित नाहीत हेही आपल्याला दिसून येते.

महिला हिंसाचार—

समाजामध्ये महिलांवर अनेक प्रकारच्या स्वरुपात अन्याय होत असतो. कधी स्त्री भृणहत्या तर कधी जाळपोळ, मानसिक व शारीरिक छळाव्दारे अनिष्ट रुढींना स्त्रीयांना सामोरे जावे लागते.

कधी कुटुंबाच्या विविध व्यक्तीच्या माध्यमातून तर कधी समाजा मधील वाईट प्रवृत्तीच्या नराधमांकडून

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

स्त्रीयांवर अत्याचार होत असतो.

आपण केवळ एक स्त्री असल्यामुळे बलात्कार स्त्री अर्भक हत्या, स्त्री जननेंद्रियाचे विच्छेदन अशा गुन्हयांना सामोरे जावे लागते. या सर्व कारणांचा संबंध समाजातील स्त्री लैंगिकतेच्या संरचनेशी आणि सामाजिक भूमिकेशी संबंधित आहेत.

महिलांवर होणाऱ्या हिंसाचारमध्ये अनेक प्रकारच्या कुप्रथांचाही समावेश होत असतो. भारतामध्ये काही भागांमध्ये सती प्रथा आढळून येते थोडक्यात सतीप्रथा आपल्या मेलेल्या पतीच्या चितेमध्ये त्याच्या पत्नीने आपल्या जीवनाचा त्याग करणे होय पण ही प्रथा खूप अमानवी आहे. त्यामुळे स्त्रीयांवर होणारे अन्यायध हिंसाचार वाढत गेले. कायदा करूनही काही भागामध्ये हे प्रकार चालतात. तसेच लहान वयात मुलींचा बालविवाह केला जातो. बालविवाह प्रतिबंधक अधिनियमाने विवाहाचे किमान वय १८ वर्षे केले आहे. तरीही काही भागात बालविवाह केला जातो.

महिला हिंसाचार स्वरूप—

महिलांविरोधी होणारा हिंसाचार हा काही प्रमाणात लिंगभाव संबंधाचा परिणाम आहे. ज्यामध्ये असे गृहित धरले जाते की, पुरूषांचे स्थान महिलांच्या तुलनेत अधिक उच्चतम आहे. समाजामध्ये महिलांना दुय्यम स्थान आहे. महिलांवरील होणाऱ्या हिंसाचारामध्ये शारीरिक हल्ला उदा— जाळणे, फाशी देणे, लैगिक अत्याचार, बलात्कार इ.

महिलांना कौटुंबिक हिंसाचार, हुंडा बळी आणि सती अशा वाईट प्रवृत्तीना सामोरे जावे लागते. या घटनांमुळे स्त्रीयांकडे फक्त एक उपभोग्य वस्तू म्हणून पाहीले जाते. तसेच काही मुलींना आपल्या गरिबीमुळे आणि कुटुंबाच्या आर्थिक हलाखीमुळे वाईट प्रवृत्तीचा आधार घेवून आपल्या कुटुंबाचा निर्वाह करावा लागतो. त्यामध्ये वैश्याव्यवसायचा समावेश होतो. आज देशामध्ये अनैतिक व्यापार प्रतिबंध अधिनियम अस्तित्वात असूनदेखील वैश्याव्यवसाय हा मोठ्या प्रमाणात संघटीत गुन्हा कार्यरत आहे. यामध्ये ग्रामीण भागातील महिला व मुली सहतेने वैश्याव्यवसायाच्या रॅकेटमध्ये आढळतात.

यामध्ये याचाच एक प्रकार म्हणून देवदासी प्रथा येते. या प्रथेनुसार मुलीला देवाच्या सेवेखाली वाहीले जाते. जर विचार केला तर महिलांचा हिंसाचारामध्ये समाजातील विविध घटकांकडून विविध माध्यमातून महिला हिंसाचार आपणास पाहण्यास मिळतो.

महिला हिंसाचारविरोधी उपाय योजना—

१. महिला सक्षमीकरण—

महिलांच्या मानवी हक्कांबाबत अनेक आंतरराष्ट्रीय परिषदा होऊनही पुरुषांच्या तुलनेत महिलांची स्थिती सुधारलेली नाही. महिला या जास्त प्रमाणात कौटुंबिक हिंसाचाराला बळी पडतात. त्या साठी महिलांचे सक्षमीकरण होणे गरजेचे आहे.

स्त्रियांची आपल्या प्रजोत्पादनावर नियंत्रण ठेवण्याची क्षमता असणे हे महिलांच्या सक्षमीकरणाचे आणि समतेचे मूलभूत तत्व आहे. महिला आणि पुरूषांना जीवनाच्या सर्व क्षेत्रामध्ये समान संधी स्त्री आणि पुरूषांमध्ये समानता असणे हा महिलांच्या सक्षमीकरणाचा महत्वाचा भाग आहे.

२. महिला परिषद—

संयुक्त राष्ट्रांनी महिलांबाबतच्या चार जागतिक परिषदाचे आयोजन केले आहे. या परिषदा पुढील ठिकाणी आयोजित झाल्या.

१. मेक्सिको परिषद —१९७५
२. कोपेनहेगेन परिषद— १९८०
३. नैरोबी परिषद —१९८५
४. बिजींग परिषद — १९९५

१९७५ हे वर्ष आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष म्हणून आयोजित केले.

३. न्यायालय आणि महिला संरक्षण —

न्यायालयाने बदलत्या नव्या सामाजिक आर्थिक स्थितीमध्ये महिलांना चांगल्या प्रकारे न्याय देण्यासाठी आपल्या विवेकाधीन अधिकारांचा अवलंब करायला सुरूवात केली. यासाठी आंतरराष्ट्रीय परिषद आणि करार याचा आधार घेतला गेला.

४. कौटुंबिक हिंसाचार संरक्षण कायदा २००५

पतीच्या किंवा नातेवाईकांकडून होणाऱ्या हिंसाचारापासून संरक्षण पुरवतो. या कायदयानुसार कौटुंबिक हिंसाचारमध्ये प्रत्यक्ष छळ करणे, धमकी देणे इत्यादी

PHALTAN N.S.(B) COLLEGE

चा समावेश होतो.

५. हुंडा प्रतिबंधक कायदा १९६१

समाजामध्ये लग्न करताना वर पक्ष हा वधू पक्षांकडून काही रक्कम, सोने या स्वरुपात हुंडा घेतात. जर ही रक्कम मुलीला योग्य वेळेमध्ये नाही दिली तर त्या नववधूला विविध मार्गाचा अवलंब करून तिचा मानसिक, शारीरिक छळ केला जातो. त्यामुळे अनेक मुलींनी प्राण गमावले. या वाईट प्रवृत्तीला आळा घालण्यासाठी भारतीय घटनेने हुंडा प्रतिबंधक कायदा १९६१ अमलात आणला. आणि समाजातील हुंडा बळी प्रथेला आळा घातला.

६. भारतीय राज्यघटना आणि महिलांचे संरक्षण—

लिंग समातेचे तत्व भारतीय राज्यघटनेच्या सरनामा, मूलभूत हक्क, मूलभूत कर्तव्य आणि मार्गदर्शक तत्व यामध्ये समावेश करण्यात आले आहे. भारतीय घटनेने स्त्रियांना मतदाना चा ही अधिकार मिळवून दिला आहे.

महिला हिंसाचार— कायदा, यश, परिणाम व योजना

महिलांवर होणाऱ्या अन्यायावर वाचा फोडण्यासाठी भारतीय घटनेने कायदे करून महिलांना न्याय मिळवून देण्याचे कार्य केले. समाजातील अनेक नववधू हुंडा या अनिष्ठ प्रथेला बळी पडतात. यामुळे अनेक मुलींना विविध मार्गाने त्रास देवून त्यांची हत्या केली जाते. या प्रथेला आळा घालण्यासाठी घटनेने १९६१ मध्ये हुंडा प्रतिबंधक कायदा मंजूर केला. त्यामुळे या अनिष्ट प्रथेला विरोध होवू लागला. जरी हा कायदा मंजूर झाला असला तरी समाजामध्ये ही प्रथा काही भागांमध्ये सुरूच आहे.

तसेच स्त्रियांवरील होणाऱ्या शारीरिक मानसिक अत्याचाराला बंदी घालण्यासाठी २००५ मध्ये महिला कौटुंबिक कायदा हिंसाचार कायदा समंत करण्यात आला. त्यामुळे महिलांवर होणाऱ्या अत्याचाराचे प्रमाण कमी झाले, तरीही देशाच्या काही भागामध्ये हा प्रकार घडलेला आढळून येतो.

स्त्रीभृणहत्या हा एक वाईट प्रकारचा गुन्हा आहे. मुलांच्या हव्यासापोटी मुलींची गर्भातच हत्या केली जाते. त्यामुळे आज देशामध्ये १००० मुलांमागे ८०० मुली एवढेच प्रमाण राहीले आहे. मुलींच्या जन्मदराचे प्रमाण कमी झाले आहे. त्यामुळे अशी परिस्थिती निर्माण झाली की, मुलांना लग्नासाठी मुलींच मिळत नाही. यासाठी मुलींचा जन्मदर वाढावा म्हणून शासनाने विविध योजना राबविल्या आहेत.

उदा— १. लेक वाचवा ही योजना सुरू करून मुलींची भृणहत्या थांबवली जाते.

२. बेटी बचाओ, बेटी पढाओ या योजनेद्वारे मुलींच्या शिक्षणाला प्रोत्साहन दिले जाते.

काही मुली देवाच्या नावाखाली सोडल्या जातात. देवाची सेवा करणे हे त्याच्या जीवनाचे कार्य समजून त्यांना आयुष्यभर देवाची दासी म्हणून राहावे लागते. या अनिष्ट प्रथेला आळा घालण्यासाठी शासनाने प्रयत्न करून यावर बंदी घातली. अशा प्रकारे आपण स्त्रियांवरील हिंसाचार कितीही कमी करण्याचा प्रयत्न केला तरी तो कमी होणे अशक्यच आहे. यासर्वाला कारणीभूत ठरत आहे तो समाजाचा स्त्री जातीकडे बघण्याचा दृष्टीकोन जर हा दृष्टिकोन बदलला तरच समाजातील महिलांवरील अत्याचार कमी होईल.

समारोप—

आज आपण ह्यघ शतकामध्ये जीवन जगत आहोत. २१ वे शतक म्हणजेच आपल्या बदलाचे शतक म्हणून आपण ओळखतो. कारण या शतकामध्ये अनेक क्षेत्रामध्ये आणि विचारांमध्ये नवनवीन बदल घडून आले. पण याला अपवाद म्हणून स्त्रियांची प्रगती झाली. पण ती ठराविक बाबतीतच झाली

स्त्रीला पूर्णपणे स्वांतंत्र मिळाले नाही. अजूनही स्त्री समाजामध्ये दुय्यमच समजले जाते. तिला नेहमी खालच्या दर्जाची वागणूक दिली जाते. याला कारणीभूत ठरलेली आपली पुरूषप्रधान संस्कृती आहे. या पुरुष प्रधान संस्कृतीमध्ये स्त्रिला आपल्या मधील कलागुणांना कधीच वाव मिळाला नाही. त्यामुळे स्त्रिला स्वातंत्र असूनही त्या बंधनात आपले आयुष्य घालवतात.

संदर्भ —

१. भारतीय संविधान व भारतीय राजकारण लेखक — जाधव तुकाराम, शिरापूरकर महेश (युनिक ॲकडमी)

२. Golden Research Thoughts: Dr. T. N. Shinde

३. मानवी हक्क—जाधव तुकाराम, शिरापूरकर महेश (युनिक ॲकडमी)

४. वृत्तपत्रे — दैनिक सकाळ, दैनिक लोकसत्ता, दैनिक महाराष्ट्र टाईम्स

५. www.महिला व बालविकास

II प्रज्वलितो ज्ञानमयः प्रदीप II

SHRIRAM EDUCATION SOCIETY'S,

NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN,

TAL. PHALTAN, DIST. SATARA

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY & IQAC

ORGANIZED BY

ONE DAY INTERDISCIPLINARY

INTERNATIONAL E-CONFERENCE

On

THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES

Date 25th September, 2021, Saturday, Time- 11.00am (IST)

CERTIFICATE

This is certify that Shri/Smt./Dr./Prof.: Miss. kolekar Vanita Ashok of Namdevrao Suryawanshi (Bedke) College has participated in a One Day Interdisciplinary International e-Conference on "THE CHANGING IDEOLOGY AND MINDSET OF MODERN TIMES" organized by the Department of Psychology & Internal Quality Assurance Cell (IQAC) NAMDEVRAO SURYAWANSHI (BEDKE) COLLEGE, PHALTAN, TAL. PHALTAN, DIST. SATARA Maharashtra, India on 25th September, 2021 as a Resource Person / Chair Person/ Paper Presented/ Participated.

He/She has presented Research Paper entitled 'महिला हिंसाचाराचे स्वरुप व उपाय'

CONVENER
MR. ARIF TAMBOLI
IQAC Coordinator

ORGANIZER
DR. DEEPAK RAUT-PAWAR
I/C Principal

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Vol-12-Issue-02
February 2020

"पद्मा सचदेव कृत 'जम्मू जो कभी शहर था' उपन्यास में चित्रित भारतीय समाज"

प्रा. श्री. बिचुकले एस.एस.
हिंदी विभागाध्यक्ष,
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके)
महाविद्यालय, फलटण, जि. सातारा
भ्रमण ध्वनि-- ९८८१८१२५१८

आज हम समाज के बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। समाज ही मनुष्य के अंतरबाह्य क्रियाकलाप की आधारशीला है। डॉ. सविता चौधरी का कथन समाज और विकास प्रक्रिया के संबंध पर प्रकाश डालता है--" मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और 'जिज्ञासा' मानव जीव की मूल प्रवृत्ति। प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष की खोज करके मानव जीवन प्रगति की ओर अग्रसर है, जिसका आधार समाज है। मानव जीवन के प्रारंभ से ही विकास की प्रक्रिया के साथ--साथ सामाजिक समूह स्पष्ट रूप से निर्मित हुए है।"[१] अत: यह कहा जा सकता है, समाज की डोर पकडकर ही वह विकास के नये--नये सोपान पारकर रहा है। व्यक्ति के समूह को समाज माना जाता है। पर क्या केवल समूह या भीड़ को समाज कहा जा सकता है? समाज में व्यक्ति के अंतरक्रिया तथा सरबंधों को व्यापक धरातल पर स्वीकृत किया गया है। सामाजिकता के तत्व इन्ही अंतरक्रियाओं से निर्माण हुए है। हर काल में सामाजिकता के तत्व एक समान नहीं रहे है, क्योंकि मूल्यों की स्थिती भी एक समान नहीं रही है। कभी मूल्यों का विघटन हुआ तो कभी पुराने मूल्यों के स्थान पर नए मूल्य स्थापित हो गये। जिससे हर काल की सामाजिकता में भी बदलाव आता गया है। समाज का प्रति बिंब साहित्य में दिखायी देता है अत:साहित्य में भी समाज जीवन के विविध आयाम दिखायी देते है। समाज जीवन के विविध आयाम एवं गतिविधियां को अभिव्यक्त करने के लिए बड़े कैनवास की आवश्यकता थी और उपन्यास विधा बिल्कुल इसके पूरक थी। इसलिए उपन्यास सामाजिकता के सभी पहलुओं को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बना हुआ है। कभी तो अतित के पन्नो को पलटकर सामाजिकता को परिभाषित कर उसका मूल्यांकन करता है, तो कभी वर्तमानता को टटोलकर बेहतर भविष्य की ओर संकेत करता है। अपनी इस उपयोगिता के कारण उपन्यास समाज मूल्यांकन एवं दिग्दर्शन का साधन बना हुआ है। इसीलिए पाठक, साहित्यकार एवं समीक्षकों का इसी विधाके प्रति रुझान रहा है। बात व्यक्तिगत जीवन की हो या सामूहिक उसके अभिव्यक्ति में सबसे मोटा हिस्सा समाज का है और उसी के पूर्ण रुप को उपन्यास उजागर करता है। डॉ. शशु भवन जी ने उपन्यास के संदर्भ में कहा है कि, " उपन्यास साहित्य का वह अंग है, जो गद्य के माध्यम से संपूर्ण चित्र उपस्थित करता है। जीवन के बहुमुखी औपन्यासिक दिग्दर्शन का वह महत्वपूर्ण माध्यम है। वह जीवन के किसी एक अंग की, एक घटना की, एक टुकडे की प्रतिक्रिया का अंकन नहीं करता, प्रत्युत उसे समग्रता से प्रस्तुत करता है।"[२]

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

हिंदी एवं डोगरी की प्रसिद्ध लेखिका पद्मा सचदेव जी जम्मू की रहनेवाली है। इस कारण उनकी रचनाओं में जम्मू के सामाजिक सांस्कृतिक, आँचलिक तत्व पाए जाते है। जम्मू के जीवन की झाँकी को उन्होंने साहित्य में व्यक्त किया है परंतु साहित्य से भी राजनीति की गलीयारों में जम्मू का नाम अधिक उछाला जाता है। जम्मू–कश्मीर का विषय तो आजादी के पहले से ही केंद्र में था। परंतु '३७०' एवं '३५–अ' कलम हटाने से उस ओर पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ है। निश्चित ही इन स्थितियों का जम्मू के समाज जीवन पर बड़ा परिणाम दिखायी देगा। कभी जम्मू एक बहुत बडे राज्य का हिस्सा था, आज वह केंद्रशासित प्रदेश बना है। कश्मीर का दामन थामे जम्मू भारत का अभिमान बना है परंतु शांति–सुव्यवस्था की दृष्टि से वह हत्भाग्य ही कहा जाएगा। जम्मू–कश्मीर ने क्या नहीं देखा? स्वर्ग और नर्क की मंजरो से गुजर कर उसने उदारता, मानवता, संवेदनशीलता, तठस्थता, कठोरता, निर्दयता, कायरता, स्वार्थांधता, धर्मांधता, हिंसाचार, जानवरता एवं विकृतता के बर्बर रुप को खुली आँखों से देखा है और न जाने क्या देखना बाकी है। जब कोई प्रदेश अंतर्बाहय रुप से बदल जाता है तो उसका अतित हमे पुकार-कर अपनी दाँसता सुनाता है। मीर का यह शेर इसी बात को दोहराता है और शहर के प्रति के जज़बात को बयान करता है –

" दिल्ली जो एक शहर था आलम में इन्तिखाब,

हम रहने वाले है उसी उजडे दयार के।" [३]

जम्मू के बदलते रुप को आज हम देख रहे है। परंतु लेखिका पद्मा सचदेव जी ने ' जम्मू जो कभी शहर था' इस उपन्यास में जम्मू के समाज जीवन की यादों को सहेज कर रखा है। उनका यह उपन्यास साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दोनो दृष्टियों से बहुत बडी उपलब्धि है। प्रस्तुत उपन्यास लोक जीवन को समर्पित है। उपन्यास के पात्र तो केवल कथा वस्तु को गति देते है वरण 'लोक' के विभिन्न तत्व संस्कृति, भाषा, गीत, त्योहार, रंग, नृत्य, रिवाज कला, 'के तानबाने से बनी पुराने जम्मू शहर की सामाजिकता ही इसकी बुनियाद है। डॉ. खिल्लारे जी के अनुसार, "जम्मू अंचल की लोक–संस्कृति और लोकरंगों के रंगीन से बुनी यह जम्मू की काया है, जिसमें कथा वाचिका 'सुग्गी नाइन' के माध्यम से पद्मा अपनी विरासतों को खंगालती है। इस उपन्यास को डोगरी लोकजीवन का सांस्कृतिक दस्तावेज कह सकते हैं। रिश्तों की मिठास, संबंधों का अनूठापन और मानवीय संवेदना के अद्भुत प्रसंगो से इस उपन्यास का महत्व और बढ जात है।" [४] वस्तुतः पद्मा सचदेव जी द्वारा लिखित 'जम्मू जो कभी शहर था' यह उपन्यास आँचलिक उपन्यासों की कोटि में आता है, जिसमें सामाजिकता के सभी पहलु उजागर हुए है। उपन्यास के आरंभ में ही लेखिका ने उपन्यास लेखन की प्रेरणा को स्पष्ट किया है। तीन बातें लेखिका को बेचैन कर रही थी। १. जम्मू बाहर ब्याही लड़कियाँ पुराने कानून के तहत दो गज जमीन तक,नहीं खरीद सकती यह खलल उनके मन में थी। २. सुग्गी नाइन किस प्रकार पूरे शहर को अपने उँगलियों पर नचा रही थी यह बताना। ३. पुराने शहर की यादे उन्हें सता रही थी। इन्ही तीन बातों ने उन्हे उपन्यास लिखने के लिए मजबूर किया। लेखिका ने इसमें २० जनवरी १९८९ के आतंकी हमले के परिप्रेक्ष्य में घटित घटनाएँ, प्रसंग, यादें जम्मू को केंद्र में रखकर सुग्गी नाइन की जुबान से हमारे सामने रखी है। आतंकी विस्फोट के कुछ वर्ष पूर्व की जम्मू के समाज

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020
N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

जीवन की सुंदर झाँकी का सजीव वर्णन लेखिका ने इसमें किया है। इसमें उन दिनों की बात है जब जम्मू एक शहर के रुप में माना जाता था।

यह एक आँचलिक उपन्यास होने से के कारण सामाजिकता के तत्त्व इसमें घुल–मिल गए है। डोगरा जीवन शैली, रीतिरिवाज, खान–पान, धार्मिक विधि, जातियता, अंधश्रद्धा, शिक्षा, परिवार, पहेराव, भीत, भक्ति, बोलचाल के ढंग आदि सभी को इसमें स्थान मिला है। लेखिका ने सुग्गी नाइन को मुहरा बनाकर जम्मू शहर का चेहरा पाठको के सामने आईने की तरह साफ कर दिया है। अन्य गाँव, कस्बे, शहर की तरह जम्मू में भी जातियता को देखा जा सकता है। इनमें जातिगत अभिमान तो है परंतु मनमुटाव नहीं। सभी एक ही अहाते में रहकर एक दूसरे का हाथ बटाते है। इनमें जातिगत विशेषताएँ पायी जाता है, सामान्यतः जिन्हे गुण–दोष कह सकते है। नाई जाति का सूक्ष्म चित्रन इसमें है। नाइयों के कामों की गिनती नहीं की जा सकती शादी–ब्याह, मुंडन–श्राद्ध, मातम–गमी सभी की खबर, देना उबटन लगाना, दुल्हन को सजाना, शादी तय करना, गाना बजाना, दाई का काम करना आदि–सभी प्रकार के काम करने पडते है। इस प्रकार शहर की नब्ज इनके हात में थी। नाइनों ने यजमानों के घर भी बाँट लिए थे। ये नाईन बातूनी तथा जुबान की बड़ी तेज थी। ये अपने घर में कम यजमानों के घर अधिक पायी जाती और रोटी पर अधिकार जमाती परंतु काम में इनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। इन्हें सभी रस्मों रिवाज तथा दुनियादारी की खबर है। ये गाँली बिना बात नहीं करती, झगडालू और इर्षालु है। पर बडी हिम्मतवाली है, सभी की संकटमोचक बनती है। खबरें इनके जीवन जीने का टॉनीक है। ये हर घर में प्रवेश पाती है परंतु घर का हर भेद इनके सीने में दफन है। ये हर भेद की कीमत जानती है। इस संदर्भ में सुग्गी नाइन के कथन देखिए, "मै नाई की बेटी हूँ। हमें सब सुनकर पेट के कुएँ में डाल देना होता है घर–घर का गुबार रहता है, हमारे पेट में। भेद खुल जाए तो कइयों के मुँह काले हो जाएँ।" नाइयों के साथ अन्य जातियों की प्रवृत्ति पर भी प्रकाश डाला है जैसे पंडित का श्लोक पठन–पाठन, छुआछूत मानना, ग्वालों की धनिकता एवं झगडालू वृत्ति, सुनार ईमानदारी से गहने तो लौटा देता है परंतु गहने बनवाते वक्त कुछ हाथ मारने से बाज नहीं आता। जातियता के कई रंग उपन्यास में उभर कर आए है।

चाहे जम्मू हो या विदेश नारी शोषण के अभिशाप से मुक्त नहीं हो पायी है। नारी–पुरुष के प्रति किए जानेवाले भेदभाव को पद्मा जी ने इस उपन्यास में सच्चाई के साथ उजागर किया है। जम्मू में लडकियों की शिक्षा केवल गिनती के लिए होती है। 'तुम लडकी हो' इस रुढिवाद में जकड कर उसे शोषण के लिए किया बाध्य जाता है। लगातार लडकियों को जन्म देना यहाँ संगीन अपराध माना जाता है । पितृसत्ताक व्यवस्था में सास ही बहू का (एक स्त्री ही दूसरे स्त्री का) शोषण करते हुए उसे शारीरिक–मानसिक यातनाएँ देती है यह कितनी विडबना की बात है । पुरुषों द्वारा किए गए जबरन अत्याचार की घटनाओं का भी उपन्यास में जिक्र आया है । सुग्गी नाइन द्वारा बताई गयी यह घटना शोषन और अमानवता की चरमसीमा है। "मेरे गाँव में मेघो की लडकी को किसी ने घेर लिया था । ऐसा ही जुल्म उसके साथ भी हुआ। जब एक दो महीने के बाद पता चला, दिन चढ गए है, तो अपनी ही माँ ने कपडा धोनेवाले डण्डे से मार–मारकर उसको अध मरी कर दिया। चलने फिरने लायक होते ही लडकी कुएँ मे डुबकर मर गयी। वो कुआँ गाँव में सबसे मीठे

Copyright©authors

पानी का कुआँ था सारा गाँव उसी से पानी पीता था। उस रॉड ने ये भी नहीं सोचा सामने ही तो पहाडी थी, जान तो वहाँ से कूदकर भी दे सकती थी। जानती हूँ, तब गाँव के लोगों को उसके मरने का ख्याल नहीं आया, सिर्फ कुएँ के मीठे पानी का ख्याल आया। ये है औरतों की जिंदगी।" [5] हर स्थिति में नारी पर ही लाँछन लगाया जाता है। पुरुष की नजर में नारी की जिंदगी क्या है इसी बात को सुग्गी ने इस घटना के द्वारा स्पष्ट किया है। स्त्रियों को ही बदनामी के आग में झुलसाकर अपने अस्तित्व को मिटाना पडता है क्या यही है नारी–पुरुष समानता ? पुरुष तो अत्याचार करके तमाशबीन बन जाता है। बदनामी की भयावहता उस पर आँच तक नहीं आने देती और फिर पुरुष वासना की आग में मासूम जिंदगियाँ कुर्बान हो जाती है। जम्मू के कई घरों की यही त्रासदी है जिसे वे कह भी नहीं पाते और खून के आँसू पीते रहते है। लाजू के प्रसंग में जान तो बच गई पर न्याय के लिए लढने की कोई हिम्मत नहीं जुटा पायी। सुग्गी शहर की शेरनी है पर बदनामी के भय से लाजो की लाज लूट जाने पर भी दिन गिनती रही और सब्र का दामन थामकर समय रहते ही लाजो की शादी दवानू से करवा देती है। तो बलीराम मास्टर को कानून का भय दिखाकर उसके रुपवती पत्नी भागो को उसके कैदखाने से आजादी दिलाती है। नारी की यह अवस्था भारतीय समाज के नारी स्थिति को प्रातिनिधिक रुप में व्यक्त करता है।

उपन्यास मे जातिगत अहंभाव में डूबे लोग, सास के बहू को पीटने के तरीके तथा काबू में रखने के कारनामें, गहनों का लालच, गरीब परंतु मेहनतकश संतुष्ठ लोग, खानपान के नुस्खे तथा देसी चाय के चुस्कें, शादी ब्याह के रस्मों रिवाज, साली से छेडछाड, संयुक्त परिवार, व्रत उपवास एवं पूजा, अंधश्रध्दा में जकडी स्त्रियाँ, धार्मिकता, विधवाओं का जीवन, पनाहगीरों की समस्याएँ, त्यौहार – पर्व का जोश, उच्च वर्ग की नकल करनेवाले, राजाओं के जीवन की बातें एवं आकर्षण, सामथियों के नाजूक रिश्तें, मित्रता की मिठास, स्त्रियाँ की ईर्षालु एवं झगडालू वृत्ति, शराब के नशे में चूर लापरवाह लोग, प्यारभरी गालियाँ, भोलेभाले निरीह लोग सामाजिकता के सभी तत्व इसमें अंकित हुए है। प्रस्तुत उपन्यास में डोगरे लोकजीवन को प्रकट किया है। जिसमें से डोगरी के लोक गीतों की भीनी–भीनी खुशबू मन को अतित की याद दिलाती है जैसे –

"टल्लू फटे सी लैना है
अम्बर फट्टै किया सीना
खसम मरै जी लैना हो
यार मरै कीयाँ जीना?"

("कपडा फटे तो सी लूँ आसमान फटे तो कैसे सिलूँ, खसम मरे तो जैसे तैसे जी लूँगी, यार मरे तो कैसे जिऊँगी ?") [6] सुग्गी और सोमा इस उपन्यास के दो मुख्य पात्र है। दोनों के मैत्रभाव का अनूठा वर्णन उपन्यास में आया है। जिनके संभाषण से जम्मू तथा दुनिया भरी की घटनाओं पर प्रकाश पडता है। किसके घर में भैस ने दूध नहीं दिया यहाँ यक से नेपाल में वजीरनी जी की रानो के कैसे ठाठ है यहाँ तक सभी बातों पर चर्चाएँ होती है। सोमा का घर जम्मू के सामाजिक

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

COLLEGE PHALTAN

हिंदी एवं डोगरी की प्रसिद्ध लेखिका पद्मा सचदेव जी जम्मू की रहनेवाली है। इस कारण उनकी रचनाओं में जम्मू के सामाजिक सांस्कृतिक, आँचलिक तत्व पाए जाते है। जम्मू के जीवन की झाँकी को उन्होंने साहित्य में व्यक्त किया है परंतु साहित्य से भी राजनीति की गलीयारों में जम्मू का नाम अधिक उछाला जाता है। जम्मू–कश्मीर का विषय तो आजादी के पहले से ही केंद्र में था। परंतु '३७०' एवं '३५–अ' कलम हटाने से उस ओर पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ है। निश्चित ही इन स्थितियों का जम्मू के समाज जीवन पर बड़ा परिणाम दिखायी देगा। कभी जम्मू एक बहुत बडे राज्य का हिस्सा था, आज वह केंद्रशासित प्रदेश बना है। कश्मीर का दामन थामे जम्मू भारत का अभिमान बना है परंतु शांति–सुव्यवस्था की दृष्टि से वह हत्भाग्य ही कहा जाएगा। जम्मू–कश्मीर ने क्या नहीं देखा? स्वर्ग और नर्क की मंजरो से गुजर कर उसने उदारता, मानवता, संवेदनशीलता, तठस्थता, कठोरता, निर्दयता, कायरता, स्वार्थीधता, धर्मांधता, हिंसाचार, जानवरता एवं विकृतता के बर्बर रुप को खुली आँखों से देखा है और न जाने क्या देखना बाकी है। जब कोई प्रदेश अंतर्बाहय रुप से बदल जाता है तो उसका अतित हमे पुकार कर अपनी दाँसता सुनाता है। मीर का यह शेर इसी बात को दोहराता है और शहर के प्रति के जज़बात को बयान करता है –

" दिल्ली जो एक शहर था आलम में इन्तिखाब,

हम रहने वाले है उसी उजडे दयार के।" [३]

जम्मू के बदलते रुप को आज हम देख रहे है। परंतु लेखिका पद्मा सचदेव जी ने ' जम्मू जो कभी शहर था' इस उपन्यास में जम्मू के समाज जीवन की यादों को सहेज कर रखा है। उनका यह उपन्यास साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दोनो दृष्टियों से बहुत बडी उपलब्धि है। प्रस्तुत उपन्यास लोक जीवन को समर्पित है। उपन्यास के पात्र तो केवल कथा वस्तु को गति देते है वरण 'लोक' के विभिन्न तत्व संस्कृति, भाषा, गीत, त्योहार, रंग, नृत्य, रिवाज कला, 'के तानबाने से बनी पुराने जम्मू शहर की सामाजिकता ही इसकी बुनियाद है। डॉ. खिल्लारे जी के अनुसार, "जम्मू अंचल की लोक–संस्कृति और लोकरंगों के रंगीन से बुनी यह जम्मू की काया है, जिसमें कथा वाचिका 'सुग्गी नाइन' के माध्यम से पद्मा अपनी विरासतों को खंगालती है। इस उपन्यास को डोगरी लोकजीवन का सांस्कृतिक दस्तावेज कह सकते हैं। रिश्तों की मिठास, संबंधों का अनुठापन और मानवीय संवेदना के अद्भूत प्रसंगो से इस उपन्यास का महत्व और बढ जात है।" [४] वस्तुत: पद्मा सचदेव जी द्वारा लिखित 'जम्मू जो कभी शहर था' यह उपन्यास आँचलिक उपन्यासों की कोटि में आता है, जिसमें सामाजिकता के सभी पहलु उजागर हुए है। उपन्यास के आरंभ में ही लेखिका ने उपन्यास लेखन की प्रेरणा को स्पष्ट किया है। तीन बातें लेखिका को बेचैन कर रही थी। १. जम्मू बाहर ब्याही लड़कियाँ पुराने कानून के तहत दो गज जमीन तक नहीं खरीद सकती यह खलल उनके मन में थी। २. सुग्गी नाइन किस प्रकार पूरे शहर को अपने उँगलियों पर नचा रही थी यह बताना। ३. पुराने शहर की यादे उन्हें सता रही थी। इन्ही तीन बातों ने उन्हे उपन्यास लिखने के लिए मजबूर किया। लेखिका ने इसमें २० जनवरी १९८९ के आतंकी हमले के परिप्रेक्ष्य में घटित घटनाएँ, प्रसंग, यादें जम्मू को केंद्र में रखकर सुग्गी नाइन की जुबान से हमारे सामने रखी है। आतंकी विस्फोट के कुछ वर्ष पूर्व की जम्मू के समाज

Copyright©authors

Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

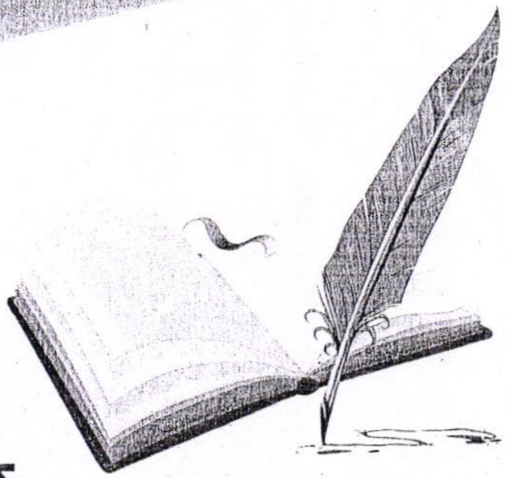

साहित्य और संस्कृति चिंतन

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

13) नागार्जुन की कविता में जनवादी चेतना
डॉ. अलका निकम-वागदरे, सांगली. ||57

14) आदिवासी अस्मिता और समकालीन हिंदी कविता
प्रा. सिध्दाराम पाटील, सोलापुर (अक्कलकोट) ||61

15) वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति
रेवनसिद्ध काशिनाथ चव्हाण, पुणे ||64

16) नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित पुरुष विमर्श
प्रा. संदेश बिचुकले, फलटण ||66

17) आधुनिक हिन्दी कविता और गांधीवाद
डॉ. पंडित बन्ने, सोलापुर (जेऊर) ||68

18) मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी विमर्श
प्रा. सुनिल प्रकाश खोत, सांगली ||71

19) रूढ़िग्रस्त मनोवृत्ति का बुर्का फाड़ती फिल्म 'लिपस्टिक अंड़र माय बुर्का'
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण, लातूर ||73

20) हिंदी के पुरस्कृत उपन्यासों में चित्रित किन्नर जीवन
डॉ. सुरैय्या ईसुफअल्ली शेख, सोलापुर (भोडनिंब) ||76

21) संत एकनाथ की हिंदी पदावली
प्रा.डॉ. रामकृष्ण बदने, नांदेड ||78

22) विश्व में बौद्ध धर्म का प्रसार और धर्म परंपराएँ
डॉ. मिलिंद सालवे, सांगली ||81

23) आधुनिक हिंदी बाल कहानियों में जादू — टोना
श्री. पाटील कैलासकुमार गुंडोपंथ, सांगली ||88

24) हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन का चित्रण
प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड, सोलापुर (वैराग) ||90

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

PHALTAN N.S.(B) COLLEGE

संदर्भ ग्रंथ

१. डॉ. अशोककुमार तिवारी - निराला साहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन, पृ.१०
२. डॉ. रामसजन पाण्डेय - संतों की सांस्कृतिक संसृति से उद्धृत, पृ.१५
३. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय - समकालीन भारतीय साहित्य (जुलाई-अगस्त २०११), संपादकीय से, पृ.७
४. संपा. गिरीश मिश्र, ब्रजकुमार पाण्डेय - भूमंडलीकरण : मिथक या यथार्थ, पृ.३८
५. प्रभा खेतान - भूमंडलीकरण : ब्राण्ड संस्कृति और राष्ट्र, पृ.७९
६. संपा. डॉ.माधव सोनटक्के, डॉ. अंबादास देशमुख- वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य से उद्धृत, पृ.५८
७. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय - समकालीन भारतीय साहित्य (जुलाई-अगस्त २०११), संपादकीय से, पृ.१२

❑❑❑

16

नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित पुरुष विमर्श

प्रा. संदेश बिचुकले
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण

****

प्रस्तावना :

डॉ. नीरजा माधव आधुनिक काल की सशक्त लेखिका मानी जाती है। उन्होंने अनेक प्रकार की साहित्य विधाओं में लेखन किया है। उनमें से कहानी विधा अत्यंत प्रभावी लगती है। अपनी बीस वर्ष की लेखन यात्रा में उन्होंने अनेक पड़ाव पार करते हुए जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। 'चिटके आकाश का सुरज, अभी ठहरो अंधी सदी, आदिमगंध तथा अन्य कहानियाँ, पथदंश, चुप चन्तारा रोना नहीं, प्रेम संबंधो की कहानियाँ. वाया पांड़ेपुर चौराहा' कुल सात कहानी संग्रह तथा उनमें सम्मिलित ८३ कहानियाँ प्रसिद्ध है।

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय पुरुष पात्र :

डॉ. नीरजा माधव ने सिर्फ नारी जीवन का ही चित्रण किया है, ऐसी बात नहीं है उन्होंने नारी के साथ-साथ उससे संबंधित पुरुष पात्रों को भी अपनी कहानियों में स्थान दिया है।

१. 'अनुगूंज' कहानी का 'समीर' :

अनुगूंज कहानी में समीर आकाशवाणी में उद्घोषक है। श्रोता केवल उसकी आवाज ही सुन पाते हैं परंतु एक समीर की आवाज से इतना प्रभावित हो जाती है कि वह बिना देखे ही अपने एक तरफा प्यार का इजहार कर देती है। एक दिन अनुगूंज समीर को अपने बारे में बताती है और दोनों में प्रेम विवाह हो जाता है। समीर एक ऐसा प्रेमी है जो शक्ल-सुरत से ज्यादा सीरत की कद्र करता है।

२. 'भंवरी' कहानी के 'श्यामलाल' :

भंवरी कहानी के श्यामलाल एक स्कुल में अध्यापक थे। उनकी बेटी भंवरी मानसिक मंदता की शिकार थी। एक दिन डब्बू नामक आवारा व्यक्ति भंवरी पर बलात्कार करता है। श्यामलाल

अपनी पत्नी को इस घटना के संबंध में मुँह न खोलने के लिए कहते है। इस घटना से परेशान होकर वे अपनी बेटी को जहर देकर मार डालते हैं।

३. 'इतना सा सच' कहानी का 'इमरान' :

इतना सा सच कहानी के इमरान की नीलोफर मंगेतर थी। एक बार नीलोफर और एक अजनबी को हँसते हुए इमरान देखता है तब वह उसे संदेह की दृष्टि से देखता है। इमरान का संदेह उस व्यक्त दूर हो जाता है जब उसे पता चलता है कि वह आदमी एक सेल्समन था।

४. 'देश के लिए' कहानी का 'कैप्टन राकेश':

देश के लिए कहानी में कैप्टन राकेश को डयूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में कुछ दिनों के लिए सजा मिली थी। अपने अपमान की पीड़ा भुलाने के लिए वह एक वेश्या के पास चला जाता है। अचानक उसे पता चलता है कि वेश्या राखियाँ बनाती है और सीमा पर लड़ने वाले जवानों के पास भेजती है तब उसके मन में वेश्या के लिए बहन का प्रेम प्रकट होता है। वह उसे छुता तक नहीं है।

५. 'ड्मी' कहानी का 'देववंश':

ड्मी कहानी का देववंश बी.ए. पास युवक था। उसे खेती करना बिल्कुल पसंद नहीं था। पढ़ा - लिखा बेरोजगार युवक आगे पढ़ना भी नहीं चाहता था। अत: माता - पिता से आज्ञा लेकर वह पास ही के महानगर में नौकरी करने के लिए चला गया। वहाँ उसे बहुत हाथ-पैर मारने पड़े। बेरोजगारी का सामना करना पड़ा।

६. ' अजिब्बा गुरु का शंख ' कहानी के 'अजिब्बा गुरु ':

अजिब्बा गुरु संस्कृत के शिक्षक थे। पिताजी के मृत्यु के बाद अजिब्बा गुरु ने पूजा - पाठ का पैतृक काम अपना लिया था। ठाकुर के साथ चल रहा जमीन का मुकदमा वे हार गये। उसके बाद उन्होंने अपना गाँव छोड़ दिया। परिवार चलाने के लिए बकरी पालने का व्यवसाय शुरू किया उसमें में भी सफल न हो पाए।

७. 'कतरनों वाली फाईल 'के 'राजकिशोर':

राजकिशोर जी आर.एस्.एस्. में शिक्षक थे। वे हिंदू धर्म को वर्तमान दशा पर चिंतित थे। राजकिशोर जी का दृष्टिकोण यह है कि सभी अपने धर्म को मानें ... बिना एक-दूसरे में हस्तक्षेप किये, तो कोई उन्माद, विवाद ही न हो। लेकिन उनका यह दृष्टिकोण कोई मानने को तैयार नहीं हुआ।

८. 'रालू' कहानी का' रालू':

कहानी का नायक राम लुटावन निम्न मध्यवर्गीय परिवार का सदस्य है। वह एक प्रसिद्ध अभिनेता बनने के सपनें देखता है। लेकिन एक अभिनेता बनने का सपना देखनेवाला रालू एक बेरोजगार युवक ही रह जाता है।

९. ' पथदंश ' कहानी का 'मंगरू' :

मंगरू जब अपने साथी राम बिरिछ का ठाँठ - बाँट देखता है तो उसके मन में लालच निर्माण हो जाता है उसे हिंदू धर्म पाखंड़ी , ढ्रोंगी नजर आता है। हिंदू धर्म में रहकर पंडितों की जगह कभी भी नहीं ले पायेंगे यह सोच मंगरू अपनी पत्नी को छोड़कर चला जाता है।

१०. 'ऐरिअर' कहानी के 'अशोक' :

ऐरिअर कहानी के अशोक रिटायर होने जा रहे है। उन्हें ऐरिअर मिलने वाला है। अशोक को हफतों से बुखार है इस बात की चिंता उनकी पत्नी रेनू को है अशोक अपनी पत्नी के लिए सोने का गहना बनाना चाहते है अपनी बेटीयों के लिए टि.वी. खरीदना चाहते है लेकिन उन्हें अपने सारे पैसे पिता के श्राद्ध के लिए देने पड़ते हैं।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि डॉ. नीरजा माधव ने अपनी कहानियों में अनेक पुरुष पात्रों का वर्णन किया है। इन पुरुष पात्रों के बिना कहानी साहित्य अधुरा है।

संदर्भ सूची : -

१. डॉ. नीरजा माधव - चिटके आकाश का सुरज
२. डॉ. नीरजा माधव - अभी ठहरो अंधी सदी
३. डॉ. नीरजा माधव - आदिम गंध तथा अन्य कहानियाँ
४. डॉ. नीरजा माधव - पथदंश
५. डॉ. नीरजा माधव - चुप चन्तारा रोना नही।

❑❑❑

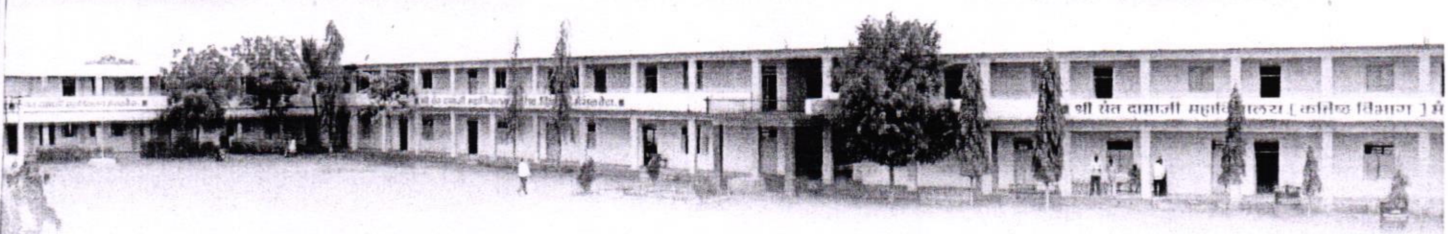

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Indexed

IMPACT FACTOR
6.021
ijif

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke

Impact Factor – 6.625
ISSN – 2348-7143

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2020 Special Issue – 236 (D)

Introspection, Prognosis and Strategy for Global Water Resources

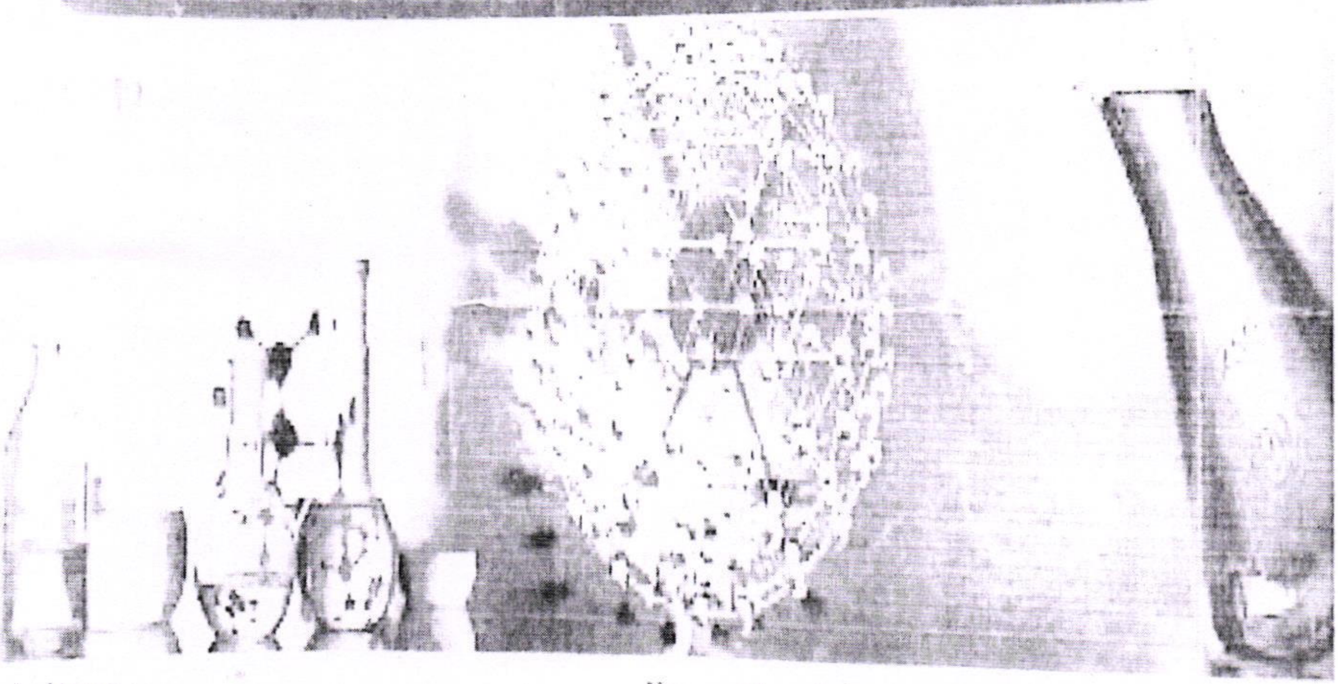

Guest Editor :
Dr. Devidas S. Gejage
Ex-Principal,
Sameer Gandhi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Executive Editors :
Mr. Santosh P. Mane
IQAC Cordinator
Sameer Gandhi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 236 [D] : Introspection Prognosis and Strategy for Global Water Resources
Peer Reviewed-Referred Journal
ISSN : 2348-7143
January-2020

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

34	बार्शी तालुक्यातील तेल उद्योगाची वाटचाल	डॉ.भारत जाधव	143
35	बार्शी कृषी उत्पन्न बाजार समितीच्या वाटचालीचा इतिहास	डॉ.बळीराम जाधव	148
36	जलव्यवस्थापन : काळाची गरज	डॉ. चांगदेव बंडगर	159
37	भारतातील जलसंवर्धनाचे कार्यक्रम	प्रा. अरुण कटकोळे	164
38	मोहोळ तालुका विकासात जलसिंचन साधनांचे योगदान	डॉ.सज्जन पवार	169
39	पाणी नियोजन व पाणी साठ्यातील वाढ : काळाची गरज	डॉ.के.डब्ल्यु.पावडे	175
40	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक आणि दुष्काळ निवारण कार्य	प्रा. सुरेखा रेडेकर, कु. स्नेहा लोंढे	179
41	चित्रपटातून दिसणारा पाणी प्रश्न – विशेष संदर्भ पाणी	प्रा.हमीद काझी	183
42	सोलापूर जिल्ह्यातील पाणी प्रश्नासंबंधित शेतकरी आंदोलने	डॉ.महेश घाडगे	188
43	राजर्षी शाहूकालीन रुकडी	डॉ.खंडेराव शिंदे	192
44	स्वराज्यातील गडकिल्ल्यावरिल जलव्यवस्थापन	डॉ.कमलाकर घोलप	197
45	प्राचीन काळातील जलव्यवस्थापन डॉ.शिवाजी वाघमोडे	प्रा.हनुमंत तेलसंग	202
46	ऐतिहासिक जलव्यवस्थापन	प्रा.सुरेखा रेडेकर	205
47	स्वातंत्र्यसैनिक रघुनाथ रामचंद्र माने (गुरुजी) यांचे शिक्षण क्षेत्रातील योगदान	डॉ.दत्तात्रय मगर	209
48	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे जलनियोजन विषयक विचार	प्रा. रघुनाथ व्यंकटीघाडगे	213
49	भारतीयांचे प्राचीन काळातील जलव्यवस्थापन	डॉ.सुभाष गायकवाड	216
50	माळशिरस तालुक्यातील बारव स्थापत्य	डॉ.शिवाजी चौगुले	219
51	ऐतिहासिक काळातील पाण्याचे स्त्रोत,नियोजन व व्यवस्थापन	समाधान माने	224
52	जल व्यवस्थापनातून जागतिक अन्न सुरक्षा	डॉ.सुरेखा रोंगटे	230
53	पाणी फाउंडेशन:दुष्काळाविरोधात लढणारी लोकचळवळ	डॉ.सौ.एन.एस.पाटील	235
54	सोलापूर जिल्ह्यातील जलसिंचन क्षेत्राचा अभ्यास	प्रा.श्रीकांत पवार व प्रा.सचिन मगर	241
55	भूजल पुनर्भरणाची गरज	डॉ.पी.बी.मिसाळ	244
56	सोलापूर जिल्ह्यातील शेती क्षेत्रातील सिंचन व्यवस्था एक अभ्यास	प्रा.पी.एम.भोसले व डॉ.डॉ.एस.बागडे	250
57	शाश्वत विकासासाठी जलपुनर्भरण आजची गरज	डॉ. पी. एस. पांडव	254
58	आधुनिक मराठी साहित्यातून दिसणारा पाणी प्रश्न	डॉ.देविदास गेजगे	260
59	जयराम खेडेकरांच्या कवितेतील दुष्काळाची दाहकता	प्रा.जवाहर मोरे	266
60	बळिवंतमधील दुष्काळाचे चित्रण	डॉ.लहू वाघमारे	270
61	समकालीन मराठी ग्रामीण कादंबरीतील पाणी प्रश्नाचे वास्तवदर्शी चित्रण	डॉ.दादाराव गुंडरे	274
62	पर्यावरण संवर्धनातील संतांचे योगदान	डॉ.हनुमंत माने	278
63	जलक्रांती, जलव्यवस्थापन व जलसाक्षरतेचे उद्गाते:महात्मा ज्योतीराव फुले	डॉ.बाळासाहेब दास	281
64	दुष्काळजन्य परिस्थितीचे साहित्यातील चित्रण	मा.प्रा.डॉ.दत्तात्रय बारबोले	286
65	दुष्काळाचे व्यवस्थापन	डॉ.जनार्धन परकाळे	291
66	मराठी साहित्यातील सामाजिक जाणिवांच्या संदर्भात पाणी प्रश्न	डॉ.राजेंद्र खंदारे	295
67	मराठी कादंबरीतील दुष्काळजन्य परिस्थितीचे चित्रण	डॉ.शकील शेक	301
68	दुष्काळग्रस्त ग्रामजीवनाचे हृदयस्पर्शी चित्रण : चारापाणी	डॉ.ए.एच.अत्तार	306
69	मराठी साहित्यातून अभिव्यक्त झालेली पाणी प्रश्नांची धग	डॉ.राजकुमार सोनवले	308
	जलसंधारण व पर्जन्य जलसंग्रह एक अभ्यास	प्रा.दादा यमगर व श्री.तुषार साबळे	315
70	पाण्याच्या व्यवस्थापनातील वैयक्तिक जबाबदारीची जाणीव	डॉ. तेजश्री रायते	319

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 236 [D] : Introspection Prognosis and Strategy for Global Water Resources
Peer Reviewed-Referred Journal
ISSN : 2348-7143
January-2020

पाण्याच्या व्यवस्थापनातील वैयक्तिक जबाबदारीची जाणीव

प्रा.डॉ रायते तेजश्री विष्णू
नामदेवराव सूर्यवंशी(बेडके)महाविद्यालय फलटण
Email-
Mob-8796607045

प्रास्ताविक

आज पाण्याचे महत्त्व आपणा सर्वांच्या लक्षात येत असते तरीही त्या पाणी बचतीची वैयक्तिक जाणीव आपणास होणे गरजेचे आहे त्यासाठी पाणी वाचविणे ही काळाची गरज बनली आहे कारण वैयक्तिक पाण्याच्या अतिवापरामुळे आपण दुष्काळाकडे झुकलो आहो पाण्याच्या व्यवस्थापनाची उद्देश अन्न वस्त्र निवारा या मानवाच्या प्राथमिक व मूलभूत गरजा असल्या तरी तितकीच महत्वाची गरज म्हणजे पाणी आहे हे आपल्याला विसरता येणार नाही याची वेगवेगळी संबोधने आहेत जसे की पाणी पाणी इत्यादी परंतु पाण्याविना जीवन अशक्य आहे आपण आपली तहान व इतर गरजा भागविण्यासाठी पाण्याचा वापर करतो. हे पाणी आपल्याला इतके आरोग्यदायी आहे की ते आपल्याला एक प्रकारे सुदृढ व ऊर्जा त्मक आयुष्य जीवन देऊन जाते अन्नाशिवाय माणसाचे अतिश अस्तित्व काही दिवस राहू शकेल परंतु पाण्याविना माणूस राहून राहून जगू शकणार नाही अशा पाण्याचे महत्व रोज तर आपणास जाणवते परंतु पाण्याची गरज जाणारा काळ म्हणजे उन्हाळा उन्हाळा व दुष्काळ असे समीकरणच आत्ताच्या काळात बांधलेले आहेत खरे तर दुष्काळ पडू नये असे प्रत्येकालाच वाटत असते दुष्काळ पडणे याला आपण नैसर्गिक आपत्ती मानवनिर्मित समस्या मांडली तर आपण लोकसभा लोकसहभागातून या मोठ्या संकटावर मात करू शकतो हे देखील नाकारता येणार नाही या संकटावर मात करण्याचे किंवा त्यावर मात करण्याचा प्रयत्न म्हणजे सन 2016साली अभिनेता आमिर खान व त्यांची पत्नी किरण राव यांनी महाराष्ट्रात 'पाणी फाऊंडेशन'ही संस्था स्थापन करुन महाराष्ट्र दुष्काळ मुक्त करण्यास एक महत्वाचे पाऊल उचलत आहे. व याचा परिणाम म्हणजे महाराष्ट्रातिल शाळा, महाविद्यालयातील विद्यार्थी, अबाल, वृद्ध , व पुरुषाच्या बरोबरीने स्त्रिया देखिल या चळवळीत तितकेच श्रमदान करत आहेत. या पाणी फाऊंडेशनच्या या चळवळीने महाराष्ट्रात एक प्रकारचा अमुलाग्र बदल घड्वुन आणला आहे. व् पाण्याचे महत्वपटू व वाढू लागले आहे, याच पाणीफाऊंडेशनने we play a game म्हणत एखाद्या क्रिकेट कपच्या स्पर्धेप्रमाणे पाण्याचीहि स्पर्धा [साठ्विण्याची] स्पर्धा घेतली जावून विजेत्या गावाला Water Cup विजेता म्हणून घोषित केले जावू लागले. या स्पर्धेतूनच समाजात प्रेरणा वाढली व स्पर्धेचे स्वरुप दुष्काळमुक्ततेत होव् पाहत आहे.

पाणी फाऊंडेशनने ग्रामीण महाराष्ट्रातिल जनतेला दुष्काळाशी सामना करण्यासाठी 'सत्यमेव् जयते'या टीव्ही मालिकेच्या टीमने पुढाकार घेतला या मोहिमेत लोकांना सहभागी करून त्यांना प्रशिक्षण देवून शास्त्रशुध्द पाणलोट व्यवस्थापनतेही शास्त्रशूध्दपाणलोट व्यवस्थापनाने जलसंधारण करण्याचा उद्देश महाराष्ट्रात १,० % दुष्काळी भागात सुरु आहे.

महाराष्ट्रात चालू असलेल्या मोहिमेने 'चलागावी'या दिलेल्या हाकेतून जलसंधारणासाठी गावे व खेडी [वस्त्या] एकत्र येवून रात्रंदिवस मेहनत करुन 'पाणीअडवा पाणी जिरवा' या संकल्पनेचा आकार देवू लागल्या.

Scanned with OKEN Scanner

विशेषत्वाने या पाणी चळवळीत श्रमदान हेच श्रेष्ठदान मानून आपल्या या दुष्काळाच्या समस्येवर आपणच उपाय काढू शकतो. हे समाजाला पटू लागले आहे. यासाठी अनेक संघटनानी पाठिंबा दिलेला आहे. व महाराष्ट्र सरकारनेही यांत विशेष लक्ष घातले आहे. तरीही अजुनही काही ठीकाणी आपणांस मुक्त करणारे आहे. कारण दुष्काळा इतकाच पुरपरिस्थीतीहि माणसाला मुक्त करणारी आहे. म्हणूनच अशा संस्थानी देखील पुढाकार घेतला असता तर वैयक्तीक पातळीवरही व्यवस्थापन करणेही काळाची गरज आहे. व हे व्यवस्थापन आपण स्वत:पासून करणे गरजेचे आहे.

पाणी ही नैसर्गिक साधनसंपत्ती आहे. म्हणून तिचे सर्वामध्ये समान वाटप झाले पाहिजे. कारण पानी ही अमूल्य संपत्ती असल्याने हे पानी कमी अधिक का असे ना सर्वत्र उपलब्ध असल्याने लोकांच्या दृष्टिकोनातून त्याचे महत्व कमी झालेले दिसत आहे. एकीकडे जोरदार पावसाने पूरपरिस्थी निर्माण होत आहे. तर एकीकडे काही भागात दुष्काळजन्य परिस्थीति निर्माण होते. या दोन्ही परिस्थीतीत स्थानिक लोकांना अतिशय गंभीर समस्याना तोंड द्यावे लागत आहे. याचे उदाहरण म्हणजे आपल्या महाराष्ट्र राज्यातील सातारा, सांगली, कोल्हापूर जिल्ह्याचे उदाहरण देता येईल.

या वैयक्तिक पाणी व्यवस्थापनाची उद्दिष्टे खालीलप्रमाणे सांगता येईल.

१. प्रत्येकाला पुरेसे पाणी उपलब्ध करुन देणे.
२. ते योग्य वेळी व योग्य ठीकाणी उपलब्ध करुन देणे.

या पाणी व्यवस्थापनाच्या वैयक्तिक जबाबदारीच्या जाणीवेचे उपाय –

१. खेडोपाडी ग्रामपंचायतीच्या ठिकाणी सर्वेक्षणाने पाणीबचतीच्या उपाययोजना करणे.
२. या साठी आपल्या घराचा प्रकार कोणता आहे? घरातील व्यक्तीची संख्या, पाण्याचा स्त्रोत – जसे की झरा, नदी, तलाव, विहीर, पाईपलाईन, कूपनलिका, इ. कोणत्या प्रकारात मोडतो ते पाहणे.
३. दैनंदिन पाणी मिळविण्यासाठी लागणारा वेळ – ३० मिनिटे, १ तास, दीड तास, इ. यांपैकी किती वेळ आपणांस पानी मिळविण्यासाठी लागतो.
४. आपण पाणी साठिवण्यासाठी असलेली कोणती सुविधा [प्रकार] पाणी साठिवण्याची लिटर क्षमता.
५. आपण एकूण किती बादल्या पाणी वापरतो?
   उदा. १० लिटरच्या, १५ लिटरच्या, २० लिटरच्या
६. स्वचछता, स्वयंपाक, व पिण्याचे पाणी, घर, भांडी, कपडे धुण्यासाठी, आंघोळ, दात घासणे, व जेवल्यानंतर, स्वछतेसाठी बागकामासाठी, वाहने, धुण्यासाठी, व इतर
७. कुटुंबाला प्रत्येक दिवशी वापरण्यास लागणारे पाण्याचे प्रमाण इ. नोंद ग्रामपंचायतिच्या ठीकाणी करणे व याच वापरातून काही उपाययोजना आपणांस अमलांत आणाव्या लागतील त्या पुढीलप्रमाणे.

जसे की आपल्याकडून दररोज किती पाणी वाया जाते? प्रत्येक दिवशी किती पाणी वाचवले जाते व ते आणखी कसे वाचवता येईल का? या उपाययोजनेची अमलबजावणी वैयक्तिक जबाबदारी म्हणून आपण स्वत:पासून करून ग्रामपंचायतीचा किंवा नगरपालिकेच्या ठिकाणी पाणी वापरकर्त्याच्या प्रत्यक्ष नोंद करणे गरजेचे आहे. प्रत्यक्षात किती तरी शहरामध्ये ही योजना अमलात आलेली

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN
Scanned with OKEN Scanner

आहे. पण खेडोपाडी याची अमलबजावनी करणे गरजेचे आहे. आघोंळीसाठी शॉवर आणी बाथटबचा वापर टाळता येईल का? याचे अवलोकन करणे गरजेचे आहे.

बिघडलेले नळ दुरुस्त करुन नळाना नेट बसवुन पाण्याची धार कमी करणे गरजेचे आहे. घरात आलेल्या पाहुण्याना आवश्यक तेवढेच पाणी तांब्या – भांड्यात काढून देणे गरजेचे आहे, अनेक गावोगावी खेड्या – पाड्यात शिळ्यापाण्याचे रुपंतर ते ओतून देवून ताज्या पाण्यात केले जाते ही प्रथा बंद केली जावी. जादा व विनासायास पाणी वापर करणाऱ्यावर शासन [शिक्षा] ठरविण्यात यावी याने पाण्यच्या गेजच्या वापरावर मर्यादा घालता येतील.

समारोप –

- प्रा. डॉ. प्र.द. राऊत –पर्यावरण अभ्यास शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर आव्रुत्ति २०१८ महावी
- प्रा. डॉ. सावंत प्रकाश – मानवी भूगोल – फडके प्रकाशन, सोलापूर २०१८

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
[illegible] Issue 164 - Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance
UGC Approved Journal

ISSN : 2348-7143
March-2019

(B) COLLEGE PHALTAN

महात्मा गांधींचे सत्य व अहिंसात्मक विचार व आजची तरुणाई

डॉ. तेजश्री विष्णू गयते
विभाग प्रमुख, (तत्वज्ञान विभाग),
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय,
फलटण, ता. फलटण, जि. सातारा

[illegible]क :—

महात्मा गांधींना राष्ट्रपिता म्हणण्याचे एक कारण म्हणजे ज्याप्रमाणे कुटुंबप्रमुखावर घरातील सर्वच [illegible]ची जबाबदारी असते त्याचप्रमाणे भारत देशातील लोकांच्या अन्यायास वाचा फोडून सरकारविरोधात [illegible] मार्गाने आंदोलने करुन होणारे जुलूम, अन्याय दूर करुन भारतीय जनतेमध्ये चैतन्य निर्माण करण्याचे [illegible] केले. गांधीजींच्या या संकल्पनेला एका व्यापक मानवतावादी तत्वज्ञानाचे अधिष्ठान आहे. प्राचीन [illegible]मध्ये अहिंसेला फारच महत्वाचे स्थान आहे. गांधीजींचे मत आहे की, हिंसा कोणत्याच ठिकाणी योग्य [illegible]. जर भित्रटपणा किंवा हिंसेतील एकाची निवड करायची असल्यास भित्रटपणापेक्षा हिंसा बरी, परंतु इतर [illegible]ही ठिकाणी गांधीजींना हिंसा मान्य नाही.

[illegible] :—

समोरील राष्ट्र जेंव्हा आपल्या विरोधात हिंसा माजवतो, तेंव्हाही अहिंसा चळवळ किती उपयुक्त ठरेल [illegible] यशस्वी ठरेल की नाही हा एक मोठा प्रश्न आहे. परंतु महात्मा गांधींच्या राजकीय विचारांचा पाया [illegible] आधारित होता म्हणूनच येथे सत्य व अहिंसा यांचे तत्वज्ञानात्मक अधिष्ठान येथे पाहणार आहोत. या [illegible] आजच्या तरुण पिढीला विसर होत चाललेला आहे. सर्वसामान्य जीवन जगत असताना माणूस ज्या [illegible] राहत जगत असतो त्या समाजात त्यांच्या गरजा या एकमेकांच्या सानिध्यात राहिल्याने पूर्ण होतात. आजची तरुण पिढी ही काही गोष्टीमध्ये अज्ञानी राहिल्याने त्यांच्यामध्ये धैर्य, चिकाटी, विवके व [illegible]त्यास लुप्त होऊन तो एकमेकांशी वादविवाद, कलह, संघर्ष, रटतटीचे राजकारण मोठ्या प्रमाणावर [illegible] आहे. त्याचे स्वरुपही हिंसात्मक झालेले आहे व ही होणारी हिंसा व त्यातून होणारे दूरगामी परिणाम हे [illegible] सहन निवणारे नसतात, म्हणूनच आजच्या तरुण पिढीने गांधीजींच्या तत्वांचे अनुकरण करणे गरजेचे [illegible] गांधीजींनी सत्याचे दोन प्रकार स्पष्ट केले आहेत —

[illegible]क्ष सत्य :—

गांधीजींच्या मते विशिष्ट परिस्थितीत एखादी विशिष्ट गोष्ट सत्य आहे असे वाटते, त्यास सापेक्ष सत्य [illegible]. अर्थात प्रत्येक व्यक्ती, परिस्थितीनुरुप सत्याची कल्पना बदलू शकते. गांधीजींच्या या सापेक्ष सत्य [illegible]चा विचार करता प्रत्येक व्यक्तीच्या मनाप्रमाणे सुखाची कल्पना बदलत असते किंवा ती बदलावी

[illegible]क्ष सत्य :—

निरपेक्ष सत्य म्हणजे सत्, चित् व आनंद यांचा सुंदर समन्वय असतो. निरपेक्ष सत्य म्हणजे 'ईश्वर' गांधीजींच्या मते निरपेक्ष सत्य म्हणजे सर्वोच्च मूल्य, प्रेम, सर्वोच्च दया, सर्वोच्च आत्मबलिदान होय. [illegible], आत्मबलिदान, बंधुत्व याद्वारे या सत्याची पूर्तता करता येईल. गांधीजींनी अहिंसेपेक्षा सत्याला जास्त

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
March-2019

महत्व दिले - सत्यासाठी अहिंसेचा त्याग करावा, त्यांनी 'सत्याचे प्रयोग' या आपल्या आत्मचरित्रात सत्याचे महत्व विशद केले.

महात्मा गांधीजींनी सत्य व अहिंसा या दोन मार्गांनी आपले जीवन व्यतित केले. आज आपण भौतिक सुखाच्या मागे लागलेलो आहे. सोशल माध्यमांच्या विळख्यात तरुणाई गुरफटून गेलेली आहे. महाविद्यालयीन तरुण विद्यार्थ्यांच्या वाचनीय परिस्थिती खूपच गंभीर बनत चाललेली आहे. ग्रंथवाचनाने, पुस्तकवाचनाने आपण बौध्दिक व मानसिकदृष्ट्या सक्षम होतो. हे शिक्षण आपल्या आत्मिक विकासासाठी गरजेचे आहे. याचे भान आजची युवावस्था हरवून बसलेली आहे. हे घटक केवळ जीवन जगण्यासाठी उपयुक्त नाहीत. ते आपणास नितीपूर्ण जीवन जगावेसे याचे ज्ञान देतात. या घटकांचा प्राधान्यतेने जीवनात उपयोग करुन घेणे गरजेचे आहे.

पाठीमागे जाऊन आपण इतिहासाकडे डोकावले तरी सुध्दा अन्याय, अनिती यांमुळे यश प्राप्त होत नाही. त्यासाठी गांधीजींचे 'सत्य' हे धोरण अवलंबले तर समाजाला योग्य दिशा प्राप्त होईल.

दहशतवादाच्या सावटीने आंतरराष्ट्रीय पातळीवर पोखरण होऊन प्रत्येकच राष्ट्र अधोगतीकडे झुकण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. समाजातील शांतता हरविलेली आहे. गांधीजींच्या समता, बंधुता, एकता या तत्त्वांचा अभ्यास करुन अमलात आणणे गरजेचे आहे. एकिकडे तरुणाई ही स्वार्थाने गुरफटलेली आहे. अमर्यादीत हव्यास, अमर्यादीत महत्वाकांक्षा तर काही तरुणांमध्ये देशासाठी प्राण त्याग करण्याची तयारी असते. या तरुणाईने मोबाईल, फेसबुक व इतर सोशल माध्यमांच्या जाळ्यात अडकून देशप्रेम न दाखविता या देशासाठी व देशाच्या शांततेसाठी आपणास काही करता येईल का? याचा विचार करणे गरजेचे आहे.

महात्मा गांधींनी सत्यावरच अहिंसेची उपासना केली. या उपासनेला गांधीजी आत्मिक शक्ती असे म्हणतात. 'हरिजन' या साप्ताहिकात ते म्हणतात, पृथ्वीच्या पाठीवरील वस्तुमात्रेला व प्राणीमात्रेला विचाराने, शब्दाने व कृत्याने संभवणारी दुखापत टाळणे म्हणजे अहिंसा होय असे म्हणतात. अहिंसा म्हणजे हिंसा न करणे असे जरी मत असले तरी गांधीजींचे मत असे होते की, कोणाविषयी दुष्टता बाळगणे ही सुध्दा हिंसाच असते. एखाद्याला वाचेने न दुखविणे दुष्ट माणसाच्या विचाराला विरोध करण्यासाठी आपल्या आत्मबलाचा वापर करणे म्हणजे अहिंसा आहे. गांधीजी अहिंसेचे स्पटीकरण करताना त्यात अनेक प्रकारांची अहिंसा कशी धारण करावयाची असतात याचेही स्पष्टीकरण करतात. गांधीजींनी म्हटल्याप्रमाणे एखाद्याला ठार न मारणे किंवा एखाद्याचीहिंसा न करणे एवढ्याशीच आपण बांधील न राहता निषेधात्मक अंहिंसाही बाळगणे गरजेचे आहे. या निषेधात्मक अहिंसाही बाळगणे गरजेचे आहे. या निषेधात्मक अहिंसेविषयी तरुण पिढीने सतर्क असणे गरजेचे आहे. प्रत्येकच व्यक्तीने दुस–या व्यक्तीला कोणत्याही प्रकारचे कष्ट किंवा दु:ख पोहोचवू नये. आपल्या कार्य, कृतीद्वारे किंवा शब्दांद्वारे दुस–याला दु:ख होईल असे वर्तन करु नये. विधायक अहिंसेमध्ये स्वत: क्लेश, त्रास सहन करुन जेंव्हा व्यक्ती दुस–याच्या सुखासाठी झटते, दुर्बल स्त्रिया, लहान मुले किंवा दुर्बल घटक त्यांना जर कोणी त्रास दिला असेल किंवा देत असेल त्यांच्या मदतीला धावून जाणे ही विधायक अहिंसा आहे. निरपेक्ष अहिंसेमध्ये गांधीजी म्हणतात की, भ्याडपणा व हिंसा या दोन मार्गापैकी कोणता मार्ग स्वीकाराल असे मला कोणी विचारले तर मी भित्रे लोकांच्या अहिंसेपेक्षा हिंसेचा मार्ग पत्करीन कारण ही अधिक उपयुक्त व योग्य असते.

महाराष्ट्रामध्ये महानुभाव पंथ, वारकरी संप्रदाय, संत ज्ञानेश्वरांपासून संत गाडगेबाबांपर्यंत अनेक संत होऊन गेले. या संतांनी समाजसुधारणेत मोलाचा वाटा उचलला व तो ही अहिंसात्मक मार्गाने. राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय पातळीवरचे प्रश्न हे अहिंसा व सत्याग्रहाच्या मार्गाने सोडविता येतात. अशी गांधी विचारसरणी

Scanned with OKEN Scanner

केले. सत्यासाठी अहिंसेचा त्याग करावा. त्यांनी 'सत्याचे प्रयोग' या आपल्या आत्मचरित्रात सत्याचे विशद केले.

खरेतर गांधीजींनी सत्य व अहिंसा या दोन मार्गांनी आपले जीवन व्यतित केले. आज आपण भौतिक ... मागे लागलेलो आहे. सोशल माध्यमांच्या विळख्यात तरुणाई गुरफटून गेलेली आहे. महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांच्या बाबतीत परिस्थिती खूपच गंभीर बनत चाललेली आहे. ग्रंथवाचनाने, पुस्तकवाचनाने आपण ... मानसिकदृष्ट्या सक्षम होतो. हे शिक्षण आपल्या आत्मिक विकासासाठी गरजेचे आहे. याचे भान ... युवावस्था हरवून बसलेली आहे. हे घटक केवळ जीवन जगण्यासाठी उपयुक्त नाहीत. ते आपणास ... जीवन जगावेगळे याचे ज्ञान देतात. या घटकांचा प्राधान्यतेने जीवनात उपयोग करुन घेणे गरजेचे आहे. ... मागे जाऊन आपण इतिहासाकडे डोकावले तरी सुध्दा अन्याय, अनिती यांमुळे यश प्राप्त होत ... त्यासाठी गांधीजींचे 'सत्य' हे धोरण अवलंबले तर समाजाला योग्य दिशा प्राप्त होईल.

दहशतवादाच्या सावटीने आंतरराष्ट्रीय पातळीवर पोखरण होऊन प्रत्येकच राष्ट्र अधोगतीकडे झुकण्याची ... नाकारता येत नाही. समाजातील शांतता हरविलेली आहे. गांधीजींच्या समता, बंधुता, एकता या ... अभ्यास करुन अमलात आणणे गरजेचे आहे. एकिकडे तरुणाई ही स्वार्थाने गुरफटलेली आहे. ...दीत हव्यास, अमर्यादीत महत्वाकांक्षा तर काही तरुणांमध्ये देशासाठी प्राण त्याग करण्याची तयारी असते. तरुणाईने मोबाईल, फेसबूक व इतर सोशल माध्यमांच्या जाळ्यात अडकून देशप्रेम न दाखविता या ... व देशाच्या शांततेसाठी आपणास काही करता येईल का? याचा विचार करणे गरजेचे आहे.

महात्मा गांधींनी सत्याबरोबर अहिंसेची उपासना केली. या उपासनेला गांधीजी आत्मिक शक्ती असे ... 'हरिजन' या साप्ताहिकात ते म्हणतात, पृथ्वीच्या पाठीवरील वस्तुमात्रेला व प्राणीमात्रेला विचाराने, ... व कृत्याने संभवणारी दुखापत टाळणे म्हणजे अहिंसा होय असे म्हणतात. अहिंसा म्हणजे हिंसा न असे जरी मत असले तरी गांधीजींचे मत असे होते की, कोणाविषयी दुष्टता बाळगणे ही सुध्दा हिंसाच ... एखाद्याला वाचेने न दुखविणे दुष्ट माणसाच्या विचाराला विरोध करण्यासाठी आपल्या आत्मबलाचा ... म्हणजे अहिंसा आहे. गांधीजी अहिंसेचे स्पटीकरण करताना त्यात अनेक प्रकारांची अहिंसा कशी ...ावयाची असतात याचेही स्पष्टीकरण करतान. गांधीजींनी म्हटल्याप्रमाणे एखाद्याला ठार न मारणे किंवा ...हिंसा न करणे एवढ्याशीच आपण बांधील न राहता निषेधात्मक अहिंसाही बाळगणे गरजेचे आहे. या ... अहिंसाही बाळगणे गरजेचे आहे. या निषेधात्मक अहिंसेविषयी तरुण पिढीने सतर्क असणे गरजेचे ...येकच व्यक्तीने दुस–या व्यक्तीला कोणत्याही प्रकारचे कष्ट किंवा दुःख पोहोचवू नये. आपल्या कार्य, ... किंवा शब्दांद्वारे दुस–याला दुःख होईल असे वर्तन करु नये. विधायक अहिंसेमध्ये स्वतः क्लेश, ... करुन जेंव्हा व्यक्ती दुस–याच्या सुखासाठी झटते, दुर्बल स्त्रिया, लहान मुले किंवा दुर्बल घटक ... कोणी त्रास दिला असेल किंवा देत असेल त्यांच्या मदतीला धावून जाणे ही विधायक अहिंसा आहे. ... अहिंसेमध्ये गांधीजी म्हणतात की, भ्याडपणा व हिंसा या दोन मार्गापैकी कोणता मार्ग स्वीकाराल असे ... विचारले तर मी भित्रे लोकांच्या अहिंसेपेक्षा हिंसेचा मार्ग पत्करीन कारण ही अधिक उपयुक्त व ...ने.

महाराष्ट्रामध्ये महानुभाव पंथ, वारकरी संप्रदाय, संत ज्ञानेश्वरांपासून संत गाडगेबाबांपर्यंत अनेक संत ... या संतांनी समाजसुधारणेत मोलाचा वाटा उचलला व तो ही अहिंसात्मक मार्गाने. राष्ट्रीय व ...य पातळीवरचे प्रश्न हे अहिंसा व सत्याग्रहाच्या मार्गाने सोडविता येतात. अशी गांधी विचारसरणी

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Issue 164 - Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
March-2019

(B) COLLEGE PHALTAN

ही दुर्बल व भेकड लोकांची नाही. त्यांच्या मते राष्ट्रा–राष्ट्रांत सलोख्याचे, प्रेमाचे, सहकार्याचे संबंध तर युध्दे, महायुध्दे टळतील. अहिंसात्मक मार्गाने शांतता व सुव्यवस्था निर्माण होईल. अर्थातच ासारखी समस्या जेंव्हा आपणासमोर येऊन उभी राहते तेंव्हा परिस्थितीनुसार हिंसा करावी का? प्रश्न आहेच परंतु, गांधींनी आपणास नैतिक व तत्वज्ञानात्मक अधिष्ठान प्राप्त करुन दिले.

विसाव्या शतकाकडे जग झेपावत असताना भारताला मागे राहून चालणार नाही. आधुनिक विज्ञान च्या सहाय्याने गांधींच्या या तत्वाचा विसर पडल्याचे दिसून येत आहे. गांधीजींच्या 'खेड्यांकडे चला' ना आपण अहिंसात्मक मार्गाने वाटचाल करुन सर्वांच्या हाताला काम मिळाले पाहिजे व श्रमाला झाली पाहिजे, कारण आधुनिक विज्ञान व तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने विकसीत झालेल्या या पिढीस ांचा विसर पडल्याचे दिसून येते. म्हणून प्रत्येक हातास काम हा दृष्टिकोन विकसीत करुन आजच्या ची उभारणी व रचना करणे, आखणे गरजेचे आहे.

चारांची लढाई ही विचारांनी लढली पाहिजे. बंदुकीने व दहशतवादाने प्रश्न सुटणार नाही. तो भीर बनत चाललेला आहे. शांती व संयमाने जशास तसे उत्तर देऊन त्यांचे मतपरिवर्तन गांधी करु शकते.

ातच प्रत्येकच तत्वास काही मर्यादा पडतात, त्याचप्रमाणे या अहिंसा तत्वासही अनेक मर्यादा ण समोरील राष्ट्र जेंव्हा आपल्या राष्ट्राच्या विरोधात उभे राहील तेंव्हा ही अहिंसा प्रभावी ठरु शकेल अहिंसेबाबतीत एकमत विचारात घ्यावेसे वाटते ते म्हणजे सर्वजण जेंव्हा शस्त्र टाकून परस्पर प्रेमास तर आम्हीही त्यांना मिठी मारु. पण जर सर्वांनी लढाईची तयारी केली तर आपणासही ती करावी रण अशी आक्रमक भूमिका आपण घेणार नाही तेंव्हा ती आत्महत्या ठरेल असे सावरकर म्हणतात. ज्य व सुराज्य निर्मितीसाठी परिस्थितीनुरूप छत्रपती शिवाजी महाराजही लढलेले आहेत. हे मत ावे लागेल. परंतु तत्पुर्वी आजच्या तरुणाईने ही विचारसरणी अवलंबून जीवन सुखकर करण्याचा ा लागेल.

ील बी. बी. व चव्हाण उर्मिला :– भारतीय राजकीय विचार, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर,
कर कुमार :– गांधी नावाचे गूढ, महाराष्ट्र टाईम्स १ जानेवारी २०००
डकर र. प. :– भारतीय राजकीय विचारवंत, विद्या प्रकाशन, नागपूर २००५

Scanned with OKEN Scanner

N.S. (B) COLLEGE PHALTAN

"Education through self-help is our motto"-Karmaveer

Rayat Shikshan Sanstha's,

RAJARSHI CHHATRAPATI SHAHU COLLEGE, KOLHAPUR.

(NAAC Re- accreditation 'A' grade with CGPA 3.07)

&

PROF. N. D. PATIL PRATISHTHAN, KOLHAPUR.

Jointly Organized One-Day National Seminar on

MAHATMA GANDHI'S THOUGHTS AND IT'S PRESENT RELEVANCE

by

Department of Social Sciences

(Economics , Sociology, History & Political Science)

Tuesday, 12th March, 2019.

CERTIFICATE

This is to certify that, Prof. / Dr. / ~~Mr./Mrs.~~ कु. रायते तेजश्री विष्णु

of सोलापूर विद्यापीठ

Participated / worked as a Resource Person / Chairperson in National Level Seminar held on Tuesday, 12th March, 2019.

He / She has presented a Research Paper entitled महात्मा गांधींचे सत्य व अहिंसात्मक विचार व आजची गरज

Dr. Patil T. S. Secretary, Prof. N.D. Patil Pratishthan, Kolhapur.	Smt. Kannade M. K. Co-coordinator	Smt. Dr. Desai M. B. Coordinator	Dr. Sathe S. M. IQAC, Chairman	Dr. Khilare C. J. Principal R. C. Shahu College, Kolhapur.

Scanned with OKEN Scanner

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

Impact Factor – 6.261
ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 Special Issue – 126

Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects

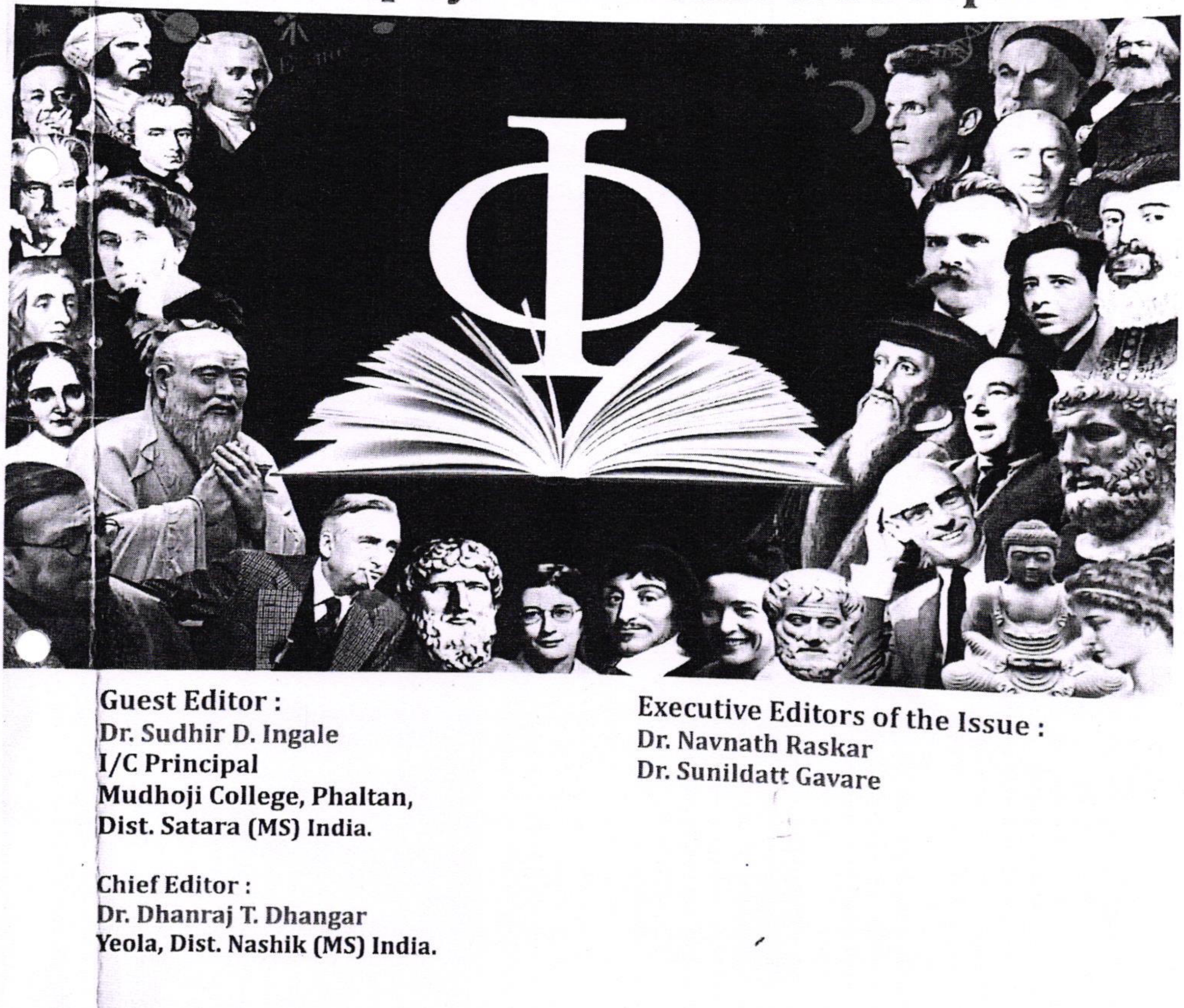

Guest Editor :
Dr. Sudhir D. Ingale
I/C Principal
Mudhoji College, Phaltan,
Dist. Satara (MS) India.

Executive Editors of the Issue :
Dr. Navnath Raskar
Dr. Sunildatt Gavare

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN Pub...

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue - 126

Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects

Guest Editor :
Dr. Sudhir D. Ingale
I/C Principal
Mudhoji College, Phaltan
Dist. Satara [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:
Dr. Navnath K. Raskar
Dr. Sunildatt Gavare

Chief Editor :
Dr. Dhanraj Dhangar

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	A Poor, Old, Distant Cousin	Prof. (Dr.) S. M. Bhave	05
2	Impact of Philosophy on Society : An Overview	Dr.Khalil N. Sayyed	07
3	Methods and Techniques for Philosophical Teaching	Dr. Rahul Kapure	11
4	Mystical Philosophy of Karl Jaspers	Dr. Amita Valmiki	14
5	Components of Field Work in Research of Social Sciences	Mr. Manoj Patil	18
6	Problems of Extension of Philosophy	Asst. Prof. Rajani A. Kale	22
7	Research Manners in Social Sciences	Pandharinath Kadam	26
8	Social Philosophy in Rajarshi Shahu Maharaj	Dr. Ganesh Belambe	29
9	Mental Health among Professional and Non-Professional Women: A Clinical Study	Prof. Dr. S. H. Mohite	32
10	A Study of Mental Health among Persons in Swadhyayee and Non-Swadhyayee Pariwar	Dr. Ajit B.Chandanshive	35
11	A Study of Mental Health among Social Media Users and Social Media Non-Users	Dr. Abhimanyu Dhormare	40
12	Health and Psychosocial Problems	Dr. S.D.Patankar	45
13	Youth Suicide In India	Dr. D. P. Pawar	49
14	Study of Social Support and Mental Health of College Students	Dr. Sandip M. Mali	55
15	Psychosocial Problem Occupational stress and Job Satisfaction of Advocates	Dr. Dilip Shivane	61
16	Social & Personality Development in Adolescence with Special Reference to Psychosocial Problems in the Development of Self Concept & Parent-Child Relationship	Mr. Rajratna D. Khillare	69
17	Current Trends in Higher Education	Prof. Munguskar Anil Madhukar	72
18	Social Maturity & Emotional Maturity Among Adolscents	Smt. Manbhav S. D.	75
19	Shopping Mall as an Epitome of Employment	Mr Santosh S. Pawar	79
20	Impact of Humanism in the Untouchable by Mulk Raj Anand and the Color of Water by James Mcbride on the Students : A Comparative Study	Mr. Shinde Ashok Krishna	82
21	नीतिशास्त्र के सिद्धांत : एक विवेचन	डॉ.अतुल महाजन	88
22	पद्धतीशास्त्र : एक तात्त्विक विवेचन	डॉ. मोहित टंडन	95
23	तत्त्वज्ञान परिशीलन	डॉ.शर्मिला वीरकर	99
24	तत्त्वज्ञान विस्तारासाठी कृती कार्यक्रम	डॉ.जयसिंग सावंत	103
25	तत्त्वज्ञान विस्तारासाठी कृती कार्यक्रम	डॉ.बाळासाहेब मुळीक	107
26	तत्त्वज्ञान – अध्ययन-अध्यापन- संशोधन	डॉ.सुधीर पिटके	115
27	तत्त्वज्ञान विस्तारासाठी कृती कार्यक्रम	डॉ.अमन बगाडे	119
28	तत्त्वज्ञानाविषयी विद्यार्थी, पालक, समाज यांची धारणा	डॉ.बालाजी नरवाडे	123
29	तत्त्वज्ञान विस्तारातील अडचणी	प्रा.धनराज हाडुळे	127
30	तत्त्वज्ञानाविषयी विद्यार्थी, पालक, समाज यांची धारणा	प्रा.कामाजी सूर्यकांत	131
31	मानवी जीवनात तत्त्वज्ञानाची आवश्यकता	गंगाधर सोनकांबळे	133

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

Scanned with OKEN Scanner

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.261 | February-2019
Special Issue 126 : Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects
UGC Approved Journal

32	पुस्तक निर्मिती : एक ज्ञानयज्ञ	डॉ.वेदप्रकाश डोणगावकर	135
33	तत्त्वज्ञानाची आवश्यकता	डॉ.सुनिलदत्त गवरे	139
34	तत्त्वज्ञान विषय : वास्तव आणि अपेक्षा	डॉ.ग्यानदेव उपाडे	143
35	तत्त्वज्ञानाविषयी विद्यार्थी, पालक, समाज यांची धारणा व तत्त्वज्ञान विषय वाढविण्यासाठी केले जाणारे प्रयत्न	रोहित गायकवाड	146
36	तत्त्वज्ञानाविषयी विद्यार्थी, पालक, समाज यांची धारणा	डॉ.विजय शेंडगे	149
37	मानवी जीवनात तत्त्वज्ञानाचे महत्त्व, समस्या आणि उपाय	सचिन राजपूत	153
38	तत्त्वज्ञान विस्तारातील अडचणी : भारतीय तत्त्वज्ञानाच्या संदर्भात	कु.स्वाती भोंगळे	157
39	तत्त्वज्ञान अध्यापनातील अडचणी व उपाय	प्रा.एस.पी.मुलाणी	161
40	तत्त्वज्ञान विस्तारासाठी कृती कार्यक्रम	डॉ.किरण सावे	164
41	तत्त्वज्ञान विस्तारासाठी कृती कार्यक्रम	डॉ.सचिन खोकले	167
42	तत्त्वज्ञान विस्तारातील अडचणी व उपाय	प्रा.संजय सोनावणे	170
43	तत्त्वज्ञान विस्तारातील अडचणी व उपाय	डॉ.माधव कांबळे	173
44	तत्त्वज्ञान विषयाची सद्यस्थिती व उपाय	प्रा.अर्चना अरसुडे	176
45	तर्कशास्त्राचे मानवी जीवनातील स्थान	डॉ.सुनिल भोईटे	178
46	अध्यापन पद्धती आणि तत्त्वज्ञान अभ्यास	प्रा.मोनालिसा खानोरकर	182
47	तत्त्वज्ञान शिक्षणाची पूर्व अट : मनाची मशागत	डॉ.सुचित्रा नाईक	186
48	तत्त्वज्ञानाच्या अध्यापनासाठी क्रमिक व संदर्भीय साहित्य निर्मिती	डॉ.मुबीन शेख	191
49	तत्त्वज्ञान विस्तारातील अडचणी	डॉ.अनिल शिंदे	194
50	तत्त्वज्ञानाची अध्यापन पद्धती व तंत्र : कांट आणि रसेल संदर्भात थोडक्यात विचार	प्रा.कृष्णात नगरे	196
51	सामाजिक शास्त्रातील संशोधन पद्धती	प्रा.जयश्री शेंडे	202
52	मानवी जीवनातील शैक्षणिक तत्त्वज्ञानाचा विचार	गौरी गायकवाड	207
53	महाराष्ट्रातील तत्त्वज्ञानाच्या अध्ययन – अध्यापन विस्तारीकरणातील भाषाविषयक समस्या आणि उपाय	श्रीनिवास हेमाडे	211
54	वैज्ञानिक संशोधनातील अनिवार्य घटक : सिद्धांत कल्पना	प्रा.विलास टिळेकर	216
55	सॉक्रिटीक मेथड –आजच्या काळात तत्त्वज्ञानातील अध्यापन आणि संशोधनाच्या दृष्टीने महत्त्व	डॉ.एन. के. रासकर	219
56	सामाजिक शास्त्रातील संशोधन पद्धती	प्रा.शितल येरुळे	223
57	सामाजिक शास्त्रातील संशोधन पद्धती	प्रा.वैशाली दिवे	225
58	सामाजिक शास्त्रातील संशोधन पद्धती	डॉ.सखाराम गोरे	228
59	संशोधन विषयाची निवड व महत्त्व	डॉ. प्रभाकर कीर्तनकार	233
60	संशोधन प्रक्रिया : एक दृष्टीक्षेप	श्री विनोद पाटील	235
61	संशोधनातील समस्या निवडीचे महत्त्व	डॉ. तेजश्री रायते	238
62	समाजशास्त्रीय संशोधनातील अडथळे व उपाय	प्रा. हरिदास गावीत	241
63	संशोधनाचे स्वरूप आणि पद्धती	प्रा. संदीप चपटे	244
64	सामाजिक शास्त्र संशोधनातील गुणात्मक अहवाल लेखनाचे महत्त्व	दिनेश शेळके	248
65	सामाजिक संशोधनातील प्रश्नावलीचे महत्त्व	प्रा. एस. डी. पवार	252
66	इतिहास संशोधनातील एक नवीन विचारप्रवाह सबाल्टर्न इतिहास (वंचितांचा इतिहास)	डॉ. संतोष कदम	256

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.261
Special Issue 126 : Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects | February-2019
UGC Approved Journal

संशोधनातील समस्या निवडीचे महत्व

डॉ. तेजश्री विष्णू रायते
विभाग प्रमुख – तत्वज्ञान विभाग
नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय, फलटण

प्रास्ताविक :—

सर्वसाधारणपणे सामाजिक शास्त्रातील विविध विषयांवर संशोधनाचे कार्य हातात घेणेपूर्वी आजच्या संशोधक विद्यार्थ्यांमध्ये, प्राध्यापकांमध्ये संशोधन म्हणजे काय, संशोधन कसे करावे, संशोधनाची प्रक्रिया ही खूप क्लिष्ट, अवघड व जटील आणि गुंतागुतीची असते असे मत किंवा प्राथमिक अंदाज बनलेले आहेत, अर्थात ते खरेही आहे.

उद्देश –

सामाजिक शास्त्रे विषयांतर्गत विषयाच्या निवडीप्रमाणे संशोधकास समस्येची मांडणी व आखणी करावी लागते. या संशोधनामध्ये समस्या निवड किंवा विषयाच्या निवडीचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. संशोधन हा शब्द इंग्रजी भाषेतील रिसर्च या पर्यायी शब्दापासून आला आहे. या शब्दाचा भाषिक अर्थ म्हणजे एखाद्या हरविलेल्या वस्तुचा शोध घेऊन जर ती मिळाली नाही तर तिचा पुन्हा शोध घेणेची प्रक्रिया आहे. एकोक म्हणतात की, संशोधन समस्येचे योग्य निर्धारण हीच संशोधनाची अर्धी यशस्वीता आहे. हे एकोक यांचे म्हणणे अगदी रास्त आहे, कारण समस्या निवडीने किंवा संशोधनातील विषय निवडीने संशोधनास योग्य दिशा मिळते, तसेच संशोधनास मर्यादा लाभते. जे. डब्लू. बेस्ट यांचे मते संशोधन ही अधिक व्यवस्थित क्रियात्मकता आहे कि जी नव्याचा शोध घेते व संघटीत ज्ञानाला अधिक विकसीत करते. संशोधन करताना विशिष्ट पाय–यांनी ते पूर्ण करावे लागते. यामध्ये समस्यासूत्रनाची पहिली पायरी व सर्वात महत्वाची पायरी आहे. त्यानंतर समस्येचा पूर्वेतिहास गृहीतके किंवा अभ्युपगम, संशोधन आराखडा, नमुना निवड, तथ्यांचे संकलन, वर्गीकरण, तथ्य विश्लेषण, निष्कर्ष तसेच अहवाल लेखन महत्वाचे व गरजेचे आहे. यामध्ये कोणत्या प्रकारचे संशोधन करावयाचे आहे हे निश्चित करण्यासाठी संशोधनाचा विषय निवडण्याने संशोधनाची सरुवात होते. यासाठी संबंधीत समस्येचे संपूर्ण स्वरुप समजावून घ्यावे लागते. ब–याचवेळा संशोधक विद्यार्थ्यांमध्ये शोधनिबंध लिहिताना त्यात समस्या निवड किंवा विषय निवड यामध्ये ते गोंधळून जातात. समस्येची निवड संशोधकाला संशोधनाची दिशा देऊन जाते. विषय निवडीने नेमके काय शोधून काढावयाचे आहे, तथ्ये कशी संपादित करावयाची याची निश्चिती मिळते. टाऊन शेड यांचे मते संशोधन समस्या म्हणजे निराकरणासाठी समोर आलेला प्रश्न होय.

समस्या समजाऊन घेण्याने संशोधनाची दिशा आपणास प्राप्त होते हे अगदी योग्य आहे, कारण समस्या निवडताना आपण जर त्या समस्येचे किंवा विषयाचे पुरेसे साहित्य उपलब्ध आहे की नाही हे पाहणे गरजेचे ठरते. ब–याच वेळा अनेक नवीन संशोधकांमध्ये अशी समस्या निर्माण होताना दिसत आहे की, जेंव्हा संशोधनासाठी एखादी समस्या निवडली जाते त्या समस्येचे पुरेसे साहित्य, ग्रंथ उपलब्ध नसल्याने पुन्हा ती समस्या सोडून दुस–या विषयाची निवड करावी लागते. अशाने वेळ व पैसा दोन्हीही वाया जाण्याची शक्यता नाकारता येत नाही.

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Special Issue 126 : Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects | Impact Factor - (SJIF) - 6.261 | February-2019
UGC Approved Journal

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

व्याप्ती –

ग्रीनो १९७७ यांच्या मते एखाद्या समस्येचे उत्तर शोधताना आपली विचार प्रक्रिया कार्यान्वित होते, म्हणजेच त्याचे प्रतिरुपन आपल्यापुढे तयार होते. म्हणूनच समस्या निवडताना संशोधकाने काही घटक विचारात घेणे क्रमप्राप्त ठरेल.

१. संशोधनाचा उददेश काय व कोणता आहे.
२. संशोधकाला संशोधन विषयाचे पूर्व ज्ञान किती आहे
३. अतिरिक्त माहिती जाणून घेण्याची का गरज आहे.
४. विषयाचे मूल्यमापन कोणत्या पध्दतीने निश्चित करावे लागेल
५. आवश्यक तथ्य, सामग्री संकलित केली जाऊ शकते का
६. संशोधकाला पुरेसा वेळ व पैसा उपलब्ध असणे

समस्या मांडणीचे निकष –

1. अतिक्षुल्लक समस्येची संशोधनासाठी निवड करु नये.
2. अतिव्यापक अथवा ढोबळ समस्या निवडण्याऐवजी मर्यादीत आणि व्यापक समस्या निवडावी.
3. समस्येची मांडणी अशी असावी की, ज्यामध्ये प्रायोगिक पध्दतीने त्या समस्येचे उत्तर शोधणे शक्य होईल. जी समस्या परिक्षणक्षम नसते ती समस्या शास्त्रीय आहे असे म्हणता येणार नाही. उदा. लहान मुलांनी कायम खरे बोलावे का ? स्त्रियांसाठी सरकारी कार्यालयामध्ये राखीव जागा असाव्यात का, अशा प्रशांची उत्तरे संशोधनाच्या प्रक्रियेने मिळविणे अशक्य आहे असे प्रश्न संशोधनासाठी निवडू नयेत.
4. समस्या ही नवीन विषयांशी संबंधीत असावी. आधीच्या संशोधकांना पुन्हा पुन्हा परीक्षण केलेली समस्या नवीन संशोधनासाठी निवडू नये, म्हणजे वेळ, पैसा आणि मानवी शक्ती यांचा अपव्यय टळतो.

संशोधन समस्या अधिक अर्थपूर्ण होण्यासाठी आवश्यक अटी –

१. अध्ययन विषयात पध्दतशीरपणे मग्न होणे –

संशोधन कार्य पूर्ण होण्यासाठी संशोधकाने क्षेत्र निश्चित करणे, ही आवश्यक बाब आहे. संशोधनाचा विषय हा संशोधकाच्या जिज्ञासेतून व आवडीतून निवडलेला असावा. संशोधकाने पध्दतशीरपणे निरीक्षण व परीक्षण करावे. केलेले संशोधन हे कोणत्या संशोधन प्रवर्गात मोडणार आहे याचा विचार करणे गरजेचे आहे.

२. संबंधीत विषयाच्या साहित्याचा वापर –

विषय निश्चिती झाल्यानंतर पुढील टप्पा म्हणजे साहित्य संकलिक करणे होय. आपल्या संशोधन विषयासंबंधीत साहित्याचे अधिकाधिक वाचन व चिंतन करणे आवश्यक असते. यासाठी संशोधकास महाविद्यालयीन तसेच विद्यापीठीय ग्रंथालयाचा उपयोग तर होईलच, परंतु इंटरनेटच्या माध्यमातूनही आपल्या संशोधनाची व्याप्ती अभ्यासता येईल, त्यासाठी संबंधीत विषयाचे अधिकाधिक वाचन करणे गरजेचे आहे.

३. तज्ञ व अनुभवी व्यक्तींबरोबर चर्चा –

संशोधकाने एखादी समस्या संशोधनासाठी निवडताना त्याला मार्गदर्शनाची गरज दिशादर्शक संशोधकाने एखादी समस्या संशोधनासाठी निवडताना त्याला मार्गदर्शनाची गरज दिशादर्शक ठरते. आपल्या अध्ययन व अध्यापन क्षेत्रातील अनुभवी व तज्ञ व्यक्तींबरोबर केलेली चर्चा वेगवेगळ्या संशोधन पैलूवर नजर टाकणारी ठरते.

Scanned with OKEN Scanner

४. निरीक्षण –

विषयाची निवड केल्यानंतर जी माहिती निरीक्षणाने प्राप्त होते ती माहिती संशोधकाने प्राप्त करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे, त्यासाठी प्रत्यक्ष अनुभव गोळा करावे लागतात. त्यासाठी वैज्ञानिक दृष्टिकोन असणे गरजेचे आहे.

संशोधन कार्य करताना अनेक संशोधन पध्दती उपयोगाच्या ठरतात. त्यात ऐतिहासिक, तत्वज्ञानीय, तुलनात्मक, स्पष्टिकरणात्मक, मनोवैज्ञानिक, सांख्यिकीय, निगमनात्मक व आगमनात्मक, अतिभौतिकी, विधी संस्थात्मक व समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती उपयोगी ठरतात.

संशोधन कार्य हे जहाजाप्रमाणे असते. म्हणूनच समस्यासूत्रणाचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. समस्यासूत्रण हे दिशादर्शक असते. समस्यासूत्रणाने संशोधन कार्यात येणा–या अडचणी टाळता येतात म्हणूनच संशोधनकर्त्याने समस्येची निवड करताना संशोधन कार्या इतकेच महत्व देणे गरजेचे ठरेल त्यामुळे संशोधन कार्य हे उत्कृष्ट व दर्जात्मक होईल.

संदर्भ –

१. डॉ. क–हाडे बी. एम. (२०१२) : शास्त्रीय संशोधन पध्दती, पिंपळापुरे प्रकाशन नागपूर
२. डॉ. देसाई भरत, डॉ. अभ्यंकर शोभना (२०००) : प्रायोगिक मानसशास्त्र व संशोधन पध्दती, नरें प्रकाशन, पुणे
३. Kothari C.R. (1995) : Research Methodology : Winley Eastern, New Delhi
४. Dr. Sam Kunniporampil (2017) : Step by step Research Corner stone press bub.

RESEARCH JOURNEY

Scanned with OKEN Scanner

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

COSMOS IMPACT FACTOR

HOME | INDEXED JOURNAL | SUGGEST JOURNAL | REQUEST IF | DOWNLOAD LOGO | REVIEWER | Search

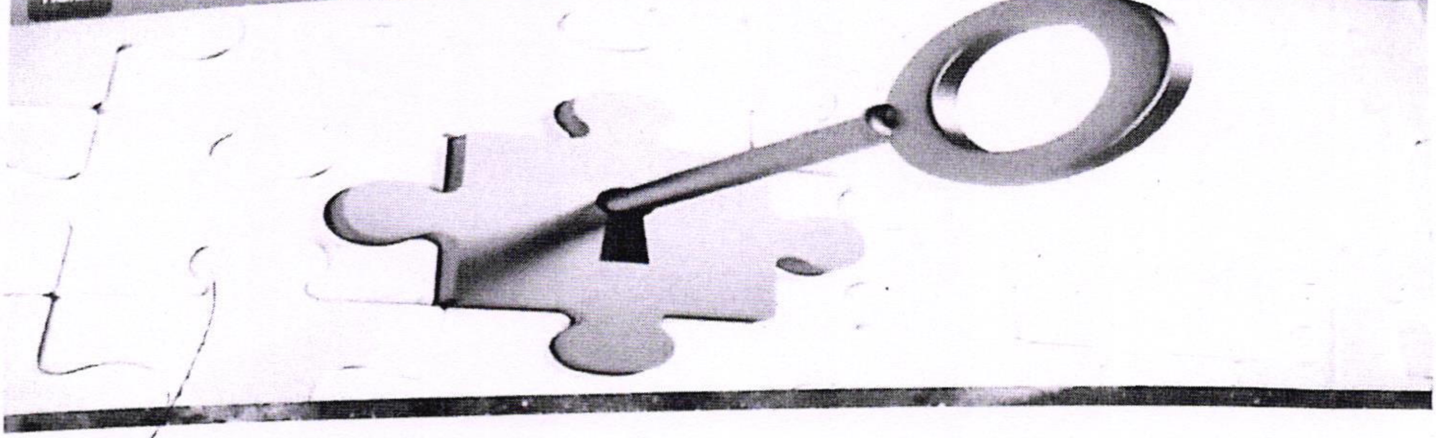

Category

- INDEXED JOURNAL
- SUGGEST JOURNAL
- JOURNAL IF
- REQUEST FOR IF
- DOWNLOAD LOGO
- CONTACT US

SAMPLE CERTIFICATE

SAMPLE EVALUATION SHEET

Journal Detail

Journal Name	RESEARCH JOURNEY
ISSN/EISSN	2348-7143
Country	IN
Frequency	Quarterly
Journal Discipline	General Science
Year of First Publication	2014
Web Site	www.researchjourney.net
Editor	Prof. Dhanraj Dhangar & Prof. Gajanan Wankhede
Indexed	Yes
Email	researchjourney2014@gmail.com
Phone No.	+91 7709752380
Cosmos Impact Factor	2015 : 3.452

GIF
GLOBAL IMPACT FACTOR

Institute for Information Resources

News Updates: Now Annual membership fee is of just 40 Dollars for existing members and they can renew their membership for year 2016

Get Involved

Recently Added Journals

Research Journey	
ISSN	2348-7143
Country	India
Frequency	Quarterly
Year publication	2014-2015
Website	researchjourney.net
Global Impact and Quality Factor	
2014	[illegible]
2015	[illegible]

TOGETHER WE REACH THE GOAL

SJIF Evaluation on Request

SJIF Publishers Panel

SJIF Journal Rank

Research Journey

SJIF 2016:

Under evaluation

SWATIDHAN PUBLICATIONS For Details Visit To : www.researchjourney.net Price : Rs. 800/-

Scanned with OKEN Scanner

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

।। विद्यामर्थं च साधयेत् ।।

Phaltan Education Society's

MUDHOJI COLLEGE, PHALTAN

Re-accredited by NAAC with 'B+' grade (C.G.P.A.2.59)

Affiliated to Shivaji University, Kolhapur

& Maharashtra Tattvadnyan Parishad Jointly Organized

One Day International Seminar

On Teaching, Research & Extension in Philosophy : Problems & Prospects

CERTIFICATE

This is to Certify that Dr./~~Prof.~~/~~Mr.~~/~~Mrs.~~/~~Ms.~~ तेजश्री रायते

Of नामदेवराव सुर्यवंशी (बेडके) कॉलेज, फलटण has participated and presented a paper entitled संशोधनातील समस्या निवडीचे महत्व at International Seminar held on 18th Feb. 2019 at Mudhoji College, Phaltan, Dist. Satara, Maharashtra (India)

Dr. Sunildatt Gavare Acting President Maharashtra Tattvadnyan Parishad	ना.त्र्यं.कुंभार Dr. Nagorao Kumbhar President, Maharashtra Tattvadnyan Parishad	Dr. Navnath K.Raskar Convener Head, Dept. of Philosophy	Dr. Sudhir D. Ingale I/c Principal Mudhoji College, Phaltan

Scanned with OKEN Scanner

शताब्दी महोत्सव

D.P. Bhosale College, Koregaon

Tal. Koregaon, Dist. Satara (MS), INDIA
(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
NAAC Re-accredited 'A' Grade (CGPA 3.12)
ISO 9001:2015 Certified

COLLEGE PHALTAN

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue – 171 (B)

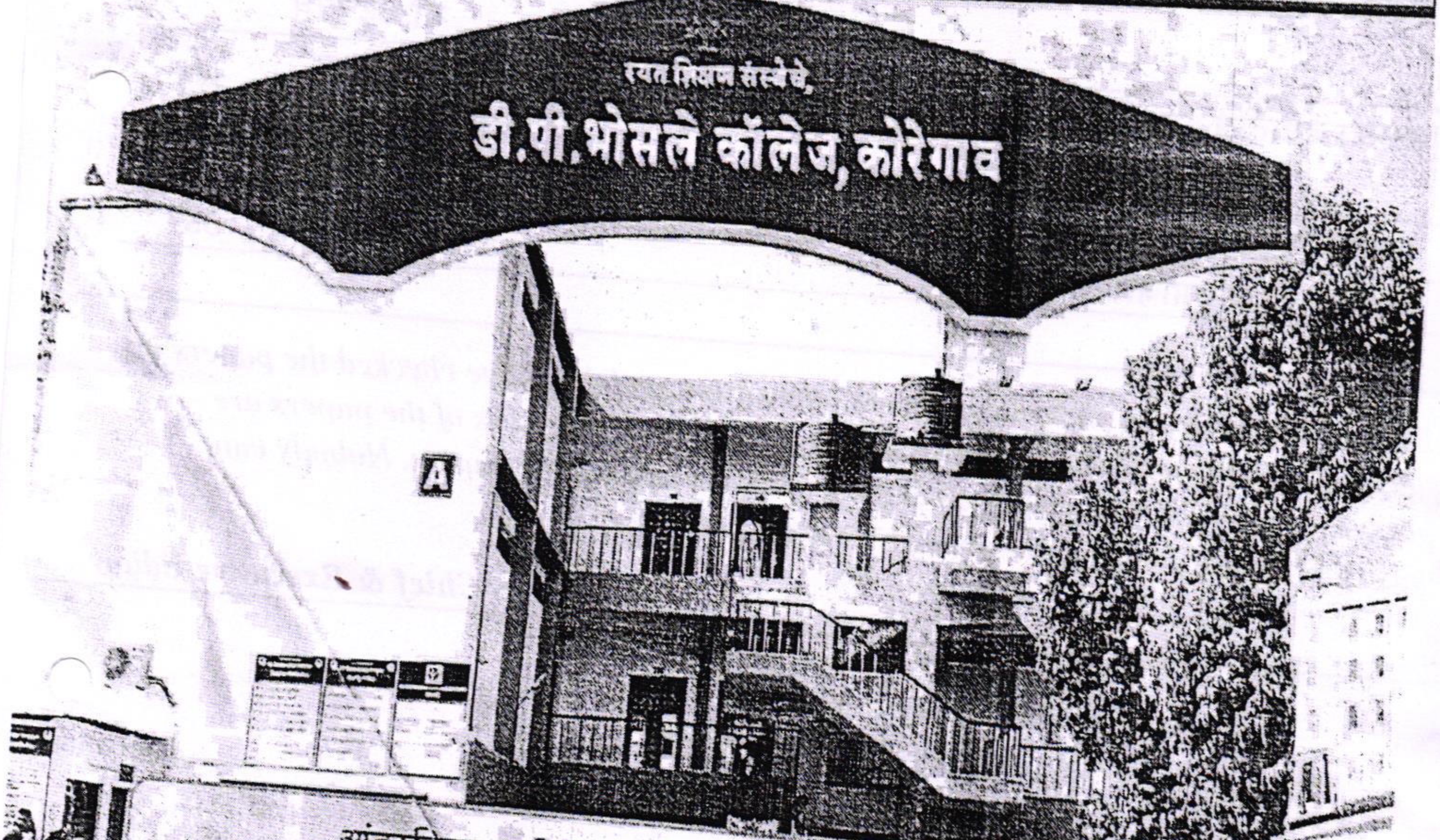

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय परिषद स्मरणिका

भटक्या विमुक्तांच्या श्रमसंस्कृतीचे कला व साहित्यातील प्रतिबिंब

अतिथी संपादक
डॉ.व्ही. एस. सावंत
प्राचार्य
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. बी. एस. चव्हाण
प्रमुख, पदवी व पदव्युत्तर मराठी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती एम. एस. देठे
डॉ. व्ही. व्ही. नावडकर

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

Details Visit To : www.research

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171 (B)- भटक्या विमुक्तांच्या श्रमसंस्कृतीचे कला व साहित्यातील प्रतिबिंब
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
March-2019

भटके-विमुक्त जमाती—मराठी साहित्य आणि चित्रपटातील दर्शन

डॉ.सतेज दणाणे,
एन.एस.कॉलेज,फलटण
मो.९४०४८६१४२७

प्रास्ताविक:

हजारो वर्षांपासून केवळ परंपरेने पोटाच्या उदरनिर्वाहासाठी भटके जीवन जगत असलेला समाज, देवदेवता, पशुपक्षी,जिवावरच्या कला आणि कष्टमय व्यवसाय करणारे आणि स्वतःचे सांगायलाही कोणतेच गाव नसलेल्या जमाती या 'भटक्या जमाती' म्हणून ओळखल्या जातात. यांना ब्रिटिशांनी 1871 च्या कायद्यानुसार गुन्हेगार म्हणून घोषित करून बंदिस्त केले होते. 31 ऑगस्ट 1972 रोजी पंडित नेहरूंनी त्यांना या कायद्यातून मुक्त केले. त्यानंतर या जमातींना विमुक्त भटक्या जाती असे संबोधण्यात आले.

प्रस्तुत शोधनिबंधात भटक्या-विमुक्तांचे मराठी साहित्यातून व मराठी चित्रपटातून घडलेल्या दर्शनाचा विचार अपेक्षित आहे.

मराठी साहित्य:

मराठी साहित्यात अण्णा भाऊ साठे,शंकरराव खरात यांच्या पासून जनाबाई गि-हे,विमल मोरे यांच्यापर्यंतच्या लेखकांनी भटक्या जमातीच्या जीवनाचे चित्रण केलेले आहे. भटक्याच्या मुबलक जाती आहेत, परंतु काही ठराविक जमातींचेच चित्रण मराठी साहित्यात झालेले आढळते. याच जमातीमधील शिक्षण घेऊन सुशिक्षित झालेल्या तरुणांनी आपल्याला आलेल्या आत्मभानातून आपल्या समाजाचे वास्तव जीवन रेखाटण्याचा प्रयत्न केला आहे.अपवाद व्यंकटेश माडगूळकर,चारुता सागर, अण्णाभाऊ साठे,शंकरराव खरात यांनी आपल्या जाती-जमाती बाहेर जाऊन साहित्याच्या माध्यमातून अनेक भटक्या जमातीचे दर्शन घडविण्याचा प्रयत्न केला आहे.

भटके-विमुक्त:

भटके-विमुक्त म्हणून ज्यांचा उल्लेख केला जातो, असे- गोंधळी, वाघ्या-मुरळी, रावळ, आराधी, जोगती, नाथजोगी, गोसावी,मरीआईवाले, भोपे, बैरागी व भराडी, गोपाळ,दांगट! मैराळ,डवरी, गोसावी, नंदीबैलवाला, अस्वलवाले- दरवेशी, रायरंद!कोल्हाटी, मदारी, गारुडी, चित्रकथी, बहुरूपी, डोंबारी,मारवाडी, भाटी, कठपुतलीवाला, कडकलक्ष्मीवाले,आराधी, मेंढगी जोशी,कुडमुडे जोशी,पोपटवाला, ठोके जोशी, वासुदेव,मनकवडे, डमरुवाले, जोशी सरोदे, फासेपारधी, हरण पारधी, भिल्लपारधी, वैदू, बेरड, नंदीवाले, वडार, पाथरवट, बेलदार, शिकलगार, कैकाडी,कुंचाकोरवी, वाघरी, काशीकापडी, ओतारी, तांबटकरी, रमय्या, वैदू, घिसाडी, गाडीलोहार, कंजारभाट,भोई, छप्परबंद, मसानजोगी, वैदु,मरीआईवाला, नंदीवाले, गोसावी-बैरागी, पांगुळ, वडार, लमाण,बेलदार,गाडीवडार, बंजारा ह्या जमाती आढळतात.

आत्मकथनातील समाज:

मराठी साहित्यामधील काही मोजक्याच जमातीचे अगदी त्रोटकपणे चित्रण झालेले दिसते. मराठी भाषेतील भटक्यांच्या आत्मकथनांतून अगदी प्रभावीपणे कैकाडी, उचल्या!बेरड,कुडमुडे जोशी,गोपाळ! गोंधळी,नंदीबैलवाले,पाथरूड, कोल्हाटी, वडार ह्या जमातीचे दर्शन घडते.

Scanned with OKEN Scanner

COLLEGE PHALTAN

'सैराट'या चित्रपटात भारतीय जातीव्यवस्था,परंपरा, उच्चनीचता ही माणसाने माणूसपण हिरावून घेते. समता, स्वातंत्र्य,बंधुता,मानवता, न्याय हे फक्त कागदावर. येथे जात आणि प्रतिष्ठा महत्त्वाची आहे. भटक्या समाजाकडे स्वतःला पाय ठेवायलाही स्वतःची जागा नाही.तसे जगण्याचाही अधिकार नाही. धर्मांद, जातीय, उच्चनीचताआणि प्रतिष्ठेची दरी मुक्तपणे स्वच्छंदीपणे श्वासही घेऊ देत नाही. जातपंचायतीची कडक बंधने पाळणे हे वास्तव दाखवणारा चित्रपट. भटक्या समाजाच्या व्यथा वेदना मांडणारा जात पंचायतीची बंधने दाखवणारा म्हणून वेगळा ठरतो.

जाऊ द्या ना घरी वाजले कि बारा.., पोटासाठी नाचते मी.., चला जेजुरीला जाऊ..., गाडी चालीवं भुरक्याची..,या उलावण्यातून त्या स्त्री ची व्यथा, वेदना,अगतीकता,दुःख मांडते. या सर्वांनी ऐकलेल्या आहेत. त्यामधून प्रतिष्ठित म्हणवून घेणा-या समाजाचे मनोरंजन होते. बहुरूपी, वासुदेव,गोंधळी अशा भटक्या जमातींचे चित्रण, त्यांची गाणी यांचे दर्शन अनेक मराठी चित्रपटात पहावयास मिळते.

समारोप:

एकंदरीत मराठी साहित्यात सर्वच भटक्या-विमुक्त समाजाचे दर्शन सशक्तपणे आणि पूर्णांशाने आलेले नाही.मराठी चित्रपटातही सर्व जमातीचे दर्शन घडत नाही. काही भटक्या जमातीच्या कला सादर करण्याचे दर्शन घडते.

तर काही विशिष्ट जमातीवर अनेक चित्रपट आलेले आहेत. आणि मोठ्या प्रमाणात भटका समाज आजही वंचित राहिला आहे. तो कोसो मैल मराठी साहित्याच्या कक्षेपासून आणि चित्रपटाच्या दृष्टिक्षेपापासून दूर आहे.मराठी चित्रपटात झालेले चित्रणही पुरेशे सशक्त आणि परिपूर्ण आहे असे दिसत नाही. तरीही जे काही झाले आहे त्याने या पुढील वाट सुकर केली आहे. त्यामुळे यापुढे मराठी साहित्य आणि चित्रपटात भटका-विमुक्त समाज, त्यांच्या अनेक पोटजाती, व्यवसाय,भाषा, संस्कृती,कला, सादरीकरण यांचे सशक्तपणे दर्शन होईल आणि भटक्या समाजाचे अवघे विश्व साकार होईल.बंदिस्त आणि ठरावीक चाकोरीत रुतलेल्या समाज मनाला भटक्या समाजाच्या चित्र पटातील दर्शनाने आपल्याच मानवी जमातीतील दुर्लक्षित समाजाची दुःख,वेदना आणि त्यांची संस्कृती समजेल. यासाठी मराठी चित्रपट आणि साहित्य निर्माण झाले तर मराठी समृद्ध होईल. असे मराठी भाषेला अभिजात भाषेचा दर्जा मिळावा ही अपेक्षा आहे. मराठी साहित्याने मराठी चित्रपट आणि मराठी कला प्रकाराने भटक्या समाजाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक जगाला आपल्या जवळ घेईल , आपले म्हणेल अशी आशा वाटते. मराठी आत्मकथनातून प्रभावीपणे सर्वच भटक्या जमाती चे चित्रण आले नाही. धनगर समाजाचे चित्रण करणाऱ्या चित्रपटांची संख्या जास्त आहे. मुरळी,तमाशा कलावंत स्त्री जीवनचित्रण करणाऱ्या चित्रपटांची संख्या तुलनेने मोठी आहे. भटक्या-विमुक्तांना मूळ प्रवाहात आणण्यासाठी कोणत्याच मराठी चित्रपटातून प्रयन्त झालेले दिसत नाहीत. पुढील काळातील मराठी चित्रपट हीअपेक्षा पूर्ण करतील अशी अपेक्षा आहे.

संदर्भ:

1. भटक्या विमुक्तांचे -रामनाथ चव्हाण
2. भटकंतीचं जिणं -बाळासाहेब चव्हाण
3. भटक्या विमुक्तांचे परिप्रेक्ष -रमेश जाधव
4. मराठी दलित कथा -साहित्य प्रकाश कुंभार
5. गाव गाडा- त्रि ना अत्रे
6. जाती जमाती- रामनाथ चव्हाण
7. माध्यमांतर -प्रसाद ठाकूर

RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION
Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor - 6.293

ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue No.71

Significance Of Fairs And Festivals In Human Life

Chief Editor

Pramod P. Tandale

IMPACT FACTOR

SJIF 6.293

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638x
Special Issue No.71

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Sr. No.	Name of the Researcher	Title of The Paper	Page No.
167	डॉसुनिल सुखदेव लोखंडे .	भारतीय सण व पर्यावरण	575
168	डॉ.नेताजी विश्वास पोवार डॉ.रमजान फत्तुखान मुजावर	भारतीय सण - उत्सवांचे महत्व	577
169	डॉ अशोक ज्ञानदेव पाटील .	मराठेकालीन होळीच्या सणातील सामाजिक मनोरंजन	581
170	प्रा. डॉ. छाया शंकर माळी	त्योहार-उत्सव तथा राष्ट्रीय एकात्मता (हिंदी दिवस के परिप्रेक्ष्य में)	584
171	प्रा. डी. आर. पाटील	गणेशोत्सवाच्या बदलत्या स्वरुपाचा ऐतिहासिक अभ्यास	586
172	प्रा. डॉ. सतेज दनाने	कोकणातील जत्रा उत्सव	589
173	डॉ.कमल सतेज दनाने	धनगर समाजातील सण-उत्सव व लोकगीते	592
174	प्रा.शुभदा गणपतराव चांदवले	लोकजीवनाचा आरसाः मराठीतील लोकसाहित्य	596
175	डॉ. सुनिल भावराव देसले	खानदेशातील सण उत्सव व त्यातील लोकसाहित्य	601
176	डॉ.सौ. सुनिता एस. राठोड	सण, उत्सव आणि पर्यावरण	605
177	डॉ. सुवर्णा प्रकाश पाटील	सण, उत्सव व स्त्रियांचे आरोग्य - एक चिकित्सक अभ्यास	608
178	डॉ.गिरीश मोरे	'फकिरा' मधील जोगणीची यात्रा	611
179	डॉ. हेमराज बिरारीस	आदिवासी कोकणांच्या लोकवाड्.मयातील सण उत्सवाचे प्रतिबिंब	614
180	प्रा.डॉ.माधुरी गोपाळ तानवडे	सण उत्सवामधील महिलांची भूमिका व योगदान	617
181	प्रा सौ.मानसी संभाजी शिरगांवकर	हमारे उत्सव त्यौहारों तथा पर्वों को मनाने में वैज्ञानिक कारण तथा महत्व मानवी जीवन के संदर्भ में	620

कोकणातील जत्रा उत्सव

प्रा. डॉ. सतेज दनाने

एन एस बी कॉलेज,फलटण

प्रास्ताविक :-

भारत देश हा कृषीप्रधान देश असल्याने तो विविध रूढी-परंपरा पाळणारा व संस्कृती जोपासणारा देश आहे. मानवी जीवनातील पशुपक्षी मानव या घटकांना केंद्रस्थानी ठेवून भारतात वर्षभर विविध सण उत्सव साजरे केले जातात.

या सण व उत्सवाच्या माध्यमातून जात धर्म वंश परंपरा सामाजिक बांधिलकी जोपासण्या चा प्रयत्न केला जातो. सण-उत्सव आतून लोकांच्या भावना जोपासल्या जातात. कोकणची भूमी म्हटले की कलावंतांची भूमी म्हणून उल्लेख केला जातो. कोकण प्रदेशात साजरे होणारे सण उत्सव यातून एक कोकणी संस्कृती प्रतीत होते कोकणवासीय आपल्या कलागुणांचे उत्तम रीत्या प्रदर्शन करतात आणि त्यातून आपल्या मायभूमीचे सांगतात प्रस्तुत शोधनिबंधात कोकणातील सण उत्सव हा अभ्यास केला आहे.

जत्रा उत्सव:-

कोकणची व्याख्या करताना समोर येतो तो निसर्ग आणि कोकणची बोली. भारतीय संस्कृती कोशांमध्ये कोकणची व्याख्या "सध्य पर्वत आणि अरबी समुद्र यांच्यामधील अरुंद पट्टीला कोकण म्हणतात. ठाणे कुलाबा व रत्नागिरी हे जिल्हे मुंबई व तिचे उपनगरे गोमंतक व त्याच्या दक्षिणेकडील काही भाग यांचा सांप्रत कोकणात समावेश होतो"

प्रस्तुत व्याख्येतून कोकण प्रदेश आपल्या लक्षात येतो. या प्रदेशांचे राहणीमान, संस्कृती, सण-उत्सव आगळ्यावेगळ्या स्वरूपाचे असतात. कोकणातील जत्रेचा उत्सव एक तीन किंवा पाच दिवसांचा असतो. दक्षिण कोकणात देवस्थानात महत्त्वाचा उत्सव म्हणून जत्रा ओळखली जाते. हे उत्सव सामाजिक आणि धार्मिक विधीमध्ये केले जातात दुपारी महाअभिषेक व महानैवेद्य होतो. रात्री पुराण किर्तन व आरत्या असा धार्मिक भाग असतो. काही ठिकाणी देवाला उपहार दाखवण्याची प्रथा असलेली दिसते. रात्रीच्या वेळी पालखी रथ सुखा वन अशा स्वरूपात देवाची उत्सव मूर्तीची मिरवणूक काढली जाते देवाचा रथ भक्तमंडळी दोरखंडाच्या सहाय्याने ओढत नेतात. पूर्वी पण त्या लावून देवालय दीपज्योती नि प्रज्वलित केले जायचे अलीकडे दिपस्तंभ विजेची रोषणाई यामुळे देवालयाचा परिसर झगमगीत झालेला असतो. जत्रेमध्ये दुकानातून व बाजारातून मोठ्या प्रमाणात खरेदी विक्रीचा व्यवहार चालतो अशा जत्रांमधून पूर्वी गडा गडा फेरीतून कटा पत्ते असे जुगार चालत. काही लोक जुगार खेळण्यासाठी जत्रेला जात होते हे जुगार नंतर बंद पडलेले दिसतात.

'दिवजे'-

या जत्रेच्या वेळी देवीचे नावाचा स्त्रियांचा कार्यक्रम केला जातो सौभाग्यवती स्त्रिया मातीच्या पंचायतीत तेलाची वाट लावून ती भेटलेली असताना कपाळाला टेकवतात हे दिवस सौभाग्यवती चे प्रतीक मानले जाते संध्याकाळी शेकडे रोकडे सुवासिनी स्त्रिया आपल्यापुढे डीजे पेटवून ठेवून रात्र जागून काढतात ही प्रथा एक कुलाचार म्हणून आहे. डिजे पुढे ठेवून रात्र जागरण करणाऱ्या आणि देवीचे मस्तकाला टेकणार या स्त्रिया देवतेच्या महाजन किंवा भंजक कुटुंबातील असतात.

कोकणातील काही ठिकाणी देवस्थान चा प्रशस्त तलाव असतो. तेथे सांगाडा नावाचा कार्यक्रम होतो दोन होड्यांना एकत्र बांधून तयार केलेल्या सांगड वर देवाची उत्सव मूर्ती आरुढ केली जाते सांग गडावर पूजा करून वडिलांच्या सहाय्याने तलावातून सांगड फिरवला जातो ज्यावेळी सांगण्यावर दिव्याची रोषणाई असते आणि दारू सामान उडविणे चालू असते.

"विजयादशमी"-

विजयादशमी पासून कवला चा दसरा साजरा केला जातो भूतनाथ भैरव काळभैरव शिवगण माऊली सातेरी भगवती भूमिका यासारख्या ग्रामदेवतांच्या देवालयात कौलाची पद्धती आहे देवाचा गुरव जमिनीवर उभे केलेले तरंग खांद्यावर घेऊन घुमतो त्यानंतर भक्त जण गुरुवा कडून नारळ अंगारा व निर्माल्य यांचा कौल घेतो आपल्या वरील संकटे निवारण्यासाठी अडीअडचणी दूर होण्यासाठी देवाला विनंती केली जाते कोकणातील उत्सवाचे वैशिष्ट्य म्हणजे ते पहिल्या दिवसापासून पाच दिवसांपर्यंत चालू असतात दिव्याची रोषणाई विद्युत रोषणाईने देवालयाचा परिसर उजळला जातो विविध प्रकारच्या खेळाच्या दैनंदिन वापराच्या वस्तू तसेच अनेक प्रकारची दुकाने लावलेली असतात स्त्रियांचे ही कार्यक्रम पार पडतात सांगाडा आणि करून यासारखे कार्यक्रम काही ठिकाणी होतात याशिवाय उत्सवाचे महत्त्वाचे एक अविभाज्य अंग म्हणून नाटकाचा उल्लेख करावा लागतो जत्रेच्या कालावधीत अनेक नाटकं होत असतात जत्रेतील ही रंगभूमी हौशी रंगभूमी असते मात्र हीच हौशी रंगभूमी कलाकारांची पाया भरणे करते मराठी नाट्यसृष्टीला भरभरून देते त्यामुळे मराठी नाटक अजरामर झालेले दिसते

एकूणच कोकणी उत्सव जत्रा यामधून निर्माण झालेल्या (बाळकडूप्यायलेल्या)कलाकारांनी मराठी नाटक फुलविण्याचे आणि मराठी रसिकांना हसण्याचे त्यांचे मनोरंजन करण्याचे त्यांना रोजच्या जीवनापासून काही क्षण दूर नेऊन परमोच्च आनंद देण्याचे त्यांना हुलकावण्या चे कार्य करीत आहे याकडे दुर्लक्ष करता येणार नाही.

"कोकणातील दशावतारी काला व गवळण काला"-

कोकणात किंवा कार्तिक ते माघ या कालावधीमध्ये दशावतारी काला केला जातो दशावतारी काला रात्रीच्या वेळी होत असल्यामुळे त्याला रात काला असेही म्हटले जाते दशावतारी काले सादर करणारी मंडळी सुपारी घेऊन हा कार्यक्रम करतात या कार्यात देवापुढे पुराण कीर्तन हे ठराविक कार्यक्रम झाल्यावर दशावतारी खेळ सुरू होतो काल्याचे एक अविभाज्य अंग म्हणून दशावतारी खेळ ओळखला जातो गणपती सरस्वती ब्रह्मदेव शंखासूर व विष्णू ही पात्रे काल्यात दिसतात पूर्ण दशावतार या वेळी सादर होत नाही हरदा साच्या गाण यानुसार ही पात्रे नृत्य करत असतात विष्णूचा मत्स्यावतार व शंखासूर यांचे युद्ध हे प्रसंग काव्य काव्यातील उत्कर्ष बिंदू असतात.

गवळण काला म्हणजेच श्रीकृष्णाच्या बाललीला अन वर आधारलेली नाटिका असते ही दशावतारी का आल्यानंतर दुसऱ्या दिवशी दुपारी या गोष्टी असत नाहीत सभामंडपात मधोमध उघड्या रंगमंचावर गवळण काला होतो त्यामध्ये यशोदा गवळणी कृष्ण व त्याचे पेंद्या आणि त्याचे सोबती सोबती अशी पात्रे असतात गवळणीचे काम करणाऱ्या देवस्थानातील कलावंत स्त्रिया असतात कृष्णाची भूमि ना करणारे भूमिका करणारी त्याचे मुले असतात गाव गवळण काला संपल्यावर दहीपोहे याचे वाटप होते गोपाळकाला चालू असताना मी चार बाजूंनी प्रेक्षक असतात.

"कोकणातील सात दिवसांचा उत्सव"-

कोकणातील देवस्थान आतून सात दिवसांचा उत्सव साजरा होतो त्याला सप्ताह म्हणून ओळखले जाते या सप्ताहात देवालयाच्या सभामंडपाची मोठी समई तेवत ठेवून तिच्या होती भजनी मंडळी उभे राहून भजन म्हणतात तर तीन तासाला भजन करणारी माणसे बदलतात हा कार्यक्रम अखंडपणे सात दिवस चालू असतो तीन तासाला भजनाला म्हटले जाते ठराविक तिथीला चालू होऊन हा उत्सव संपतो यावेळी रात्री 9 ते 12 च्या वेळी पौराणिक किंवा ऐतिहासिक प्रसंगावर आधारित देखावा तयार करून तो देवालया भोवती भजने फिरतात याशिवाय पूजा आणि पूजा हे पूजा प्रकार दिसून येतात गंध पूजा मध्ये देवाच्या सर्वांगाला गंधाचे लप लावून पूजा केली जाते तर पूजा मध्ये कापलेले केळ मुळासकट कापून टाकतात काढून त्याची देवतेच्या पूजा मूर्ती आणि पूर्ण करतात असे पूजेचे दृष्य फारच सुंदर दिसते कोकणातील सरस्वतीपूजन सरस्वती पूजन होते धार्मिक सामाजिक व शैक्षणिक सरस्वती पूजनाचा उत्सव सरस्वती सरस्वती विसर्जन ह्या कालावधीत होतो हा उत्सव साजरा केला जातो गणपती प्रमाणे सरस्वती मूर्ती तयार करून शाळेत आणून तिची पूजा केली जात होती त्यावेळी मूर्ती समोर आरास केली जाते व्याख्यानमाला होत असं सरस्वती विद्येची देवता आहें ही कल्पना या उत्सवाच्या मागे असल्यामुळे विद्वत्तेचा आदर करणे समाजाचे उत्पादन करणे ही वैशिष्ट्ये ही उद्दिष्टे या उत्सवाची असलेली दिसतात सर्वच ठिकाणी दसऱ्या नेत्या उत्सवाचे अखेर होत नाही काही ठिकाणी पौर्णिमेपर्यंत सरा चालू असतो ज्या ठिकाणी दसरा आधी संपतो त्या ठिकाणी पुराण किर्तन हे कार्यक्रम चालू राहतात आणि कोजागिरी ने उत्सवाची समाप्ती होते कोजागिरी ते पुराण किर्तन आरत्या हे कार्यक्रम असतात नवरात्र हा सण कौटुंबिक म्हणूनही साजरा होतो घटस्थापना देवघरात करून त्यामध्ये धनधान्य घालतात पहिल्या दिवशी देवाला फुलाची एक माळ दुसऱ्या दिवशी दोन याप्रमाणे नवव्या दिवशी नऊ माळा वाहिल्या जातात त्याप्रमाणे वाढती माळ म्हणून म्हटले जाते या काळात सप्तशतीचा पाठ केला जातो.

"कोकणातील वार्षिक उत्सव नित्य उत्सव"-

देवस्थान मध्ये आठवड्याला ठराविक दिवशी सोमवार किंवा 15 ओढ्यातून ठराविक तिथीला देवतेचा उत्सव केला जातो सोन्याच्या पालखीत उत्सव मूर्ती बसवून पुराण किर्तन झाल्यावर ती देवालया होती फिरविली जाते.

याशिवाय रामनवमी कृष्णाष्टमी धनुर्मास हरिजागर अनंत चतुर्थी आवळी भोजन शिवरात्र जत्रा काला गवळण काला विविध पूजा प्रसाद असे वार्षिक उत्सव केले जातात.

एकंदरीत कोकणातील जत्रा उत्सवांचे स्वरूप पाहता कोकणातील विधि व लोककला प्रकारांची लोककला प्रकारांचे विविध नमुने पहावयास मिळतात या सण उत्सवाच्या माध्यमातून कोकणी संस्कृती प्रतीत होते.

संदर्भ:-

1) भारतीय इतिहास आणि संस्कृती- डॉ.भालचंद्र आकलेकर
2) दक्षिण कोकणची सांस्कृतिक परंपरा
3) भारतीय संस्कृती कोश खंड 2 - पं. महादेवशास्त्री जोशी(संपा)
4) भारतीय सण व उत्सव डॉक्टर कृ, प. देशपांडे.

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN

भारतीय स्त्रियांची सदयस्थिती

प्रा. कोळेकर वनिता अशोक

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

Email ID - vanitakolekar4692@gmail.com

नामदेवराव सूर्यवंशी (बेडके) महाविद्यालय,फलटण

प्रस्तावना

भारतीय समाजामध्ये स्त्री हा मानवी जीवनाचा मूलाधार आहे भारतीय संस्कृती ही पितृसत्ताक आहे त्यामुळे एक माता, बहिण, बायको या दृष्टीने स्त्रीला भारतीय समाजामध्ये महत्वाचे स्थान आहे. प्राचीन काळापासून स्त्रीला अनेक अधिकार तसेच प्रत्येक निर्णय घेण्याचे स्वातंत्र्य होते. यामध्ये आपण गार्गी, मैत्रयी या विद्वान स्त्रियांचा सहभाग लक्षणीय दिसून येतो. पण नंतरच्या काळामध्ये स्त्रियांच्या स्वातंत्रयावर मर्यादा पडू लागल्या. फक्त चूल आणि मूल एवढेच कार्य स्त्रीयांपुरते मर्यादित राहिले. त्यांच्या वर अनेक प्रकारची बंधने लादली गेली. समाजामध्ये स्त्रीयांचे स्थान हे दुय्यम दर्जाचे झाले.

पण आज आपण २१ व्या शतकातील स्त्रीकडे पाहिले तर ती स्त्री सामाजिक, आर्थिक आणि राजकीय दृष्टया स्वावलंबी झालेली आहे. प्रत्येक क्षेत्रामध्ये स्त्री ही

Principal
Namdevrao Suryawanshi(Bedke) College
Phaltan,Dist.Satara.

आढळत नाही. भारतीय संविधानाने जरी स्त्रियांना मूलभूत अधिकार दिले असले तरी समाजामध्ये स्त्रियांना कनिष्ठ दर्जा मिळतो त्यांना त्यांच्या हक्कांपासून वंचित ठेवले जाते याचा स्त्रियांवर खूप गंभीर परिणाम झालेला आहे. यातूनच भारतीय समाजामध्ये स्त्रियांच्या बाबतीत पुढील समस्या निर्माण होत आहेत.

१) नोकरी करणाऱ्या महिलांच्या समस्या :-

आजच्या २१ व्या शतकामध्ये स्त्रीने आपल्या कर्तृत्वावर अनेक क्षेत्रामध्ये प्रावीण मिळवले आहे. प्रत्येक क्षेत्राचा विचार केला तरी भारतीय स्त्रिया कुठेही सुरक्षित पणे काम करू शकत नाहीत कारण की आपल्या भारतीय समाजामध्ये स्त्री-पुरुष विषमता अजूनही रूजलेली आहे. कामाच्या ठिकाणी प्रत्येक स्त्री ही पूर्णपणे सुरक्षित राहून काम करु शकते असे नाही. काही ठिकाणी स्त्रियां काम करीत असताना त्यांच्यावर अत्याचार केले जातात. त्यांच्याकडे वाईट नजरेने पाहिले जाते.

2) वेश्याव्यवसाय :-

भारतीय समाजामध्ये स्त्री जरी प्रजनन क्षमतेचे ये वरदान ठरले असले तरी स्त्रिला जो दर्जा, मान हवा असतो तो मिळत नाही. प्राचीन काळापासून वेश्याव्यवसाय चालत आलेला आहे. स्त्री हे केवळ उपभोगाचे साधन आहे या दृष्टिकोणातून स्त्रीकडे पाहिले जाते प्रत्येक मूलीच्या आर्थिक परिस्थिती चांगली असते असे नाही. कुटुबांच्या गरजा भगवण्यासाठी ग्रामीण भागातील मुलींना या विघातक मार्गाचा अवलंब करून आपले जीवन धोक्यामध्ये घालावे लागते. आजही कायदयाने या व्यवसाय वर बंदी

कायदयाने जरी मुलींच्या लग्नाचे वय १८ वर्षे आणि मुलांचे वय २१ वर्षे ठरवले असले तरी भारताच्या काही भागांमध्ये बालविवाह होत असलेले दिसून येतात. प्राचीन भारतीय समाजामध्ये जठर विवाह पद्धती होती यामध्ये कुमारी बालिकांचे लग्न हे वयोवृद्ध किंवा वयाने मोठया असलेल्या व्यक्तींशी केल जाते असे. यामुळे अनेक कुमारी बालिका विधवा होत आणि त्या मुलीला सती जावे लागत असे. बालविवाहामुळे कुमारी मुलींना वैवाहिक जीवनांमध्ये अनेक कठीण प्रसगांना सामोरे जावे लागते मुलींची शारिरिक आणि मानसिक वाढ पूर्ण न झाल्याने लवकर मूल होणे यातूनच गर्भाशयाचे आजार निर्माण होणे, कौटूंबिक अत्याचार या वाईट संकटांना तिला सामोरे जावे लागते.

भारतीय स्त्रियांची सदयस्थिती आणि उपाय :-

भारतीय स्त्रियांच्या सदयस्थितीचा विचार केला असता असे दिसून येते की भ्ज्ञारतीय स्त्री पुरूषांच्या तुलनेत अधिक सहनशील वृत्तीची असते आजच्या भारतीय स्त्रीकडे एक जरी दृष्टीक्षेत्र टाकला तरी तीचा सर्वांगीण विकास झाला असला तरी त्यांना अनेक समस्यांना सामोरे जावे लागते. म्हणून भारतीय स्त्रियांच्या समस्या सोडविण्यासाठी भारतीय घटनेने पुढील उपाययोजना केल्या आहेत.

1) महिला सबलीकरण :-

भारतीय समाजामध्ये अेनक बुरसटलेल्या रूढी, परंपरा, अंधश्रध्दा आणि निरक्षरता आहे याचा विघातक परिणाम भारतीय स्त्रीयांवर पडलेला आहे. या सर्व अनिष्ठ रूढींमधून भारतीय स्त्रियांना बाहेर काढण्याचे असेल तर महिलांचे सबलीकरण

कायदा १९६१ संसदेने पास केला.

4) नोकरी करणाऱ्या महिलांची सुरक्षितता :-

कामाच्या ठिकाणी महिलांवर अत्याचार होतात यासाठी नोकरी करणाऱ्या महिलांच्या सुरक्षितेचा विचार करणे गरजेचे आहे. नोकरी करणाऱ्या महिलांसाठी त्यांच्या समस्या आणि गरजा लक्षात घेता त्यांच्यासाठी गरोदरपणा बाळंतपणा, गर्भपात या संबंधीच्या रजा, स्तनपानासाठी वेळ, लहान बाळासाठी पाळणाघरे स्वच्छतागृहे या सर्व सोयी करणे गरजेचे आहे .

5) महिला आयोगाची स्थापना :-

महिलांवरील होणारा अन्याय तसेच महिलांवरील हिंसाचार दूर करण्यासाठी सरकारने महिला आयोगांची स्थापना केलेली आहे. लैगिक भेदभ्ज्ञाव नष्ट करून समानता निर्माण करणे, महिलांना शारीरिक, मानसिक सामाजिक, आर्थिक स्वरूपात सशक्त बनविणे हे महिला आयोगाचे कार्ये आहे.

निष्कर्ष :-

भारतीय स्त्रियांच्या सदयस्थितीचा विचार केला असता असे आढळून आले की जिथे जिथे स्त्रीला विकासाची संधी मिळाली तेथे स्त्रीयांनी आपली प्रगती करून घेतली आज देशांच्या विकासामध्ये जितका वाटा पुरूष सहभागाचा आहे तितकाच वाटा

N.S.(B) COLLEGE PHALTAN